गौरीशंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
बुलन्दशहर

स्थापना वर्ष 1996

ज्ञान ज्योति

गौरीशंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

(सम्बद्ध: चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

अन्य गतिविधियाँ

गौरी शंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय
बुलन्द शहर

VIKSIT BHARAT
@2047

समारोह

गौरी शंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय
बुलन्द शहर

ज्ञान ज्योति

महाविद्यालय पत्रिका
एकादश अंक

॥ वन्दना ॥

हे हंस वाहिनी ज्ञान-दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥
जग सिरमौर बनायें भारत,
वह बल विक्रम दे, अम्ब विमल-मति दे॥
साहस शील हृदय में भर दे,
जीवन त्याग तपोमय कर दे॥
संयम सत्य स्नेह का वर दे,
स्वाभिमान भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
लव-कुश ध्रुव प्रहलाद बनें हम,
मानवता का त्रास हरें हम।
सीता सावित्री दुर्गा माँ,
फिर घर घर भर दे, अम्ब विमल-मति दे॥
हे हंस वाहिनी ज्ञान दायिनी,
अम्ब विमल-मति दे, अम्ब विमल-मति दे॥

संयोजक :
श्री विजयवीर प्रसाद
(सदस्य प्रबन्ध समिति)

संरक्षिका :
डॉ. अंशु बंसल
(प्राचार्या)

सम्पादक मण्डलः

श्रीमती पूर्णिमा सिंह
(प्रधान सम्पादिका)

डा. अनुपमा शर्मा
(अंग्रेजी विभाग)

कु0 रूहीना
(हिन्दी, बी.ए. तृतीय वर्ष)

कु0 पूजा
(अंग्रेजी. बी.ए. तृतीय वर्ष)

अध्यक्ष संदेश....

"विद्यां ददाति विनय विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वात् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुखम्॥"

महाविद्यालय पत्रिका **"ज्ञान ज्योति"** के एकादश अंक के प्रकाशन पर अपार हर्ष एवं प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। हमारी बेटियों के जीवन में शिक्षा, अनुशासन और चरित्र के आदर्शों को स्थापित कर एक सफल मूल्यवान समाज एवं राष्ट्र के निर्माण में सहयोग की संकल्पना पर आधारित गौरी शंकर कन्या महाविद्यालय की स्थापना हुई। मुझे गर्व है कि जिन आशाओं और विश्वास के साथ संस्थान की स्थापना हुई है वह इस दिशा में नगर और समाज में अपना अभूतपूर्व योगदान दे रहा है।

प्रगति के पथ पर एक और पड़ाव को पार करते हुये महाविद्यालय ने इस वर्ष स्नातक में दो नये विषय इतिहास और राजनीति शास्त्र और परास्नातक में अंग्रेजी तथा अर्थशास्त्र विषय की सम्बद्धता प्राप्त कर एक उपलब्धि प्राप्त की है जिसके लिये महाविद्यालय परिवार बधाई के पात्र है।

महाविद्यालय पत्रिका का दायित्व है कि छात्राओं के मौलिक लेखन की प्रतिभा को जाग्रत करने का प्रयास करें। इस दिशा में छात्राओं के मन के उद्गारों के प्रकाशन से न केवल छात्राओं का ज्ञान कौशल अभिव्यक्त होगा अपितु समाज में महाविद्यालय की छवि भी प्रतिबिम्बत होगी।

"ज्ञान-ज्योति" के एकादश अंक हेतु मैं प्राचार्या जी, संपादक मण्डल एवं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को असीम बधाई एवं शुभकामनायें देता हूँ साथ ही आशा करता हूँ कि महाविद्यालय इस प्रकार के पुनीत शैक्षिक कार्य पूर्ण मनोयोग से करता हुआ उतुंग शिखर पर सुशोभित रहेगा।

इसी शुभेच्छा के साथ ...

डॉ० वीरेन्द्र गर्ग
अध्यक्ष

सचिव संदेश ....

शिक्षा जीवन की तैयारी, शिक्षा जीवन का प्रकाश है
शिक्षा है निर्माण चरित्र का, शिक्षा क्षमता का विकास है

महाविद्यालय की पत्रिका "ज्ञान ज्योति" के प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनायें,

महाविद्यालय वह पावन स्थल है जहाँ शिक्षा द्वारा अमूल्य संस्कार को पल्लवित होने का अवसर प्राप्त होता है। विज्ञान की प्रगति ने भले ही पूरे विश्व को एक सीमित दायरे में समेट दिया है लेकिन साथ ही ज्ञान के असीमित आकाश को भी विस्तार दिया है, ऐसे में शिक्षण संस्थान का उत्तर दायित्व है कि युवाओं को शिक्षा के विस्तृत संसार के साथ ही अपनी प्राचीन संस्कृति और मूल्यों से भी परिचित कराये। अच्छे इंसान और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक के रूप में उनके विकास में शिक्षण संस्थान का महत्वपूर्ण योगदान होता है और हमारा पूरा प्रयास रहा है कि गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्रायें न सिर्फ शिक्षा प्राप्त करें बल्कि सामाजिक दायित्वों से सरोकार रखते हुए एक उत्तरदायी नागरिक की भूमिका का भी सफलतापूर्वक निर्वहन कर सकें।

महाविद्यालय में वर्तमान में लगभग 800 छात्रायें अध्ययनरत है। नगर में कन्या शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये स्थापित महाविद्यालय मध्यम तथा निम्न आर्थिक वर्ग की बेटियों को शिक्षा से वंचित न होना पड़े इसके लिये विशेष ध्यान रखता है। साथ ही छात्राओं को एक ही स्थान पर स्नातक और स्नातकोत्तर की शिक्षा भी प्राप्त हो इसका ध्यान रखते हुये एम०ए० अंग्रेजी और एम०ए० अर्थशास्त्र तथा बी०ए० में दो नये विषय राजनीति शास्त्र और इतिहास में सम्बद्वता प्राप्त कर छात्राओं के हित के लिये ये पाठ्यक्रम महाविद्यालय में इस सत्र से प्रारम्भ किये गये है। महाविद्यालय में दो हरितिमा प्रदान करते हुये उद्यान तथा महाविद्यालय के पुनर्निर्माण द्वारा उसे खूबसूरत भी बनाया गया है। महाविद्यालय के उत्तरोत्तर विकास के लिये प्रबन्ध समिति और महाविद्यालय स्टॉफ का सदैव मुझे अपार सहयोग प्राप्त होता रहा है जिसके लिये मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ।

महाविद्यालय पत्रिका के एकादश अंक के रूप में ज्ञान ज्योति को अक्षुण्ण रखने के अभिनव प्रयास द्वारा नये विचारों उपलब्धियों और छात्राओं के रचनात्मक कौशल की झलक हमें प्राप्त होगी। इसी आशा के साथ सदैव महाविद्यालय की उन्नति में तत्पर प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल और समस्त महाविद्यालय परिवार को पत्रिका की सफलता के लिये अनेकानेक शुभकामनायें व बधाई।

सुभाषचन्द्र अग्रवाल (एड०)
सचिव

महाविद्यालय के प्रेरणा स्त्रोत

डा० वीरेन्द्र गर्ग
(अध्यक्ष)

श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल
(सचिव)

श्री जय प्रकाश शर्मा
उपाध्यक्ष

श्री सुशील कुमार कंसल
कोषाध्यक्ष

श्री विजयवीर प्रसाद
सदस्य

श्री ओमप्रकाश जालान
सदस्य

श्री राकेश कुमार कंसल
सदस्य

श्री जितेन्द्र प्रसाद गुप्ता
सदस्य

श्री जितेन्द्र नारायण बंसल
सदस्य

श्री नन्द किशोर अग्रवाल
सदस्य

श्री अतुल कुमार खेतान
सदस्य

श्री हेमन्त कुमार
सदस्य

श्री कमल किशोर गर्ग
सदस्य

श्री अशोक कुमार गोयल
सदस्य

प्राचार्या संदेश

किसी भी देश, समाज में शिक्षा वह आधारभूत तत्व है जो उसके विकास को निर्धारित करता है। शिक्षा ही व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास में सहायक भूमिका निभाती है। आज हम एक आधुनिक समाज में रह रहें हैं। जिसे हम सभ्य समाज की कल्पना कह सकते हैं जिसका आधार अंग शिक्षा ही है। जब हम शिक्षा की बात करते हैं तो महिला शिक्षा की बात सर्वप्रथम करना आवश्यक है, जनसंख्या का लगभग 48% महिला प्रतिनिधि है। महिला की भूमिका सभ्य समाज के विकास में महत्वपूर्ण है। महिलाओं की शिक्षा ही उनके सशक्तिकरण में सहायक है। इस दिशा में सर्वप्रथम हमें बेटियों की शिक्षा पर ध्यान देना होगा। बेटी भी बेटे के समान है और समाज व देश बेटी की शिक्षा पर ही निर्भर करता है। बेटी शिक्षित होंगी तभी समाज भी शिक्षित होगा। शिक्षित बेटी ही शिक्षित समाज की भूमिका तैयार करेगी। आज महिलाएँ पुरूषों से कन्धा मिलाकर चल रहीं हैं, हर क्षेत्र में एक मुकाम हासिल कर रही हैं और यह भी तभी सम्भव है जब हम उन्हें अधिकार व शक्तियाँ प्रदान करें और यह शिक्षा से ही सम्भव है। बेटी हमारी शान है, अभिमान है और उसे शिक्षित कर हम समाज को शिक्षित करेंगे। यदि समाज को विकास की ओर ले जाना है तो बेटी को शिक्षित करना ही होगा।

इस मन्तव्य को लेकर हमारा महाविद्यालय बालिकाओं की शिक्षा को लेकर अग्रेतर है। महाविद्यालय में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती है, जिससे उनका व्यक्तित्व निखरता है तथा वे समाज में अपनी एक पहचान बना कर अपना करियर बनाती हैं। महाविद्यालय की अनेक छात्रायें समाज में अनेक पदों पर सुशोभित हैं जो समय-समय पर महाविद्यालय में आकर अपने विचार साझा करती हैं।

महाविद्यालय पत्रिका में रचित रचनायें छात्राओं के सृजनात्मक पक्ष तथा साहित्यिक अभिरूचि की अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करेगी। मैं आभार प्रकट करती हूँ उन सभी छात्राओं का जिन्होने अपने लेखों व रचनाओं से पत्रिकाओं को अलंकृत किया है।

महाविद्यालय पर गौरी और शंकर की विशेष कृपा है। अनेक परिस्थितियाँ प्रतिकूल रहीं लेकिन माँ पार्वती ने सभी समस्याओं को सुलझा कर महाविद्यालय की उन्नति की। मैं धन्यवाद करती हूँ उन सभी का जो महाविद्यालय की स्थापना के प्रथम सोपान से उसके उत्तरोत्तर विकास में प्रत्येक क्षण मेरे साथ रहे तथा जिनके सहयोग और प्रेरणा ने सदैव मुझे आगे बढ़ने का उत्साह दिया। आभार है निजी स्वार्थो से उठकर संस्था से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति का, जिसने महाविद्यालय की प्रगति में सहयोग किया तथा अनेक ऐसे नींव के पत्थर जिन्होंने अपनी कर्मठ कार्यशैली से महाविद्यालय को श्रेष्ठ स्वरूप प्रदान किया और महाविद्यालय के प्रारम्भिक वर्षो में ही विजय पताका चारों ओर फैला दी। साथ ही नमन करती हूँ अपने ईश्वर को जिन्होंने मुझे इस मुकाम तक पहुँचने के लिये साहस व शक्ति प्रदान की।

जय हिन्द जय भारत

सुना है लकीरों का लिखा बदल सकता है। मानव जिस रूप में चाहे ढल सकता है।।
आदमी के इरादों के आगे सदा नतमस्तक हैं। उसके हौसलों के आगे तूफान भी टल सकता है।।

डॉ० अंशु बंसल
प्राचार्या

संपादकीय

"अस्माकं कार्याणि अस्मान्सावधीकरिष्यंति"
हमारा कार्य ही हमें परिभाषित करता है।

महाविद्यालय पत्रिका "ज्ञान ज्योति" के एकादश अंक आप सभी के साथ साझा करते हुये अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। महाविद्यालय पत्रिका एक प्रकाशन से कही अधिक सामूहिक आकांक्षाओं का प्रतिबिम्ब है, विविध दृष्टिकोणों का मिश्रण और एकता की शक्ति का स्रोत है। पत्रिका, चिन्तन का एक साधन है और गौरी शंकर कन्या महाविद्यालय परिवार के लिये अपनी समृद्ध विरासत का जश्न मनाने के लिये एक साथ आने का एक तरीका भी है। साथ ही महाविद्यालय पत्रिका छात्राओं में अन्तर्निहित रचनात्मक क्षमता को सशक्त तरीके से सम्प्रेषित करने की योग्यता हेतु मंच भी प्रस्तुत करती है।

मेरी शुभकामना है कि हमारी छात्रायें मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थावान व साहित्यानुरागी बने जिससे उनके अंतर्मन में विश्व कल्याण की विराट चेतना समाहित हो सके। मेरा विश्वास है कि "ज्ञान-ज्योति" महाविद्यालय की वर्ष भर की शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक, कला सम्बन्धी सभी गतिविधियों की चहुँमुखी प्रगति का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करने के साथ-साथ सभी के ज्ञान में वृद्धि करेगी।

महाविद्यालय पत्रिका के प्रकाशन में प्रबन्ध समिति के शुभाशीष तथा प्राचार्या जी के मार्गदर्शन एवं सतत् सहयोग हेतु हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, एवं संपादक मण्डल के सभी सदस्यों एवं समस्त छात्राओं, प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से सक्रिय शिक्षक साथीगण और महाविद्यालय परिवार के सदस्यों के प्रति विशेष आभार प्रकट करती हूँ, जिनके अथक प्रयासों से पत्रिका प्रकाशन का कार्य समयानुसार पूर्ण हुआ।

पूर्णिमा सिंह
प्रधान सम्पादिका
"ज्ञान ज्योति"

बांये से (बैठे हुये) : श्रीमती आकांक्षा मिश्रा, डॉ० अनुपमा शर्मा, श्रीमती पूर्णिमा सिंह, **डॉ० अंशु बंसल (प्राचार्या),** डॉ० मीना सक्सैना, डॉ० एकता पाण्डेय, डॉ० वसुन्धरा सक्सैना।

बांये से (खड़े हुये) : श्रीमती दीक्षा मित्तल, सुश्री मोनिका चौधरी, सुश्री अंजली शर्मा, श्रीमती रेखा शर्मा, सुश्री आयुषी सक्सैना, श्रीमती नीतू शर्मा, श्री अफजल मौहम्मद।

बांये से (बैठे हुये) : श्रीमती बालेश गुप्ता, श्री योगेश गुप्ता, **डॉ० अंशु बंसल (प्राचार्या),** श्री रोहित वर्मा, सुश्री हेमलता।

बांये से (खड़े हुये) : श्री भगवत, श्रीमती गुड्डी, श्री सूरजपाल, श्री प्रवेश कुमार, श्रीमती कुसुम, श्रीमती राधा, श्री संजीव।

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ-250 004 (उ०प्र०)

(NAAC A++ Accredited)

प्रोफेसर संगीता शुक्ला
डी०एस०सी०
कुलपति

पत्रांक : एस०वी०सी०/21/1023
दिनांक : 08.01.2024

सन्देश

जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि गौरीशंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर द्वारा महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका **"ज्ञान ज्योति"** के एकादश अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

किसी महाविद्यालय की पत्रिका महाविद्यालय द्वारा वर्ष भर में छात्र-छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिये आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों के विहंगम वर्णन के माध्यम से विद्यार्थियों में नयी उमंग एवं उत्साह का संचार करती है तथा उनकी सकारात्मक सक्रियता के संवर्द्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

विश्वास है कि यह पत्रिका छात्र/छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा के निखार का अवसर प्रदान करने के साथ-साथ ज्ञानोपयोगी लेखों का प्रचार-प्रसार करेगी। महाविद्यालय द्वारा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास की दिशा में किया जा रहा यह प्रयास सराहनीय है।

महाविद्यालय परिवार को पत्रिका प्रकाशन हेतु शुभकामनायें।

(संगीता शुक्ला)

डॉ० अंशु बंसल
प्राचार्या,
गौरीशंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
बुलन्दशहर-203001

कुलपति आवास, विश्वविद्यालय परिसर, मेरठ- 250 004
कार्यालयः +91-0121-2760554, 2760551, फैक्स : 2762838
शिविर कार्यालयः +91-0121-2600066, फैक्सः 2760577
वैबसाइटः www.ccsuniversity.ac.in
ई-मेलः vc@ccsunivesity.ac.in

चन्द्र प्रकाश सिंह
आई.ए.एस

अ.शा.प.सं. 628/ST.DM/2024
जिलाधिकारी/जिला मजिस्ट्रेट
जनपद–बुलन्दशहर (उ.प्र.)
(कार्या.): 05732–280351
(आ.): 05732–231343
(फैक्स): 05732–280298
(मोबाइल): 9454417563
(ई–मेल): dmbul@nic.in
दिनांक 22.03.2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका '**ज्ञान ज्योति**' के एकादश अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। यह भी अत्यन्त हर्ष का विषय है कि नारी गरिमा के उन्नयन तथा शैक्षिणिक प्रगति हेतु समर्पित यह विद्यालय जनपद में कन्याओं की श्रेष्ठतम शिक्षा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। मुझे विश्वास है कि महाविद्यालय स्मारिका छात्राओं की नैसर्गिक सृजनात्मक क्षमता तथा रचनात्मक लेखन की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनेगी तथा सभी के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए समस्त महाविद्यालय परिवार को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं!

डॉ० अंशु बंसल,
प्राचार्या,
गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बुलन्दशहर

22/3/24
(चन्द्र प्रकाश सिंह)

श्री श्लोक कुमार
आई.ए.एस

वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक
जनपद बुलन्दशहर

दिनांक : जुलाई 27,2024

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि गौरी शंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय, बुलन्दशहर विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी अपनी वार्षिक पत्रिका 'ज्ञान ज्योति' के एकादश अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

आशा है पत्रिका में महाविद्यालय की गतिविधियों की जानकारी विभिन्न सम सामयिक विषयों पर आधारित लेख, कहानी, कविता व महत्वपूर्ण जानकारियों पर भी प्रकाशन किया जायेगा। पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय की उपलब्धियों की महत्वपूर्ण जानकारी पाठकों को सहजता से प्राप्त हो सकेगी।

अतः मेरी ओर से महाविद्यालय पत्रिका छात्राओं के शैक्षणिक, सांस्कृतिक और साहित्यक अभिव्यक्ति की वाहक बने तथा पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए प्राचार्या, सम्पादक मण्डल एवं समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं।

डॉ० अंशु बंसल,
प्राचार्या,
गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बुलन्दशहर

(श्लोक कुमार)

अतुल कुमार गोयल
प्रबन्ध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी
Atul Kumar Goel
Managing Director & CEO

Azadi Ka Amrit Mahotsav

पंजाब नैशनल बैंक
punjab national bank
प्रधान कार्यालय: 5 वां तल, प्लॉट सं. 4,
सैक्टर-10, द्वारका, नई दिल्ली-110075
Head Office: 5th Floor, Plot No. 4,
Sector-10] Dwarka, New Delhi-110075
T:011-28044001, 28044002 F: 011-2844015
E:md@pnb.co.in W: pnbindia.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय अपनी पत्रिका "ज्ञान ज्योति" के 11 वें अंक का प्रकाशन कर रहा है। इसके लिए मेरी शुभकामनाएं!

2 सितंबर 1996 को स्थापित इस महाविद्यालय का मूल उद्देश्य छात्राओं को मूल्य आधारित उच्च शिक्षा प्रदान कर उनका उन्नयन और विकास करके समाज में लैंगिक समानता को बढ़ावा देना है। महाविद्यालय कन्या शिक्षा में अपना योगदान देकर राष्ट्र निर्माण में सहयोग प्रदान कर अपने सम्माननीय संस्थापकों के स्वप्न को पूर्ण करने का पावन कार्य कर रहा है।

यह सर्वविदित है कि जब एक महिला को शिक्षित किया जाता है तो उसका पूरा परिवार, एक पूरी पीढ़ी शिक्षित होती है। नारी शिक्षा से देश अधिक सुदृढ़ और समृद्ध होता है। नारी का शैक्षिक उन्नयन और विकास न केवल उसे व्यक्तिगत रूप से स्वावलंबी और आर्थिक आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देता है अपितु देश की आर्थिक उन्नति में भी महत्वपूर्ण कारक सिद्ध होता है। महाविद्यालय द्वारा महिला उच्च शिक्षा और सशक्तिकरण के लिए किए जा रहे प्रयास नि:संदेह सराहनीय हैं।

पंजाब नैशनल बैंक, जो भारत के बड़े राष्ट्रीयकृत बैंकों में से एक है, महिला सशक्तिकरण में सदैव अग्रणी रहा है। बैंक अपने कर्मचारियों के मध्य लैंगिक समानता को बढ़ावा देने तथा महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न योजनाओं पर सफलतापूर्वक कार्य कर रहा है। बैंक महिलाओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए महिला केन्द्रित बैंकिंग उत्पादों को बढ़ावा दे रहा है। बैंक अपने महिला कर्मचारियों के करियर प्रगति, उच्च पदों पर भागीदारी एवं उनके काम और जीवन के मध्य संतुलन बनाने के लिए हर प्रकार से सहायता कर रहा है। बैंक कन्याओं की उच्च शिक्षा के लिए रियायती ब्याज दर पर ऋण प्रदान कर उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने में भी सहायता कर रहा है।

पत्रिका "ज्ञान ज्योति" का 11 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए बधाई। मुझे आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय की गतिविधियों को समाज के समक्ष लाने के साथ-साथ स्त्री शिक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने में अप्रतिम योगदान देगी।

मैं पंजाब नैशनल बैंक की ओर से गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय को पुन: शुभकामनाएं देता हूँ।

शुभकामनाओं सहित!

अतुल कुमार गोयल

अतुल कुमार गोयल
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, पंजाब नैशनल बैंक

pnb
...the name you can BANK upon!

शुभकामना संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर अपनी पत्रिका "ज्ञान ज्योति" के 11 वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है, इसके लिए आपको हार्दिक शुभकामनाएं। विगत वर्षों में आपके महाविद्यालय की प्रगति यह दर्शाती है कि आप शिक्षा एवं ज्ञान के प्रति कितने समर्पित हैं। नारी को सम्मान, सृजन और शक्ति का प्रतीक माना गया है और आपका महाविद्यालय शक्ति स्वरूप नारी को शिक्षित कर सशक्त बनाता है जोकि अत्यंत प्रशंसनीय है। पत्रिका के पिछले अंक में विद्यार्थियों के विचार पढ़कर अत्यंत प्रसन्नता हुई।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आपका महाविद्यालय इसी प्रकार कन्याओं को शिक्षित कर सशक्त करता रहेगा। पत्रिका के नवीन अंक के लिए पंजाब नेशनल बैंक बुलंदशहर की ओर से आपको पुन: हार्दिक शुभकामनाएं।

(नीरज कुमार सिन्हा)
मंडल प्रमुख
पंजाब नेशनल बैंक, बुलन्दशहर

सर्वश्रेष्ठ छात्रा (स्नातकोत्तर)

कु. डॉली
एम.ए. (अर्थशास्त्र)

कु. यशफा
एम.ए. (गृह विज्ञान)

कु. मनु
एम.ए. (अंग्रेजी)

महाविद्यालय के गौरव

कु. श्रेया
सर्वश्रेष्ठ वक्ता

कु. निष्ठा गौतम
सर्वश्रेष्ठ वक्ता

कु. अंशिका
प्रतिभाशाली छात्रा

कु. मुस्कान सैफी
प्रतिभाशाली छात्रा

कु. अनु
खेल प्रतिभा

कु. महिमा
छात्रा प्रमुख

कु. शिवानी
खेल प्रतिभा

कु. लोरेन वर्मा
बहुमुखी प्रतिभा

कु. चित्रांशी
बहुमुखी प्रतिभा

कु. जानवी जादौन
सर्वश्रेष्ठ रा.से.यो. स्वयं सेविका

कु. तान्या
सर्वश्रेष्ठ रा.से.यो. स्वयं सेविका

पुरातन छात्रा परिषद कार्यक्रम

सांस्कृतिक गतिविधियाँ

राष्ट्रीय पर्व

भारत विकास परिषद
बुलन्दशहर 'विराट'
आपका हार्दिक स्वागत है।

Rotary Club Bulandshahr

राष्ट्रीय सेवा योजना
गौरी शंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय
बुलन्दशहर
NSS SPECIAL CAMP
5th DAY...
Shine Light

Azadi Ka Amrit Mahotsav
pnb
pnb Swarnim Scheme (Gold Loan)
For Agriculture Needs
Starting ROI 8.05%*
Attractive ROI
Easy Process
Minimum Documents
Contact your nearest branch today
Follow us: www.pnbindia.in Toll Free: 1800-180-2222 or 1800-103-2222
*T&C Apply

PNB Car Loan
pnb
ROI starting
@8.75%*
Nil upfront / Processing fees & documentation charges*
*T&C apply
1800 1800 and 1800 2021 | Give a missed call: 1800 180 8888

pnb
PNB Home Loan
ROI starting
@8.50%*
Nil upfront / Processing fees & documentation charges*
Quick, hassle-free sanction
Easy to recall, give us a call (Toll Free) 1800 1800 and 1800 2021

pnb
ONE
just one app
EVERYONE ON
PNB ONE
पंजाब नैशनल बैंक
...भरोसे का प्रतीक !
punjab national bank
...the name you can BANK upon !

प्रगति आख्या 2022–23

गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर प्रगति के पथ पर नित नये आयाम तय करता विगत वर्षो की स्वर्णिम स्मृतियों को सजोता निरन्तर आगे बढ़ रहा है। सत्र 2022–23 में भी महाविद्यालय में अनेक गतिविधियां आयोजित की गई।

दिनांक 05 जुलाई 2022 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर की राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं द्वारा महाविद्यालय में जामुन, शीशम, पापड़ी और अर्जुन आदि पौधे लगाकर वातावरण को शुद्ध करने के उद्देश्य से पौधारोपण किया गया।

दिनांक 18 जुलाई 2022 को महाविद्यालय में तिरूपति गैस सर्विस की ओर से ''**गैस सुरक्षा एवं संरक्षण**'' संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

दिनांक 04 अगस्त 2022 को साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वाधान में रक्षाबन्धन पर्व के उपलक्ष्य में ''**राखी बनाओ प्रतियोगिता**'' का आयोजन किया गया।

दिनांक 08 अगस्त 2022 को राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं ने ''**तिरंगा रैली**'' निकाली तथा साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वाधान में राष्ट्रीय गौरव को दर्शाता '**भारत की शान तिरंगा**' थीम को लेकर मां भारती के स्वरूप को सुसज्जित करती ''**हस्तकला प्रतियोगिता**'' का आयोजन किया गया।

दिनांक 15 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में ''**स्वतंत्रता दिवस**'' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर समिति के सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी (एड०) ने झण्डारोहण किया। इस अवसर पर अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र गर्ग जी, उपाध्यक्ष श्री जयप्रकाश शर्मा जी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी एवं अन्य सदस्य भी उपस्थित रहे।

दिनांक 27 अगस्त 2022 को महाविद्यालय में ''**उद्यमिता प्रोत्साहन सम्मेलन**'' का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डी0ए0वी0 डिग्री कालिज के पूर्व प्राचार्य डॉ0 राजेश गर्ग जी, मुख्य वक्ता रहे।

महाविद्यालय का ''**27वां स्थापना दिवस**'' बड़ी धूमधाम से मनाया गया। महाविद्यालय में यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें यजमान के रूप में अध्यक्ष डा० वीरेन्द्र गर्ग जी, सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी (एड0) साथ ही प्राचार्या डॉ0 अंशु बंसल जी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी, श्री राकेश कंसल जी तथा समस्त महाविद्यालय परिवार ने यज्ञ में पवित्र आहुतियां दी।

दिनांक 14 सितम्बर 2022 को महाविद्यालय में ''**हिन्दी दिवस**'' बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में श्री बी0 बी0 चौरसिया (एस0पी0 देहात) तथा महाविद्यालय प्राचार्या डॉ0 अंशु बंसल जी ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वाधान में शारदीय नवरात्र के उपलक्ष्य में भजन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक **01 अक्टूबर 2022** को किया गया।

दिनांक 02 अक्टूबर 2022 को महाविद्यालय में गांधी जयन्ती व शास्त्री जी की जयन्ती के इस अवसर पर महाविद्यालय सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी (एड0) ने झण्डारोहण किया, उनके साथ कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी, श्री विजयवीर प्रसाद जी, श्री राकेश कंसल जी, श्री हेमन्त जी तथा प्राचार्या डॉ0 अंशु बंसल जी भी उपस्थित रहीं।

दिनांक 12 अक्टूबर 2022 को साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वाधान में लक्ष्य फ्रेन्डस क्लब की ओर से ''**करवा सज्जा प्रतियोगिता**'' तथा ''**मेंहदी प्रतियोगिता**'' का आयोजन किया गया।

दिनांक 19 अक्टूबर 2022 को भी साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के अन्तर्गत सुरभि वेलफेयर सोसाइटी के सौजन्य से दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में ''**दीपोत्सव**'' का आयोजन किया गया।

दिनांक 20 अक्टूबर 2022 को महाविद्यालय के अध्यक्ष और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला कार्यवाहक डॉ0 वीरेन्द्र गर्ग जी ने छात्राओं को स्वाधीनता के अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अन्तर्गत सम्बोधित किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी तथा प्राचार्या जी भी उपस्थित रहीं।

दिनांक 17 दिसम्बर 2022 को महाविद्यालय में पुरातन छात्रा समारोह का आयोजन भी बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया।

दिनांक 23 जनवरी 2023 को महाविद्यालय में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जी की जयन्ती पर राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत भारतीय विकास परिषद द्वारा एनीमिया मुक्त भारत उददेश्य को लेकर छात्राओं का रक्त एवं हीमोग्लोबिन परीक्षण किया गया।

दिनांक 26 जनवरी 2023 को महाविद्यालय में 74 वां गणतन्त्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। ध्वजारोहण महाविद्यालय सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी (एड0), कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी ने संयुक्त रूप से किया।

दिनांक 02 फरवरी 2023 को महाविद्यालय में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत सड़क सुरक्षा अभियान विषय को लेकर ''**पोस्टर प्रतियोगिता**'' तथा ''**रंगोली प्रतियोगिता**'' का आयोजन किया गया।

दिनांक 15 फरवरी 2023 को महाविद्यालय में विधिक साक्षरता मिशन के अन्तर्गत जिला विधिक सेवा प्राधिकरण बुलन्दशहर के तत्वाधान में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपर जिला जज श्रीमती रेनू मिश्रा जी रहीं।

दिनांक 19 फरवरी 2023 से **25 फरवरी 2023** तक महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय शिविर का

आयोजन ग्राम वहलीमपुरा में किया गया।

दिनांक 10 मार्च 2023 को महाविद्यालय में चौ0 चरण सिंह विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभागाध्यक्ष कवि उपन्यासकार और लेखक डॉ0 विकास शर्मा जी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे, उनके व्याख्यान का विषय ''**लिट्रेचर एंड एगोनी**'' था। इस अवसर पर महाविद्यालय सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी (एड0) तथा प्राचार्या डॉ0 अंशु बंसल जी भी उपस्थित रहीं।

दिनांक 15 मार्च 2023 को महाविद्यालय में द्वितीय वर्ष की छात्राओं ने बी0ए0 तृतीय वर्ष की छात्राओं को विदाई दी।

दिनांक 31 मई 2023 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में रोटरी क्लब बुलन्दशहर की ओर से ''**सर्वेक्स कैंसर तथा हीमोग्लोबिन**'' कैम्प का आयोजन किया गया।

दिनांक 15 जून 2023 को महाविद्यालय में नवम अन्तर्राष्ट्रीय योगा दिवस मनाया गया, जिसमें छात्राओं ने योग करके स्वयं को स्वस्थ रखने की शपथ ली।

सत्र 2023-24 का शुभारम्भ महाविद्यालय की विशेष उपलब्धि के साथ हुआ। **इस वर्ष स्नातक स्तर पर इतिहास तथा राजनीति शास्त्र विषय तथा एम.ए. अंग्रेजी, अर्थशास्त्र में सम्बद्धता प्राप्त कर इन विषयों में छात्राओं द्वारा प्रवेश लिये गये।**

महाविद्यालय में **दिनांक 11.07.2023** को "विश्व जनसंख्या दिवस" के अवसर अर्थशास्त्र विभाग के अन्तर्गत एक 'पोस्टर मेंकिग प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० राजीव सिरोही जी रहें।

दिनांक 09.08.2023 को राष्ट्रीय सेवा योजना की छात्राओं द्वारा "मेरी माटी मेरा देश" कार्यक्रम के माध्यम से पंचपण प्रतिज्ञा लेकर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

दिनांक 15.08.2023 को 77 वॉ स्वतंत्रता दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रबंध समिति के अध्यक्ष डॉ० वीरेन्द्र गर्ग जी, सचिव श्री सुभाषचन्द अग्रवाल जी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी तथा प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

बुलन्दशहर यूपी मिशन शक्ति अभियान के तहत आज गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में एस०पी० सिटी सुरेन्द्र नाथ तिवारी ने महिलाओं और छात्राओं को उनकी सुरक्षा और उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया।

दिनांक 29.08.2023 को महाविद्यालय में साहित्यिक सांस्कृतिक परिषद के तत्वाधान में "**रक्षाबंधन**" पर्व के उपलक्ष्य में '**राखी बनाओ**' प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर के गृहविज्ञान विभाग द्वारा **01 सितम्बर 2023** से **07 सितम्बर 2023** तक पोषण सप्ताह मनाया गया।

दिनांक 02.09.2023 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में '**स्थापना दिवस**' के अवसर पर हवन का आयोजन किया गया, जिसमें यजमान के रूप में कार्यकारिणी के अध्यक्ष डॉ० वीरेन्द्र गर्ग जी तथा प्राचार्य डॉ० अंशु बंसल जी के साथ कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी, श्री कमल किशोर गर्ग जी, श्री राकेश कंसल जी तथा समस्त महाविद्यालय परिवार उपस्थित रहा।

दिनांक 05.09.2023 को महाविद्यालय में '**रोटरी क्लब बुलन्दशहर फ्रेंडस**' की ओर से शिक्षक दिवस के अवसर पर प्राचार्या जी और सभी प्राध्यापिकाओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री बी०बी० चौरसिया (एस०पी० देहात) प्राचार्य डॉ० अंशु बंसल जी, रोटरी क्लब के अध्यक्ष श्री मुकेश कुमार जी सदस्य श्री प्रदीप कुमार अग्रवाल जी, डॉ० कमलेन्द्र भारद्वाज जी और श्री सूर्यभूषण मित्तल जी ने कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित किया।

आज **दिनांक 06.09.2023** को महाविद्यालय में **रोट्री क्लब** की ओर से **सर्वाइकिल कैंसर** की दूसरी डोज लगाई गयी। इसकी पहली डोज का **टीका 31.05.2023** को महाविद्यालय की छात्राओं को लगाया गया।

दिनांक 14.09.2023 को महाविद्यालय में हिन्दी दिवस के अवसर पर '**सीता स्वयंवर प्रंसग का मंचन**' किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती रेनू मिश्रा जी (अपर जिला जज) तथा महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

दिनांक 01.10.2023 को महाविद्यालय में उत्तर प्रदेश शासन के निर्देशानुसार '**स्वच्छता पखवाड़ा-स्वच्छता की सेवा**' कार्यक्रम के अन्तर्गत महाविद्यालय परिसर को साफ किया।

दिनांक 02.10.2023 को महाविद्यालय में **गांधी जयन्ती** तथा **लाल बहादुर शास्त्री जी** की जयन्ती बड़े धूमधाम से मनाई गयी। महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ० वीरेन्द्र गर्ग जी, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी तथा प्राचार्या जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

दिनांक 11.10.2023 को महाविद्यालय में '**अंतराष्ट्रीय महिला दिवस की थीम**' "**बालिकाओं के अधिकारों के लिए आवाज उठाएं, कार्यवाही करें और बदलाव लाएं**" रहीं। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्रीमती पूर्णिमा सिंह, पुलिस उपाधीक्षक अपराध/यातायात, श्रीमती नीना गौतम महिला थानाध्यक्ष, श्रीमती रूचिका देवी महिला कल्याण अधिकारी, श्री अभिषेक विश्नोई (जे०ए०, डी०पी०ओ०), श्री राजकुमार (संरक्षण अधिकारी) महिला कल्याण विभाग तथा महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर किया गया।

आज दिनांक 13.10.2023 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में अंग्रेजी विभाग में "**इंग्लिश लैंग्वेज डे**" मनाया गया। इस कार्यक्रम में सर्वप्रथम कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी, मुख्य अतिथि डॉ० सी०पी० अग्रवाल जी,

डॉ० नीरज सिंघल जी तथा प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी द्वारा माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

आज **दिनांक 10.11.2023** को महाविद्यालय में **"दीपावली पर्व"** के उपलक्ष्य में **"रंगोली प्रतियोगिता"** व **"दीपक सज्जा प्रतियोगिता"** का आयोजन किया गया।

आज **दिनांक 11.12.2023** को महाविद्यालय में महिला कल्याण बुलन्दशहर द्वारा **"मिशन शक्ति अभियान"** के तहत छात्राओं को जागरूक किया गया। इस अवसर पर महिला कल्याण अधिकारी श्रीमती रूचिका जी, जिला प्रोबेशन अधिकारी श्री अभिषेक जी, बाल कल्याण समिति की अध्यक्ष एवं महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी तथा बाल कल्याण समिति की सदस्य श्रीमती कुसुम जी ने माँ सरस्वती के सम्मुख दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

दिनांक 21.12.2023 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में **"पुरातन छात्रा समारोह"** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ० वीरेन्द्र गर्ग जी, सचिव श्री सुभाष चन्द्र अग्रवाल जी एडवोकेट, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी तथा महाविद्यालय प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी भी उपस्थित रहीं

दिनांक 25.01.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत प्रथम एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 'मतदाता जागरूकता' विषय को लेकर रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दिनांक 26.01.2024 को महाविद्यालय में गणतन्त्र दिवस बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण महाविद्यालय सचिव श्री सुभाषचन्द्र अग्रवाल एडवोकेट जी ने, कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी तथा प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी ने किया।

दिनांक 29.01.2024 को महाविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना का द्वितीय एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया जिसमें स्वच्छता अभियान चलाकर स्वयं सेविकाओं ने महाविद्यालय प्रांगण की साफ-सफाई की ।

दिनांक 09.02.2024 को गौरी शंकर कन्या महाविद्यालय का एन०एस०एस० का तृतीय एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया, जिसमें इनर व्हील क्लब की ओर से छात्राओं के लिए शारीरिक स्वास्थ्य एवं हाइजीन विषय में जागरूक किया।

दिनांक 04.03.2024 को एन०एस०एस० का चतुर्थ एक दिवसीय शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर का मुख्य विषय **"योग ही जीवन है"** था।

दिनांक 07.03.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय बुलन्दशहर में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में जिलाधिकारी महोदय श्री सी०पी० सिंह विशिष्ठ अतिथि के रूप में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री श्लोक कुमार जी, प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी तथा दैनिक जागरण समाचार पत्र के ब्यूरो चीफ श्री भूपेन्द्र सिंह तथा दैनिक जागरण के अन्य सदस्यगण भी उपस्थित रहें।

दिनांक 09.03.2024 से **15.03.2024** तक गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय का राष्ट्रीय सेवा योजना का विशेष शिविर आयोजित किया गया, जिसमें **मतदाता जागरूकता, स्वच्छता अभियान** पर **नुक्कड़ नाटक, वृक्षारोपण, जल संरक्षण** पर **जागरूकता कार्यक्रम, साईबर क्राईम** पर **जागरूकता कार्यक्रम, महिला जागरूकता** तथा शिविर के अंतिम दिन **"होली स्पेशल"** कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

दिनांक 04.04.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर में जूनियर छात्राओं द्वारा तृतीय वर्ष की छात्राओं के लिये पार्टी का आयोजन किया गया।

दिनांक 19.06.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर में शासन की **"डिजी शक्ति योजना"** के अन्तर्गत मोबाईल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला सहकारी बैंक के चैयरमैन श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी विशिष्ट अतिथि पंजाब नैशनल बैंक के मैनेजर श्री अवनिंद्र कुमार चौहान एवं महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी तथा महाविद्यालय के कोषाध्यक्ष श्री सुशील कुमार कंसल जी द्वारा छात्राओं को मोबाईल वितरित किया गया। पंजाब नैशनल बैंक के द्वारा **रूपये 21000/-** की राशि की घोषणा महाविद्यालय पत्रिका हेतु की गयी।

दिनांक 20.06.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर में रोटरी क्लब, बुलन्दशहर की ओर से **"सर्वेक्स कैंसर टीकाकरण"** कैंप का आयोजन किया गया। जिसमें छात्राओं को सर्वेक्स कैंसर की तीसरी डोज लगाई गयी।

दिनांक 21.06.2024 को गौरी शंकर कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बुलन्दशहर में 10 वें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया।

महाविद्यालय के सभी कार्य सफलतापूर्वक प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी के दिशा निर्देशन में समस्त स्टॉफ के सहयोग से सम्पन्न हुए। मैं सभी कार्यकारिणी सदस्यों के सहयोग का हार्दिक धन्यवाद करता हूँ कि उन्होने मुझे अपने कार्यो के क्रियान्वयन हेतु प्रेरित किया तथा आशा करता हूँ कि भविष्य में भी उनका साथ मुझे मिलता रहेगा।

महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ० अंशु बंसल जी सभी प्राध्यापिकाओं एवं तृतीय श्रेणी वर्ग व चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी भी बधाई के पात्र हैं जो पूर्ण निष्ठा तथा लगन से **महाविद्यालय की उन्नति** में लगे हुए हैं तथा भविष्य में भी इसी प्रकार परिश्रम और निष्ठा का परिचय देंगे।

सुभाष चन्द अग्रवाल (एड०)

सचिव

कुछ पाने के लिए कुछ करना पड़ता हैं।

"कुछ पाने के लिए कुछ करना पड़ता है"- यह वाक्य उन लोगों के लिए इस्तेमाल करते हैं 'जो अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने लिए हर सम्भव प्रयास करते हैं और अन्त में सफलता पाते हैं।

मनुष्य के जीवन में सुख-दुख, जय-पराजय, लाभ हानि, यश-अपयश या कहना चाहिए कि उसके जीवन में अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों का चक्र चलता रहता है। प्रायः हम देखते है कि हर मनुष्य का कोई न कोई लक्ष्य होता है जिसे पाने के लिए वह लगा रहता है। अक्सर लोग कहते हैं कि **"कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है"**। पर शायद वे यह नहीं जानते कि कुछ पाने के लिए कुछ खोने की नहीं बल्कि कुछ करने की आवश्यकता होती है, क्योकि कड़ी मेहनत कभी बेकार नहीं जाती। सफलता चलकर नहीं आती हमें उस तक पहुँचना पड़ता है। ठीक उसी प्रकार जैसे भगवान ने हर पंछी के लिए भोजन तो दिया है, परन्तु उसके घोंसले में नहीं।

"नजर को बदलो तो नजारे बदल जाते हैं,
सोच को बदलो तो सितारे बदल जाते हैं,
कश्तियाँ बदलने की जरूरत नहीं,
दिशाओं को बदलो तो किनारे खुद व खुद बदल जाते हैं॥"

प्रायः जब हम अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते हैं तो हमें कई बार असफलताओं का भी सामना करना पड़ता हैं, किन्तु मनुष्य को हताश नहीं होना चाहिए। जैसे तेजस्वी सूर्य को भी अपने उदयकाल में अँधेरे से लड़कर उसे भगाना होता हैं, उसके उपरान्त ही व अपना उज्ज्वल स्वरूप सारे संसार पर बिखेर पाता है। इसलिए मनुष्य को हमेशा प्रयत्नशील रहना चाहिए, क्योंकि-

"प्रयत्न में वो ताकत होती है, जो तुम्हारे होंसलों की उड़ान के आगे आसमान को भी झुकने पर मजबूर कर देगी।"

हमारे वेद, पुराण भी यही कहते हैं कि जीवन में कुछ भी यूँ ही हासिल नहीं होता, इसके लिए कुछ करना पड़ता है। कर्म ही मनुष्य के जीवन का निर्धारक तत्व है और कर्म से वह सबकुछ हांसिल कर सकता है। जिस प्रकार बीज को वृक्ष बनने में कुछ समय लगता है, उसी प्रकार सफलता लगातार कर्म करते रहने और धैर्य से मिलती है।

मंजिल उन्ही को मिलती हैं,
जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता,
हौसलों से उड़ान होती है।

कविता
बी.ए. - तृतीय वर्ष

पुस्तकालय की समाज में भूमिका

आज का लोकतान्त्रिक युग समतामूलक समाज की वकालत करता है जिसमें प्रत्येक मानव को अपने विकास एवं शिक्षा के लिए बिना किसी भेद-भाव के समान अवसर प्रदान होने चाहिए तथा विभिन्न तरह की सूचनाओं का उपयोग मानवीय विकास के लिए बिना किसी भेद भाव के होना चाहिए।

पुस्तकालय का औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। यह शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण आधार स्तम्भ की तरह कार्यकरता है और पुस्तकालय के बिना आधुनिक शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है। औपचारिक शिक्षा तथा अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में पुस्तकालय का महत्वपूर्ण योगदान है।

आधुनिक विश्व और समाज अपने विकास के लिए शोधों पर आश्रित है। शोध कार्यो में सफलता के लिए उपलब्ध ज्ञान तथा सूचना की जानकारी अति आवश्यक है। पुस्तकालय और सूचना केन्द्रों द्वारा सूचनाओं का व्यवस्थापन प्रसारण किया जाता है। प्रत्येक तरह के शोध कार्य जैसे ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, सामाजिक शोधों के क्षेत्र में पुस्तकालयों की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

धार्मिक तथा आध्यात्मिक पुस्तकें कई तरह की होती हैं।

ये पुस्तक प्रायः धर्म और आध्यात्मिक बातों पर आधारित होती हैं। इस तरह की पुस्तको का संग्रह करके पुस्तकालय ने धार्मिक तथा आध्यात्मिक कार्यो मे योगदान दिया है।

पुस्तकालय वास्तव में संस्कृति का संरक्षक एवं संवाहक होता है। पुस्तकालयों द्वारा पुस्तकों का संग्रह किया जाता है और उसे संरक्षित किया जाता है, इसके अलावा यह समाज के लिए महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखता है।

पुस्तकालय और सूचना केन्द्रों द्वारा सूचनाओं और प्रलेखों का संग्रहण और व्यवस्थापन किया जाता है तथा उपयोक्ताओं के आवश्यकतानुसार सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है।

जीवन में आसानी से सफलता
पाने के लिए किताबों से
दोस्ती होना जरूरी है।

शिवानी शर्मा
बी.एम. - प्रथम वर्ष

दुख के प्रति अपना दृष्टिकोण बदलें

हमारे रोजमर्रा के जीवन मे समस्याओं का पैदा होना स्वाभाविक है, जिनसे हमें कष्ट व दुख भी होता है। जीवन की सबसे बड़ी समस्याएँ हैं- बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु। यदि हम इन समस्याओं से बचने के बजाय उनका सामना करें तो उनसे निपटने में ज्यादा आसानी होगी। हो सकता है कि आपको बुढ़ापा और मृत्यु नकारात्मक लगें और आप उन्हें भूलाना चाहें, फिर भी ये चीजें तो आएगीं ही। यदि आप इनके बारे मे सोचने से बचते रहे तो जिस दिन इनमें से कोई भी घट गई, तो आपको असहनीय मानसिक पीडा हो सकती है। परंतु यदि आप अपनी समस्याओं पर चिंतन करेगें तो इनके होने पर भी आपका मस्तिष्क स्थिर रहेगा क्योकि आपके लिए यह सब कुछ पहले से अपेक्षित था। इसलिए भविष्य में होने वाले कष्टों के बारे मे समय से पहले समझ लेना चाहिए। दुख को अपने रोजमर्रा का हिस्सा मान लेने से आप उन तत्वों की जांच शुरू कर सकते हैं, जो आपके असंतोष और मानसिक दुख का कारण हैं। उदाहरण के लिए, सामान्य तौर पर हमें या हमारे नजदीकी लोगो को प्रशंसा, यश, संपत्ति या अन्य दूसरी चीजें मिलती हैं, तो अच्छा लगता है, पर आपके प्रतिद्धंदी को मिलता हैं तो आपको असंतोष व दुख होता है। हालांकि यदि आप अपने सामान्य रोजमर्रा का जीवन देखें तो पाएंगें कि दर्द, पीड़ा और असंतोष के बहुत कारण होते हैं, जबकि खुशी व आनन्द देने वाली बातें बहुत कम होती हैं। चूंकि यह हमारे जीवन की सच्चाई है हमे पीड़ा के प्रति अपने दृष्टिकोण को बदलने की जरूरत है। यह इसलिए जरूरी है क्योंकि उसका प्रभाव इस बात पर पडता है कि कष्ट आने के समय हम उससे किस तरह निपटते है। बौद्ध मतानुसार, कष्ट के मूलतः तीन कारण है- अज्ञानता, तृष्णा और घृणा। इन्हे मस्तिष्क के तीन विष कहा जाता है। इन शब्दों के विशिष्ट अर्थ है। अज्ञानता का अर्थ सूचना का आभाव नहीं है, बल्कि यह स्वयं की तथा समस्त घटनाओं की सहीं प्रकृति की मूल अनभिज्ञता को दर्शाता है। सच्चाई जानने और तृष्णा व घृणा जैसी दिमाग की दुखदायी अवस्थाओं को दूर करने से व्यक्ति अपने मस्तिष्क को पूरी तरह शुद्ध और कष्ट मुक्त कर सकता है। जब व्यक्ति सोचता है कि रोजमर्रा का जीवन कष्टों से भरा हुआ है तो दुखों के मूल कारणों को दूर करने की प्रेरणा मिलती है। अन्यथा यदि कष्टों से मुक्त होने की कोई संभावना न हो तो इनके बारे में सोचने से हमारी विचारधारा बीमार और नकारात्मक हो सकती है। निश्चय ही पीड़ा मुक्त होने की इच्छा हर मनुष्य का जायज़ लक्ष्य है। यह पूरी तरह उचित है कि हम अपने दुख के कारणों को खोजें और अपनी समस्याएँ कम करने के लिए जो कुछ कर सकते है। वह करें। सभी स्तरों पर वैश्विक, सामाजिक, पारिवारिक एवं व्यक्तिगत समाधान की तलाश करें। परंतु जब तक हम कष्ट को असामान्य अवस्था मानते रहेंगे और उससे डरेगें, बचेंगे तब तक हम कष्ट के कारणों को दूर कर कभी सुख से नहीं जी पाएगें।

महिमा सिंह
बी.ए. - द्वितीय वर्ष

अच्छे और बुरे लोग

अकसर कई लोग उन लोगों के बीच बैठना पसंद करते है, जो सिर्फ उनकी झूठी तारीफ करते है, लेकिन आप बस एक बार उनसे अपने लिए मद्द की उम्मीद करके देखिएगा, आप खुद समझ जाएंगे कि वो हमारे हितैषी हैं या नहीं। **"नीम कड़वा जरूर होता है पर ज्यादातर बिमारियों में नीम हकीम है।"** कुछ लोग नीम की तरह होते हैं। लेकिन वो ही आपके सच्चे हितैषी भी होते हैं। ऐसे लोगो से हमेशा आपको फायदा ही मिलता है क्योकि उनको जब आपकी बुराई करनी होती है तो वो आपके पीठ पीछे नहीं बोलेंगे, बल्कि वो आपके सामने ही आपकी बुराई कर देंगे। उनकी बातें बिल्कुल खरी होती हैं। जहाँ तक बुरे लोगों की बात है वह नकारात्मक पहलुओं को तुरन्त पकड़ते है और जब हम उनके साथ रहना शुरू करते हैं तो हमारे अन्दर भी वही नकारात्मक भाव पनपने लगते हैं। हमारी सोच भी उन्हीं के जैसी होनी लगती है, क्योंकि एक दूसरे में घुलने-मिलने के लिए हमे भी उनके जैसा ही बनना पड़ जाता है। ये मानव की प्रकृति है कि वो नकारात्मकता के प्रति जल्दी ही आकर्षित हो जाता है, जिसका प्रभाव उन्हे तब दिखाई पड़ता है जब कोई उनकी आशाओं को रौंदकर उनसे आगे निकल जाता है। कई बार तो इतनी देर हो चुकी होती है कि मुकाम हाथ से पूरी तरह निकल जाता है। जो लोग मीठा बोलते हैं, आपको उनसे सतर्क रहने की जरूरत है हो सकता है कि वो आपके हितैषी ना हों।

सहबा खान
बी.कॉम.- द्वितीय वर्ष

गीता के श्लोक

1 **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।**
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि॥

भावार्थः श्री कृष्ण समझाते हैं कि केवल कर्म करना ही हमारे हाथ में है। कर्म द्वारा मिलने वाले फल हमारे हाथ में नहीं हैं इसलिए निःस्वार्थ होकर सिर्फ अच्छे कर्म करने पर ही ध्यान देना चाहिए।

2 **यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।**
अभ्युत्यानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

भावार्थः जब धर्म खतरे में आता है उस पर हानि पहुँचती है और अधर्म की वृद्धि होने लगती है तब श्री कृष्ण अपने महा स्वरूप की रचना द्वारा आगे आते हैं।

3 **नैनं छिद्रन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।**
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारूत॥

भावार्थः श्रीमद् भगवद् गीता के 'अनुसार' आत्मा को कोई शस्त्र नहीं काट सकता, ना ही किसी प्रकार की आग उसे जला सकती है। कोई पानी, हवा भी आत्मा को मार नहीं सकती।

4 **वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।**
इद्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥

भावार्थः कृष्ण भगवान कहते हैं वेदों में मैं सामवेद हूँ, देवताओ में मैं वासव हूँ। मैं इन्द्रियों का मन हूँ और मैं प्राणियों की चेतना भी हूँ।

5 **नास्ति विद्यासमों बन्धुर्नास्ति विधासम सुहत्।**
नास्ति विधासमं वित नास्ति विधासमं सुखम्॥

भावार्थः ज्ञान के समान कोई मित्र नहीं है और ज्ञान के समान कोई बंधू नहीं है। ज्ञान के समान कोई धन, कोई सुख नहीं है, कुल मिलाकर आदर्श व्यक्ति के जीवन में ज्ञान का स्थान सर्वोपरि है।

6. **विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।**
पात्रत्वाद्धनमाप्रोति धनाद्धर्म ततः सुखम्॥

भावार्थः ज्ञान विनम्रता देता है और विनम्रता से व्यक्ति सुपात्रता की ओर जाता है। सुपात्र होने से उसे धन की प्राप्ति होती है और धन से धर्म और फिर सुख की प्राप्ति होती है।

7 **ना चोरहार्य न च राजहायन भ्रातृभाज्यं न च भारकारी।**
व्यये कृते वर्धते एवं नित्यं विधाधनं सर्वधन प्रधानम॥

भावार्थः विद्यारूपी धन कोई चुरा नहीं सकता, न कोई राजा, न कोई भाई उस का साझीदार बन सकता है, न वह बोझ बन सकता है। ज्ञान का धन, जो सभी धनों में प्रमुख है, खर्च करने पर सदैव बढ़ता रहता है।

8 **यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काइक्षति।**
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स में प्रिय॥

भावार्थः जो न कभी हर्षित होता है, न द्वेष करता है, न शोक मनाता है, न कामना करता है तथा जो शुभ और अशुभ कर्मो का त्यागी है। ऐसा भक्तियुक्त पुरूष भगवान श्री कृष्ण को प्रिय है।

मितिका सिंह
बी.ए. – तृतीय वर्ष

कण–कण में 'राम'

राम नहीं मिलते ईटों में गारा में।
राम मिलें निर्धन की आंसू धारा में॥
राम मिलें हैं वचन निभाती आयु को।
राम मिलें हैं घायल पड़े जटायु को॥
राम मिलेंगे अंगद वाले पांव में।
राम मिलें हैं पंचवटी की छांव में॥
राम मिलेंगे मर्यादा से जीने में।
राम मिलेंगे बजरंगी के सीने में॥
राम मिलें हैं वचनबद्ध वनवासों में।
राम मिलें हैं केवट के विश्वासों में॥
राम मिलें अनुसुइया की मानवता को।
राम मिलें सीता जैसी पावनता को॥
राम मिलें ममता की माँ कौशल्या को।
राम मिलें हैं पत्थर बनी अहिल्या को॥
राम नहीं मिलते मंदिर के फेरो में।
राम मिले शबरी के जूठे बेरों में॥
राम नहीं मिले मन्दिरों में।
राम मिलें धरती के कण–कण में॥

दीपांशी सिंह
बी.ए. – द्वितीय वर्ष

सच क्या है? चेतना या पदार्थ?

योग विज्ञान चेतना का विज्ञान है उसमें प्रगति और परिवर्तन जैसी क्रियाओं में उसकी इसी शक्ति का प्रयोग होता है, जबकि पदार्थ विज्ञान में विद्युत, ताप, गैस एवं परमाणु ऊर्जा जैसी पदार्थगत शक्तियों का उपयोग किया जाता है। पदार्थ को प्रभावित करने का यह एक तरीका हुआ, किंतु एक दूसरे उपाय से भी इस प्रक्रिया को घटित किया जा सकता है और क्षणमात्र में रूपांतरित कर किसी वस्तु को दूसरे–तीसरे पदार्थ में बदला जा सकता है।

यह प्रणाली चेतना विज्ञान की है। योग विज्ञान इसी से संबधित है इसमें पदार्थ सत्ता के साथ किसी प्रकार की असावधानी नहीं करनी पड़ती, उसे धारण करने वाली चेतना के अणुओं को सक्रिय मात्र कर देना होता है। महाभारत युद्ध में इसी विद्या का प्रयोग करते हुए युद्ध किया गया था। उल्लेखों से ज्ञात होता है कि उसमें प्रयुक्त होने वाले शस्त्र देखने में तो बिलकुल सामान्य से थे। पर प्रयोग के दौरान कहर बरपाने वाले परिणाम प्रस्तुत करते थे। यह घटना परमहंस विशुद्धानंद से संबधित है और उन दिनों की है जब वे अपने झाल्दा स्थित आश्रम में प्रवास कर रहे थे। एक रोज उद्धवनारायण नामक एक शिष्य ने आकर पूछा कि महाभारत में जिन अग्निवाण, वृष्टि वाण जैसे आयुधो की चर्चा है, क्या ऐसे बाण तब सचमुच ही अस्तित्व में थे? अथवा यह सब अलंकारिक उल्लेख मात्र हैं? परमहंस देव ने सिर हिलाते हुए सहमति प्रकट की, और कहा कि निश्चय ही तब ऐसे शस्त्रास्त्र थे। इसके साथ ही उन्होनें सामने उगे हुए सरकंडो में से तीन को तोड़ लाने को कहा और शिष्य से पूछा– "क्या तुम उसे देखना चाहोगे? "शिष्य ने "हाँ" कह कर अपनी अभिलाषा प्रकट की, इसके बाद उन्होने एक सरकंडे का छिलका उतारा, उसको प्रत्यञ्चा बनाकर सरकंडों के दोनों सिरों पर बाँध दिया। इस प्रकार एक धनुष बन गया। फिर कुछ मंत्र पढ़े। इसके साथ ही वह एक सुन्दर धात्विक धनुष में परिवर्तित हो गया। तत्पश्चात् दूसरे सरकंडे को अभिमंत्रित किया। वह धातु का तीक्ष्ण नोक वाला तीर बन गया।

अब शिष्य को संबोधित किया – "यह एक सामान्य तीर–कमान है। योग बल द्वारा अब मै इसे असाधारण बनाऊँगा।" इतना कह कर बड़े विनीत भाव से ऊपर आकाश की ओर निहारते हुए कोई स्तुति की, तदुपरांत सामने खड़े एक विशाल बरगद वृक्ष को लक्ष्य कर उसे छोड दिया। घनघोर गर्जन करता हुआ वह तीव्र वेग से चल पड़ा और पेड़ को विदीर्ण कर दूसरी और निकल गया। और वृक्ष में आग लग गयी विशुद्धानंदजी ने तीसरा सरकंडा उठाया और उसे भी धात्विक तीर में बदला। फिर संधान सामने के बरगद पर कर दिया। तीर लगते ही तरूवर की आग कुछ ही क्षण में बुझ गई। तदुपरांत धनुष–वाण को हाथ में लेकर उन्होंने आँख बंद कर ली। वह देखते–देखते पुनः तीन सरकंडो में रूपांतरित हो गये। यह चेतना विज्ञान की उपलब्धि है। योग विज्ञान उसी से सम्बन्धित है। इस मूलभूत अंतर को जान लेने के बाद यह निश्चिय करना हमारी निजी समझ पर निर्भर है कि हम किसे श्रेष्ठ माने एवं जीवन में किसकी महत्ता को स्वीकार करे पदार्थ विज्ञान या चेतना विज्ञान की?...

पूजा भटनागर
बी.एम. – द्वितीय वर्ष

शिक्षको को समर्पित

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है।
जहाँ, सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया पेड़ बनता है।
हजारों बीज वही पेड़ जनता है।
काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है।
शिक्षक धरा से अम्बर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है।
शिक्षक बिना अधूरी वसुन्धरा रहती है।
याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था।
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चन्द्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था।
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।
सांदीपनी से गुरू सदियों से होते आये हैं।
कृष्णा जैसे नन्हे नन्हे बीज बोते आये हैं।
शिक्षक से ही अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम हैं।
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।
शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं।
शिक्षक की अनदेखी से वो रावण भी कहलाते हैं।
आओ हम संकल्प करे कि अपना फर्ज निभायेंगे।
अपने प्यारे भारत को हम जगतगुरू बनायेंगे।
अपने शिक्षक होने का हरपल अभिमान करायेंगे।
इस समाज में हम भी अपना शिक्षा यान चलायेंगे।

तानिया
बी.ए. – प्रथम वर्ष

भारतीय दर्शन के आलोक में उपभोक्तावाद

उस विद्या को 'दर्शन, कहा जाता है। मनुष्य के दु:खो की निवृत्ति के लिए या तत्व साक्षात्कार कराने के उद्देश्य से ही भारत में दर्शन का जन्म हुआ है हृदय की गाँठ तभी खुलती है और शोक तथा संशय तभी दूर होते हैं, जब एक सत्य का दर्शन होता है। भारतीय दर्शन में उपभोक्तावाद का स्थान महत्वपूर्ण तथा उपयोगी है। दर्शनों का मुख्य अर्थ होता है मनुष्य के जीवन को मार्गदर्शन प्रदान करना, क्योंकि बिना दर्शन के किसी मनुष्य की उन्नति होना उतना ही कठित होगा, जितना की कोई मनुष्य ऑक्सीजन के बिना जीवित रहने में कठिनाई का सामना करता है। सर्वप्रथम 'उपभोक्तावाद, शब्द का प्रयोग सन् 1915 मे हुआ था। उसने उपभोक्ताओं के अधिकारों और हितों की बात की और उन पर जोर दिया। इंग्लैण्ड और अन्यत्र सम्पचुएरी कानून मध्य युग या उसके पहले से चले आ रहे ये। खास कर उत्कृष्ट कपड़ो और आभूषणों का प्रयोग केवल सामांजिक पायदानों के ऊपर बैठे लोग ही कर सकते थे, इस प्रकार पहनावों और रहन-सहन को देखकर हम जान सकतें थे कि कौन किस वर्ग का है। इंग्लैण्ड की महारानी एलिजाबेथि प्रथम के विषय में कहा जाता है कि उनके पहनावों से यह बात रेखांकित होती थी कि उनका मकसद खास प्रकार के राजनीतिक जरूरतों को पूरा करना था। जहाँ तक भोग-विलास की वस्तुओं का प्रश्न है उनका उपयोग धनाढ्य लोग सदियों से करते आ रहे थे, विलास की वस्तुओं तक पहुँच मात्र चन्द लोगों की ही रही, शेष जनता को उनके उपयोग का अवसर शायद ही मिल पाता था। निश्चित रूप से जब भी ज्यादा धन संचय कर लेते थे, तब समाज के ऊपरी तबको के जैसा आचरण करने लगते थे, उनके खानपान और रहन-सहन की नकल करने लगते थे।

उपभोक्तावाद का जैसा चित्रण एमिला जोला के उपन्यास 'द लेडीज पैराडाइज' में मिलता है, वैसा अन्यत्र नहीं मिलता। उन्होंने उपभोक्तावाद के सब पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला। 1860 के दशक के दौरान 20 वर्षीय डेनिस बॉडु अपने दो छोटे भाईयों के साथ गाँव से पेरिस आती हैं वहाँ एक बहुत बड़ा डिपार्टमेंट स्टोर बन रहा है और उसका विस्तार तेजी से हो रहा है। जहाँ तक भारत का सवाल है नवधनाढ़यों की देखादेखी उन्हीं के समुदाय के अन्य लोगो ने बड़े-बड़े महल बनवाने प्रारम्भ कर दिए जब से नवउदारवादी युग प्रारम्भ हुआ है। तब से भारत में अरबपतियो की संख्या भी काफी बढ़ी है और वे दिल खोलकर खर्च करते है।

उपभोक्तावाद एक प्रवृति है जो इस विश्वास पर आधारित है कि ज्यादा उपयोग और ज्यादा वस्तुओं का स्वामी होने से अधिक सुख और खुशी मिलेगी। उपभोक्तावाद एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया है, जिसका सीधा अर्थ है कि समाज के भीतर व्याप्त प्रत्येक तत्व उपयोग करने योग्य है, उसे बस सही ढंग से एक जरूरी वस्तु के रूप में बाजार में स्थापित करने की जरूरत है। उपभोक्तावाद व्यापक गरीबी के बीच खर्चीली वस्तुओं की भूख जगाता है, जिससे भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है। सत्ताधारी लोग आम लोगो की जरूरतो के प्रति संवेदनहीन हो जाते है और उत्पादन की दिशा अधिकाधिक अभिजात वर्ग की जरूरतों से निर्धारित होने लगती है। उपभोक्तावाद ने इस कदर अपनी पहुँच और जड़ जमा ली है कि इसे समाप्त किया जाना किसी भी रूप में सम्भव नहीं है इसीलिए एक विकसित और परिपक्व मानसिकता वाले नागरिक को चाहिए कि उपभोक्तावाद की सीमा में बंधने के बजाय, स्वयं सीमा में रहकर इसका प्रयोग करें। भारतीय दर्शन में उपभोक्ततावाद का यही यथार्थ माना जाता है।

मुस्कान
बी.ए. - तृतीय वर्ष

"सफलता" अनमोल विचार

अगर तुम उड़ नहीं सकते तो दौड़ो।
अगर तुम दौड़ नहीं सकते तो चलो।
अगर तुम चल भी नहीं सकते तो रेंगों।
पर आगे बढ़ते रहो।
अपनी सोच और दिशा बदलो,
सफलता आपका स्वागत् करेगी
रास्ते पर कंकड़ ही कंकड़ हों,
तो भी एक अच्छा जूता पहनकर,
उस पर चला जा सकता है,
लेकिन यदि एक अच्छे जूते
के अंदर एक भी कंकड़ हो तो
एक अच्छी सड़क पर एक कदम
भी चलना मुश्किल होता है।
अर्थ- "बाहर की चुनौतियों से नहीं,
हम अपनी अंदर की कमज़ोरियों से डरते हैं!"

सना
बी. कॉम - प्रथम वर्ष

मातृभाषा हिन्दी

- हिन्दी थी वह जो लोगो के हृदयो मे उमंग भरा करती थी।
- हिन्दी थी वह भाषा जो लोगो के दिलो में बसा करती थी।
- हिन्दी को ना जाने क्या हुआ रहने लगी हैरान परेशान।
- पूछा तो कहती है अब कहा है मेरा पहले सा सम्मान।
- मै तो थी लोगो की भाषा, मै तो थी क्रान्ति की परिभाषा।
- मै थी विचार–संचार का साधन मै थी लोगो की अभिलाषा।
- मुझको देख अपनी दुर्दशा आज होती है बड़ी निराशा।
- सुन यह दुर्दशा व्यथा हिन्दी की हृदय में हुआ बड़ा आघात।
- बात तो सच है वास्तव में हिन्दी के साथ हुआ बड़ा पक्षपात।

राखी

बी.ए. – द्वितीय वर्ष

आज की नारी

मैं आज की नारी हूँ, इतिहास रचाने वाली हूँ, पढ़ जिसे गर्व महसूस करे वो इतिहास बनाने वाली हूं। नारी हूं आज की, खुले आसमान में उड़ना चाहती हूं मैं,

बाँध अपने जिम्मेदारियों का जूड़ा, अपने सपनों को पूरा करना चाहती हूं मैं । अब अपने जुल्मों का शिकार नहीं बना सकता कोई मुझे, अपने गगन को सितारों से सजाने वाली किरण बेदी हूँ मैं।

अंतरिक्ष में परचम लहराने वाली कल्पना चावला हूँ मैं, न डरती अब मैं खाई से, न डरती ऊंचाई से, पर्वत के शिखरों पर तिरंगा लहराने वाली अरुणिमा सिन्हा हूँ मैं । हां, मैं आज की नारी हूँ, आवाज उठाने वाली हूँ।

हो गई अति अब जुल्म नारी पर, अब इंसाफ की बारी है। बहुत हो गया त्याग नारियों का, अब नहीं होगा बलात्कार नारियों का, पतन होगा अब दरिंदों और अत्याचारियों का।

मैं आज की नारी हूँ, इंसाफ दिलाने आई हूँ। अब अबला नहीं, सबला है नारी, अपने पैरों पर खड़ी स्वतंत्र जिंदगी जीने वाली है, खुले आसमान में उड़ने वाली है।

मैं नारी हूँ, अपने समाज का निर्माण करने वाली हूँ, अपने कर्तव्यों और आदर्शों की रक्षा करने वाली हूँ मैं । हाँ, मैं आज की नारी हूँ, नारी को सम्मान दिलाने वाली हूँ।

महिमा सिंह

बी.ए. – द्वितीय वर्ष

दूसरों के दोस्त बनने से पहले अपने दोस्त बनें

अक्सर कुछ लोग अपनी जिंदगी से नाखुश होते हैं। उन्हें अपने भाग्य, अपनी किस्मत से शिकायत रहती है। जैसे **"मैं जो भी चाहता हूँ मुझे कभी नहीं मिलता, मेरा भाग्य मेरा साथ कभी नहीं देता या हर कार्य में मुझे असफलता मिलती है।"** ऐसे लोग निराशा से घिर जाते हैं और हमेशा उदास और तनावग्रस्त रहते हैं।

कुछ लोग ऐसे भी होते है जिन्हें अपने आसपास के लोग अपने दोस्तों और अपने रिश्तो से शिकायत रहती है जैसे **"सभी मुझे इग्नोर करते हैं, मेरा मजाक बनाते हैं या मुझे कोई नहीं चाहता, कोई मदद नहीं करता।"** ये लोग धीरे–धीरे दुनिया से कटने लगते हैं। एकाकीपन और अवसाद की शिकार भी हो सकते हैं।

ऐसी सभी परेशानियों और समस्याओ से निजात पाने के लिए सबसे जरूरी है कि आप पहले अपने दोस्त बनें और अपने साथ कुछ समय बितायें। अक्सर जिंदगी की भागदौड़ में हमारे पास खुद के लिए जरा भी वक्त नहीं होता। हमारे साथ जो भी होता है हम बस उस पर अपनी प्रतिक्रिया दे देते है, और ये नहीं सोचते कि ये क्यों हो रहा है।

हम सभी को चाहिए कि हम रोज कुछ समय सिर्फ अपने साथ बिताये। खुद से बात करे। हमें क्या अच्छा लगता है, क्या बुरा लगता है, किन कार्यो से खुशी मिलती है और किन से नहीं, यह सोचें। अपने हर कार्य, अपने व्यवहार, अपने मूड पर प्रतिक्रियाओं का निरीक्षण कीजिये।

जहाँ बात आपकी नौकरी या कैरियर से जुड़े निर्णयों की हो तो उसके लिए जरूरी है कि आप अपनी पसंद, नापसंद, अपनी क्षमता और अपनी कमजोरियों को पहचाने। आप किस क्षेत्र में माहिर है, क्या करके आपको खुशी मिलती है, आपके किस कार्य की हर जगह तारीफ होती है। और किसी कार्य को करते समय आप पूरे आत्मविश्वास से भरे होते हैं। ये सब जानना बहुत जरूरी है।

जब आप खुद को पहचानने लगेंगे तो आपके लिए लक्ष्य का निर्धारण आसान हो जाएगा। अपने से जुड़े निर्णय करते समय आपको दुविधा का सामना नहीं करना पड़ेगा। समय की बर्बादी से बचेंगे और गलत निर्णयों से भी आप अपने भाग्य के निर्माता बनेंगे। अपने रिश्तों और दोस्तों का चुनाव कर पायेंगे और रिश्तो में मधुरता आएगी। सही दिशा में सही कदम उठाकर अपने सभी सपनों को साकार कर पाएंगे और जीवन के हर क्षेत्र में सफलता आपके कदम चूमेगी।

मिताली भारद्वाज

बी.ए. – द्वितीय वर्ष

मानव हृदय

- एक इंसान का हृदय लगभग एक बड़ी मुट्ठी के आकार का होता है।
- हृदय हमारे शरीर में वक्ष के अन्दर, मध्य से थोड़ा बाई ओर एवं अधर तल की ओर स्थित होता है।
- एक स्वस्थ व्यक्ति का हृदय लगभग 13 सेमी लम्बा और 9 सेमी चौड़ा होता है।
- इसका भार लगभग 300 ग्राम, रंग गहरा लाल या बैगनी–सा होता है। हृदय का भार शरीर भार का लगभग 1/200 भाग होता है।
- स्वस्थ मनुष्य में हृदय स्पन्दन दर 72 प्रति मिनट होती है एक स्पन्दन लगभग 0.8 सेकण्ड मे पूरा होता है।
- यह शिराओं द्वारा विभिन्न अंगो से रूधिर एकत्र करता है। एकत्र रूधिर को आवश्यकतानुसार धमनियो द्वारा समस्त अंगो तक पम्प करता है।
- हृदय पूरे शरीर में 6 क्वार्ट (5.7 लीटर) रक्त पंप करता है।
- हृदय एक नियमित गति से संकुचित तथा अनुशिथिलन होता है इस क्रिया को 'हृदय स्पन्दन' या हृदय का धड़कना कहते हैं।
- नवजात शिशुओं का दिल वयस्क मनुष्य की तुलना में तेजी से धड़कता है लगभग 70–190 धड़कन प्रति मिनट।
- एक महिला का दिल आमतौर पर एक पुरूष की तुलना में तेज धड़कता है एक औसत पुरूष का हृदय एक मिनट में लगभग 70 बार धड़कता है जबकि औसत महिला की हृदय गति 78 बार प्रति मिनट होती है।

आयु	हृदय स्पन्दन दर
1 वर्ष	120/ मिनट
2 वर्ष	110/ मिनट
3 से 6 वर्ष	95/ मिनट
7 से 13 वर्ष	80–90/ मिनट
14 से 21 वर्ष	80–85/ मिनट
व्यस्क	70–80/ मिनट
प्रौढ़ावस्था	65–75/ मिनट
वृद्धावस्था	60–70/ मिनट

माही तौमर
बी.ए. – प्रथम वर्ष

प्रकृति का नियम

हर कोई अपने जीवन में कभी न कभी विकट परिस्थितियों से गुजरता है। ऐसी स्थिति में कुछ व्यक्ति बहुत जल्द ही निराश होने लगते हैं, कुछ व्यक्ति इसे ईश्वर की मर्जी मान लेते हैं। वैसे इंसान जो धैर्य खो देते हैं, उन्हें संकटों का सामना करने में मुश्किल होती है। फिर वे ईश्वर से सवाल करने लगते हैं कि यह जिंदगी ही क्यों दी और जिंदगी दी तो जिंदगी में इतने दु:ख क्यो दिए। दुख दिए तो दुख का निवारण क्यों नहीं हो रहा है?

हमें यह ध्यान रखने की आवश्यकता है कि अगर इस प्रकृति ने हमें जन्म दिया है तो हम सभी इस प्रकृति की संतान हैं। इस प्रकृति को सबका ध्यान है। उसको सबका स्वभाव पता है। उसको सबकी क्षमता पता है। उसे यह भी पता है कि किसी को अस्तित्व में बनाए रखने के लिए उसके जीवन में कितना संघर्ष लाना आवश्यक है। अन्यथा व्यक्तिगत स्वभाव या प्रकृति के अनुसार अस्तित्व में बने रहने के लिए उसमें जरूरी क्षमता विकसित नहीं हो पाएगी। ठीक वैसे ही जैसे एक तितली इस दुनिया में आई, अगर उस तितली के लिए चुनौतीपूर्ण क्षण किसी भी वजह से आसान हो जाए तो वह उस क्षण के लिए बेहतर है, लेकिन उसके बाद की चुनौती वह सह नहीं पाएगी। चुनौतियां हमें भविष्य के लिए तैयार करती है। हमें प्रकृति के नियम पर भरोसा रखना होगा। हमें ईश्वर पर भरोसा रखना होगा। हमारा जन्म जिस उद्देश्य के लिए हुआ है हम उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाएं। हमेशा याद रखिए कि जिसके जीवन में अभूतपूर्व संघर्ष आया है, वही अभूतपूर्व सफलता के योग्य बन सकता है। वह उन करोड़ों लोगों से अलग है, जिसने उनकी तुलना में अपेक्षाकृत आसान एवं सुगम जीवन जिया है।

पूजा यादव
बी.ए. – द्वितीय वर्ष

हमें आबादी कम करनी ही चाहिए

जनसंख्या–वृद्धि का मतलब है, आबादी का इस अनुपात में बढ़ जाना कि उसकी वृद्धि–दर हमारे नियंत्रण से बाहर हो जाए।

इससे जाहिर तौर पर जीवन की गुणवत्ता गिर जाती है। आज विश्व की आबादी की बात करें, तो यह 7.6 अरब है, जो साल 2030 तब बढ़कर 8.6 अरब हो सकती है। और 2050 तक बढ़कर 9.8 अरब। जब प्राकृतिक संसाधन सीमित हों, तब क्या जनसंख्या में इस तरह की बढ़ोत्तरी का समर्थन किया जा सकता है, अर्थात् चीन का उदाहरण देकर बताया जा रहा है कि जनसंख्या वृद्धि दर को नियंत्रित करने के अपने नुकसान हैं, लेकिन जनसंख्या बढ़ने से क्या–क्या नुकसान होते हैं, क्या इसे अलग से बताने की जरूरत है?

आज भारत की आबादी जिस तेजी से बढ़ रही है, उससे तमाम संसाधनों पर दवाब बढ़ गया है। इस कारण नीति–निर्माताओं के सामने कई तरह की चुनौतियाँ पैदा हो गई हैं। जनसंख्या वृद्धि का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि आवश्यकता की वस्तुओं की खपत बढ़ जाती है, वे हमारी पहुँच से बाहरी होने लगती हैं। कम से कम आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता के लिए ही सही, हमें अपनी बढ़ती आबादी को थामने का प्रयास करना चाहिए।

रूबी
बी.ए. – तृतीय वर्ष

धैर्य रखें

अयोध्या में प्रभु श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद जिस तरह से वहां के लिए भीड़ उमड़ी है, वह इस बात का प्रमाण है कि देश में सनातन आस्था की जड़े अत्यंत गहरी और मजबूत हैं। यही कारण है कि हर दिशा से लोग वहाँ चले आ रहे हैं। श्री राम जनमानस के लिए आराध्य हैं इसलिए उनके दर्शन के लिए लोगो में आतुरता है और ऐसा होना सहज भी है, क्योकि इस दिन के लिए लोगों ने पाँच सदी की प्रतीक्षा की है। इसके साथ ही व्यवस्था के पक्ष को भी देखा जाना चाहिए। किसी भी मंदिर में एक साथ हजारो दर्शानार्थियों का एक साथ प्रवेश नहीं हो सकता। श्रीराम मंदिर का परिसर विशाल अवश्य है, लेकिन उसकी भी क्षमता निर्धारित है इसीलिए अत्याधिक लोगों की उपस्थिति से वहाँ की सुरक्षा व्यवस्था प्रभावित हो सकती है। भीड़ बढ़ने पर नगर की व्यवस्था पर भी असर पड़ेगा।

प्रभु की प्रतिमा के दर्शन की ललक हर किसी में है किंतु यह भी जरूरी है कि अयोध्या में व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग किया जाए।

अंजू रानी
बी.ए. – तृतीय वर्ष

संघर्ष, सद्प्रयास, सुफल

माँ जानकी की खोज के लिए वानर समुदाय को सुग्रीव जिस भाव से रामकाज के लिए प्रेरित करते है, उसी भाव की परिणति अब साक्षात् चहुंदिशि दृष्टिगोचर हो रही हैं। आक्रांता बाबर के रावण समान कृत्य के संघर्षपूर्ण प्रतिकार की पांच सौ साल की यात्रा लंबी है, लेकिन तीन दशकों के दृश्य आज की पीढ़ी के मानस पटल पर चलचित्र के समान अंकित हैं। अनगिनत बलिदानों, त्याग, तपस्या के बाद तीन दशक पहले राम–भक्तों के तप्त हृदय को कुछ शीतलता अवश्य मिली। वैसे ही, जैसे अशोक वाटिका में प्रभु राम का संदेश मां जानकी तक पहुचाने के बाद हुनमानजी को मिली थी, लेकिन संघर्ष शेष रहा। बरसों रामलला जीर्ण–शीर्ण टाट तले विराजमान रहे और रामभक्त आंखों में लहू और हृदय में पीडा़ मिश्रित आक्रोश लिए रामकाज के बहु विधि उपाय करते रहे। बाधाओं का अंत नजर नहीं आ रहा था, किंतु रामकाज कीन्हें बिनु मोहि कहां विश्राम की भावना लिये रामादल के सेवक अविचल भाव से जुटे रहे।

संघर्ष के साथ अविचल भाव से निरंतरता बनी रही और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के पश्चात् जब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने पाँच अगस्त 2020 को रामलला के भव्य मंदिर की साध से भूमिपूजन किया और रामलला को टाट से निकाल, ठाठ से प्रतिष्ठित करने का संकल्प ले उन्हें अस्थायी मंदिर में पहुंचाया तो सामूहिक सद्प्रयास का पहला सुफल मिला। साढ़े तीन वर्षो के अनथक परिश्रम के बाद अब इसका जो सुफल मिला वह चहुदिशि आनंद की आभा बिखेर रहा है।

कल्पना सिंह
बी.ए. – प्रथम वर्ष

आत्मनिर्भर भारत

"राष्ट्र की जनता में आशाओं का दीप जलाएं हम,
विश्व भर में फिर से ज्ञान का संदेश भिजवाएं हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाएं हम।

अपनी कला, परिधान, भाषा सब अपनाएं हम,
भारतीय संस्कृति से सबको अवगत कराएं हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाए हम।

तकनीकों का सदुपयोग करना बताएं हम,
भारतीय प्रतिभाओं को सम्मान दिलाएं हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाएं हम।

युवाओं को अब उद्यमशीलता सिखाएं हम,
मजदूरों को अपने घर में रोजगार दिलाएं हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाएं हम।

ऑर्गेनिक खाद्य पदार्थ को भी उपजाएं हम,
भारत को पुनः कृषि प्रधान राष्ट्र बनाए हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाए हम।

गरीबों को भी पौष्टिक आहार खिलाएं हम,
राष्ट्र को सम्पूर्ण रोगों से मुक्ति दिलाएं हम,
आओ मिलकर आत्मनिर्भर भारत बनाएं हम।

चलो-चलो समाज में जागरूकता फैलाएं हम,
मिल-जुल कर स्वदेशी को ही अपनाएं हम,
आओ मिलर आत्मनिर्भर भारत बनाए हम॥"

टीना सिंह
बी.ए. - प्रथम वर्ष

एक फकीर की सीख

दोस्तो आज मैं आप लोगो के साथ एक छोटी-सी कहानी शेयर कर रही हू जो हमे जीवन में एक बड़ी सीख देती है-

- एक फकीर नदी के किनारे बैठा था। किसी ने पूछा: बाबा क्या कर रहे हो ? फकीर ने कहा : इंतजार कर रहा हूँ कि पूरी नदी बह जाए तो फिर पार करूँ।
- उस व्यक्ति ने कहा: कैसी बात करते हो बाबा पूरा जल बहने के इंतजार में तो तुम कभी नदी पार ही नहीं कर पाओगे।
- फकीर ने कहा "यही तो मैं तुम लोगों को समझाना चाहता हूँ कि तुम लोग जो सदा यह कहते रहते हो कि एक बार जीवन की जिम्मेदारियाँ पूरी हो जाये तो मौज करूँ, घूमू फिरूँ, सबको मिलूँ, सेवा करूँ...
- जैसे नदी का जल खत्म नहीं होगा। हमको इस जल से ही पार जाने का रास्ता बनाना है, ऐसे ही जीवन खत्म हो जायेगा पर जीवन के काम कभी खत्म नहीं होंगे। इसलिए हमे अपने जीवन में अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करते हुए हमेशा आनन्द के साथ जीवन व्यतीत करने का प्रयास करना चाहिए।
- किसी ने सच ही कहा है- जी लो जिन्दगी को जी भर के क्योंकि जिन्दगी फिर न मिलेगी दोबारा।

हिमांशी
बी.ए. - तृतीय वर्ष

पता नहीं संसार में सब क्यों मुझे रोक रहें?

पता नहीं संसार में सब क्यों मुझे रोक रहे।
पर मैं उड़ना चाहती हूँ इसनीले आकाश में।
मंजिल पता है मुझको अपनी उसको मैं पाना चाहती हूँ
संसार रोक रहा उड़ने से मुझको नए-2 बहानों से।

फिर भी कर रही डटकर सामना उस नीले अंबर के काले बादलो से।
बार-बार मेरे पंखों में लग रही थी बिजली की चुभन
पता नहीं संसार में सब क्यों मुझे रोक रहे उड़ने से
पर मैं उड़ना चाहती हूँ उस नीले आकाश में।

निकल गई जंग के मैदान से पर पीछा ना छोड़ा उस संसार ने
पता नहीं क्या गुनाह किया मैने जो बार-बार जख्म मुझे मिल रहे।
मैने क्या बिगाड़ा इस संसार का बस उड़ना ही तो चाहती हूँ
परिंदा बनकर आकाश में। खो जाना चाहती हूँ।

अपने सपनों में बस जाना चाहती हूँ
फिर भी पता नहीं संसार मुझे क्यों रोक रहा उड़ने से
पर मैं उड़ना चाहती हूँ उस नीले आकाश में।

छवि कुमारी
बी.कॉम. - प्रथम

"राम मन्दिर के लिए संघर्ष"

"राम मंदिर हिंदुओं के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल है। यह माना जाता है कि भगवान राम का जन्म अयोध्या में हुआ था तथा राम मन्दिर का निर्माण अयोध्या में ही नहीं अपितु पूरे भारत देश के लिए एक लंबे समय से चल रहा विवाद है। अयोध्या राम मन्दिर भारत में प्रसिद्ध और चर्चित मन्दिर है। अयोध्या राम मन्दिर विवाद लगभग 1858 में शुरू हुआ था। पहला मामला 1885 में दर्ज किया गया था। सन् 1989 में विश्व हिंदू परिषद (VHP) द्वारा अयोध्या स्थान पर 'शिलान्यास' किए जाने के बाद मुख्य आग भड़की थी। राम मन्दिर अयोध्या से जुड़ी घटनाएँ और मामले को सुलझाने का संघर्ष एक राजनीतिक एजेंडा बन गया। 2019 में सुप्रीम कोर्ट ने विवादित स्थान जो कई वर्षो से अयोध्या में ही नही अपितु पूरे भारत में विवाद का कारण उस स्थान को राम मन्दिर का आवंटित करके इस मामले पर पूर्ण विराम लगा दिया। इस फैसले से सम्पूर्ण भारत में खुशी की लहर चल उठी।

भारत के प्रधानमंत्री 'नरेंद्र मोदी जी' ने 5 अगस्त, 2020 को अयोध्या में राम लला मन्दिर का शिलान्यास किया तथा निर्धारित तिथि के अनुसार 'राम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा' समारोह 22 जनवरी 2024 को आयोजित किया गया तथा इस मन्दिर के द्वार लोगो के लिए खुल गए। अयोध्या में राम मन्दिर को आवंटित भूमि 2.7 एकड है। जिसमे राम मन्दिर निर्मित क्षेत्रफल 57,400 वर्ग फुट है। मन्दिर 360 फीट लंबा व 235 फीट चौड़ा और 161 फीट ऊचाँ है। यह मन्दिर हिन्दुओं के लिए एक महान पर्यटक आकर्षण व तीर्थ स्थान बन गया है। अयोध्या राम मन्दिर का निर्माण भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण और परिवर्तन कारी घटना है। राम जन्मभूमि के पवित्र स्थल पर निर्मित राम मन्दिर का अत्यधिक सांस्कृतिक, धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व है। इस मन्दिर के निर्माण की यात्रा राष्ट्र तथा हमारे पूर्वजों के जटिल सामाजिक, राजनीतिक परिदृश्य व संघर्ष को दर्शाता है। राम मंदिर का निर्माण केवल एक धार्मिक उपक्रम नहीं है बल्कि सदियो से चले आ रहे विवाद के समापन का प्रतीक है। यह मन्दिर भारत में एक आशा की किरण बनकर उभर रहा है। जो राष्ट्रीय गौरव को, एकजुटता की भावना को बढ़ावा दे रहा है तथा इस मन्दिर के निर्माण से सम्पूर्ण भारत में एकता दिख रही है।

दीपांशी सिंह

बी.ए. – तृतीय वर्ष

नई शिक्षा नीति 2020

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है सीखने और सिखाने की क्रिया। इस प्रकार हम वह सकते हैं कि किसी भी समाज में चलने वाली वह निरंतर प्रक्रिया जिसका उद्देश्य इंसान की आन्तरिक शक्तियों का विकास करना और उसके व्यवहार में सुधार लाना हैं। शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य ज्ञान और कौशल में वृद्धि कर मनुष्य को योग्य नागरिक बनाना हैं।

आज़ादी के बाद भारत में पहली शिक्षा नीति सन् 1986 में बनाई गई थी जों मुख्यत: लॉर्ड मैकाले की अंग्रेजी प्रधान शिक्षा नीति पर आधारित थी। इसमें सन् 1992 में कुछ संशोधन भी किए गए किन्तु इसका ढांचा मूलत: अंग्रेजी माध्यम शिक्षा पर ही केन्द्रित रहा।

आज समय के साथ हमें यह महसूस हुआ कि 1986 की शिक्षा नीति में कुछ खामियाँ हैं। इसके तहत बच्चा ज्ञान तो हासिल कर रहा हैं, किन्तु यह ज्ञान उससे भविष्य में रोजगार के अवसर पैदा करने योग्य नहीं बना पा रहा हैं। अत: इन कमियों को दूर करने के लिए नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लाने की आवश्यकता पड़ी।

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020–21 वी शताब्दी की ऐसी पहली शिक्षा नीति है। जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए आने वाले आवश्यकता को पूरा करना है। यह नीति भारत की परंपरा और उसके सास्कृतिक मूल्यो को बरकरार रखते हुए 21 वीं सदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्ष्य, जिसके अतंर्गत शिक्षा व्यवस्था उसके नियमों का वर्णन सहित सभी पक्षों के सुधार और पुनर्गठन का प्रस्ताव रखती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रत्येक व्यक्ति में निहित रचनात्मक क्षमता के विकास व्यक्ति में निहित रचना पर जोर देती है, यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है, कि शिक्षा से ना केवल साक्षरता उच्च, स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधित संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना चाहिए।

NEP–2020 मे छात्रों के सीखने की प्रगति की बेहतर जानकारी हेतु नियमित और रचानात्मक आकलन प्रणाली को अपनाने का सुझाव दिया गया।

छात्रों के समग्र विकास के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कक्षा–10 और 12 की परीक्षाओं में बदलाव किये जाएंगे।

NEP–2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण सुधार किए गये।

खुशी शर्मा

बी.ए.– द्वितीय वर्ष

जी 20 एक महान कूटनीतिज्ञ सफलता

जी 20 या 20 का समूह एक अन्त: सरकारी मंच है जिसमें सम्प्रभु राज्य, अफ्रीकीय संघ और यूरोपीय संघ शामिल हैं। यह विश्व अर्थव्यवस्था से सम्बन्धित प्रमुख मुद्दों, जैसे अन्तर्राष्ट्रीय वित्तिय स्थिरता, जलवायु परिवर्तन शमन, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा पर्यावरण, भ्रष्टाचार विरोध और संधारणीय विकास के सम्बोधन हेतु कार्य करता है।

जी 20 विश्व की अधिकांश सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्थाओं के वित्त मन्त्रालयों से बना है, जिसमें औद्योगिक और विकासशील दोनों देश शामिल हैं, यह सकल विश्व उत्पाद का लगभग 80% अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 75% वैखिक जनसंख्या का द्वितृतीयांश और विश्व के भूमि क्षेत्र का 60% भाग है। जी 20 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केन्द्रीय बैंक के नियन्त्रकों हेतु वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों पर चर्चा हेतु एक मंच के रूप में हुई थी। 2008 के पश्चात्, जी 20 शिखर सम्मेलन को प्रतिवर्ष न्यूनतम एक बार क्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है, जिसमें प्रत्येक सदस्य के शासन प्रमुख या राष्ट्रप्रमुख, वित्त मंत्री, या विदेश मंत्री और अन्य उच्च पदस्थ अधिकारी शामिल होते हैं। यूरोपीय संघ का प्रतिनिधित्व यूरोपीय आयोग और यूरोपीय केन्द्र बैंक द्वारा किया जाता है। अन्य देशों, अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों और असरकारी संगठनों को शिखर सम्मेलन में सहभागिता हेतु आमंत्रित किया जाता है, कुछ को स्थायी रूप से। 2009 में जी 20 की "अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंत्र" के रूप में नामित किया गया था। जी 20 नई दिल्ली शिखर, सम्मेलन 2023 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने घोषणा की कि अफ्रीकीय संघ को जी 20 के सदस्य के रूप में शामिल किया गया है, जिससे यह 21 तम सदस्य बन गया है। 2023 के अनुसार, समूह में 21 सदस्य हैं, अर्जेटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इण्डोनेशिया, इटली, जापान, मैक्सिको, रूस, सउदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण कोरिया, तुर्की, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय संघ और अफ्रीकीय संघ। अतिथि आमंत्रितो में, अन्य देशों के अतिरिक्त, स्पेन, संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और आसियान शामिल है। प्रत्येक वर्ष स्पेन के अतिरिक्त, जी 20 के अतिथियों में आसियान देशों के अध्यक्ष दो अफ्रीकी देश (अफ्रीकी संघ के अध्यक्ष और अफ्रीकी के विकास के लिए नई साझेदारी के प्रतिनिधि) और एक देश (कभी-कभी एक से अधिक) जी 20 के अध्यक्ष द्वारा प्रत्येक बार आमंत्रित किया जाता है, आमतौर पर वे अपने ही क्षेत्र से होते हैं। जी 20 की सदस्यता किसी भी वर्ष में विश्व की 21 सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं को प्रतिबिम्बित नहीं करती है, जैसा कि संगठन कहता है, जी 20 जैसे मंच में, इसकी गतिविधि की प्रभावशीलता और निरन्तरता सुनिश्चित हेतु इसमें शामिल देशों की संख्या को प्रतिबन्धित और तय करना विशेषत: महत्वपूर्ण है। जी 20 की सदस्यता हेतु कोई औपचारिक मानदण्ड नहीं है और इसकी स्थापना के बाद से समूह की संरचना अपरिवर्तित बनी हुई है। जी 20 के उद्देश्यों के कारण, यह महत्वपूर्ण माना गया कि अन्तर्राष्ट्रयीय वित्तीय प्रणाली हेतु प्रणालीगत महत्त्व के देशों और क्षेत्रों को शामिल किया जाए। भौगोलिक सन्तुलन और जनसंख्या प्रतिनिधित्व जैसे पहलुओं ने भी प्रमुख भूमिका निभाई।

कल्पना सिंह
बी.ए. – प्रथम वर्ष

भारत का राष्ट्रगान – रोचक तथ्य

1. भारत का राष्ट्रगान नोबेल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ टैगोर द्वारा लिखा गया है। उन्होने बांग्लादेश का राष्ट्रगान भी लिखा है।
2. भारत के राष्ट्रगान की पंक्तियों में मूल रूप से राग अल्हैया बिलावत में निर्धारित की गई हैं। फिर भी इस राग के शास्त्रीय रूप में थोड़े बदलाव के साथ इसे गाया जाता है।
3. जनगणमन का पहला संस्करण 1911 में कोलकाता में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के एक सम्मेलन में गाया गया था। 1942 में हेमबर्ग में पहली बार जनगण मन का प्रदर्शन किया गया (गाया नहीं गया)
4. 24 जनवरी 1950 को जन मन गण को भारत का राष्ट्रगान घोषित किया गया।
5. भारत के राष्ट्रगान के अधिकारिक संस्करण में कायदे से 52 सेकेंड का समय होना चाहिए न कि 54 सेंकेड का।
6. कानून के मुताबिक राष्ट्रगान गाने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया जा सकता।

प्राची शर्मा
बी.ए. – प्रथम वर्ष

समान नागरिक संहिता

एक सामाजिक मामलों से संबंधित कानून होता है जो सभी पंथ के लागों के लिए विवाह, तलाक, भरण-पोषण, विरासत व बच्चा गोद लेने आदि में समान रूप से लागू होता है। दूसरे शब्दों में, अलग-अलग पंथों के लिए अलग-अलग सिविल कानून न होना ही 'समान नागरिक संहिता' की मूल भावना है। यह किसी भी पंथ जाति के सभी निजी कानूनों से ऊपर होता है।

1930 में जवाहरलाल नेहरू, हालांकि उन्होंने एक समान नागरिक संहिता का समर्थन किया, उन्हें वरिष्ठ नेताओं द्वारा विरोध का सामना करना पड़ा, फिलहाल समान नागरिक संहिता भारत में नागरिकों के लिए एक समान कानून को बनाने और लागू करने का एक प्रस्ताव है, जो सभी नागरिकों पर उनके धर्म, लिंग और यौन अभिरुचि की परवाह किए बिना समान रूप से लागू होगा। वर्तमान में, विभिन्न समुदायों के व्यक्तिगत कानून उनके धार्मिक ग्रंथों द्वारा शासित होते हैं। पूरे देश में समान नागरिक संहिता लागू करना भारत की सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी द्वारा किए गए विवादास्पद वादों में से एक है। यह भारतीय राजनीति में धर्मनिरपेक्षता के संबंध मे एक महत्वपूर्ण मुददा है और शरिया और धार्मिक रीति-रिवाजों की रक्षा मे भारत के राजनीतिक वामपंथी, मुस्लिम समूहों और अन्य रूढ़िवादी धार्मिक समूहों और संप्रदायों द्वारा विवादित बना हुआ है।

अभी व्यक्तिगत कानून सार्वजनिक कानून से अलग-अलग है। इस बीच, भारतीय संवधिान का अनुच्छेद 25-28 भारतीय संविधान नागरिकों को धार्मिक समूहों को अपने स्वयं के मामलों का प्रबंधन करने की अनुमति देता है। संविधान का अनुच्छेद 44 भारतीय राज्य से अपेक्षा करता है कि वह राष्ट्रीय नीतियां बनाते समय सभी भारतीय नागरिकों के लिए राज्य के नीति निर्देशकतत्व और समान कानून को लागू करे।

इतिहास-ब्रिटिश भारत (1858-1947)

व्यक्ति कानून पहली बार ब्रिटिश राज के दौरान मुख्य रूप से हिंदू और मुस्लिम नागरिकों के लिए बनाए गए थे। अंग्रेजो को समुदाय के नेताओं के विरोध का डर था और इसलिए वे इस घरेलू क्षेत्र में आगे हस्तक्षेप करने से बचते थे। भारतीय राज्य गोवा जो उस समय पुर्तगाल के औपनिवेशिक शासन के अंतर्गत होने के कारण ब्रिटिश भारत से अलग था, वहाँ एक समान पारिवारिक कानून को बरकरार रखा गया, जिसे गोवा नागरिक संहिता के रूप में जाना जाता है। इस प्रकार यह आज तक समान नागरिक संहिता वाला भारत का एकमात्र राज्य है। भारत की आज़ादी के बाद, हिंदू कोड बिल पेश किया गया जिसने बौद्ध, हिन्दू, जैन और सिख जैसे भारतीय धर्मो के विभिन्न संप्रदायों में बड़े पैमाने पर व्यक्तिगत कानूनों को संहिताबद्ध किया व उनमें सुधार भी किया, लेकिन इसने ईसाइयों, यहूदियों, मुसलमानों और पारसियों को छूट दी, जिन्हें हिंदुओं से अलग समुदायों के रूप में पहचाना गया।

प्रक्रिया की शुरूआत 1882 के हैस्टिंग्स योजना से हुई और अंत शरिअत कानून के लागू होने से हुआ। हालांकि समान नागरिकता कानून उस वक्त कमजोर पड़ने लगा, जब तथाकथित सेक्यूलरों ने मुस्लिम तलाक और विवाह कानून को लागू कर दिया।

विश्व के अधिकतर आधुनिक देशों में ऐसे कानून लागू हैं। जैसे कि अमेरिका, आयरलैंड, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मलेशिया, तुर्की, इंडोनेशिया, सूडान, इजिप्ट, जैसे कई देश हैं जिन्होंने समान नागरिक संहिता लागू किया है।

भारत में समान नागरिक संहिता लागू नहीं है, बल्कि भारत में अधिकतर निजी कानून धर्म के आधार पर तय किए गए हैं। हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध के लिए एक व्यक्तिगत कानून है। जबकि मुसलमानों और इसाइयों के लिए अपने कानून है। मुसलमानों का कानून शरीअत पर आधारित है; अन्य धार्मिक समुदायों के कानून भारतीय संसद के संविधान पर आधारित हैं।

कावेरी सिंह
बी.ए. प्रथम वर्ष

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय भारत की पर्यावरणिक तथा वन संबंधी नीतियों और कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के नियोजन, संवर्धन, समन्वयन तथा निगरानी के लिए केन्द्रीय सरकार की प्रशासनिक संचरना में एक नोडल एजेंसी है। मंत्रालय का प्रमुख कार्य तालाबों, नदियों, जैव-विविधता, वनों तथा वन्यजीव सहित देश के प्राकृतिक संसाधनो के संरक्षण संबंधी नीतियों और कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना, पशुओं के कल्याण को सुनिश्चित करना तथा प्रदूषण का निवारण, अपशमन करना है।

मंत्रालय के प्रमुख उद्देश्य हैं-

1. प्रदूषण का निवारण तथा नियंत्रण।
2. पर्यावरण का संरक्षण।
3. पौधों और पशुओं के कल्याण को सुनिश्चित करना।

नेहा
बी.कॉम. - प्रथम वर्ष

भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में कितना आया बदलाव?

"धरती के इस छोर से उस छोर तक
मुट्ठी भर सवाल लिये मैं
छोड़ती-हाँफती-भागती
तलाश रही हूँ सदियों से निरन्तर
अपनी ज़मीन, अपना घर
अपने होने का अर्थ!"

भारतीय समाज की नारी की स्थिति को बखूबी बंया करती निर्मल पुतुल की ये पंक्तियाँ पूरे समाज की व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह खड़ा करती हैं। भले ही आज हम यह कह कर अपनी पीठ थपथपा लें कि **आजादी** के **75 सालों** में हमारी महिलाएं चाँद पर पहुँच गई हैं, फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं या राष्ट्रपति बनकर देश की बागडोर संभाल रही है, लेकिन व्यावहारिक तौर पर देखें तो यह संख्या महिलाओं की आबादी का अंशमात्र ही है। इसीलिए यह जानना बेहद जरूरी है कि तेजी से विकास के पथ पर अग्रसर भारत में शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व आर्थिक स्तर पर महिलाओं ने अब तक कितनी दूरी तय की है।

कितनी बढ़ी महिलाओं की साक्षरता दर?

भारत में आज भी बहुत सी लड़कियाँ ऐसी हैं, जो शिक्षा अधिकार से वंचित हैं। आँकड़ों पर नजर डाले तो, **साल 1951** में भारत की साक्षरता दर केवल **18.3** फीसदी थी जिसमें से **महिलाओं** की साक्षरता दर **9** फीसदी से भी कम थी। वहीं **राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय** (NSO) के डाटा के अनुसार **साल 2021** में देश की औसत साक्षरता दर **77.70** प्रतिशत भी जिसमें **पुरूषों** की साक्षरता दर **70.30** प्रतिशत थी। इसीलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि आजादी के बाद से अब तक महिलाओं की साक्षरता दर में वृद्धि हुई हैं, लेकिन अभी भी स्थिति संतोषजनक नहीं है। निम्नलिखित पंक्तियाँ देश की बेटियों को एक बार फिर से उठ खड़े होने का जज्बा प्रदान करती हैं।

"आओ उड़ान भरे
पंख भी हैं, खुला आकाश भी है
फिर ये न उड़ पाने की मजबूरी कैसी?
लगता है आत्मा पर जंग लगे संस्कारों की
कील ठोंक दी गई है।
कि पंख बस
यूं ही फड़फड़ाएं और रह जाएं"

आर्थिक रूप से कितनी सक्षम हैं भारतीय महिलाएँ-

आज भी महिलाओं की अधिकांश समस्याओं का कारण आर्थिक रूप से परनिर्भरता है। यह बेहद चिंता जनक है कि देश की कुल आबादी में **48 फीसदी महिलाएँ** हैं जिसमें से मात्र एक तिहाई महिलाएँ रोजगार में सलंग्न हैं। इसी वजह से भारत की **जीडीपी** में महिलाओं का योगदान केवल **18 फीसदी** है। सभी महिलाओं को इन चार पँक्तियों को ज़रूर आत्मसात करना चाहिये।

"न रहो कभी किसी की आश्रिता,
खुद बनकर स्वावलंबी बनो हर्षिता।
हमें खुद अपना संबल बनना है
हमें परजीवी लता नहीं बनना है॥"

निष्कर्ष-

हम कह सकते हैं कि आज़ादी के बाद से अब तक भारत में महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में एक लंबा रास्ता तय किया है, परंतु अभी भी मंजिलों से मीलों दूर हैं। हालाँकि हमारे सविंधान में स्त्री और पुरूष को समान अधिकार दिए गए हैं लेकिन यहाँ का समाज अपने नियमों के अनुसार, महिलाओं को संचालित करता है, जिसमें बदलाव की सख्त ज़रूरत है।

बेहतरीन कवयित्री **अनामिका** ने स्त्रियों को गहराई से समझने की गुज़ारिश करते हुए लिखा है।

"सुनो हमें अनहद की तरह
और समझो जैसे समझी जाती है
नई-नई सीखी हुई भाषा।"

चारू शर्मा
बी.ए. - तृतीय वर्ष

भारतीय सेना

भारतीय सशस्त्र सेना मुख्य रूप से भारतीय थल सेना, वायु सेना और नौसेना के संयुक्त गठन से बनती है। विश्व की विशालतम सेनाओं में से एक हमारी भारतीय सशस्त्र सेना है। देश की सीमाओं की सुरक्षा सरकार ने देश के सैनिकों के हाथों में सौंपी है और इस जिम्मेदारी को हमारी सेनाओं द्वारा बखूबी निभाया जा रहा है। भारतीय सेनाओं की सर्वोच्च कमान हमारे देश के राष्ट्रपति के हाथों में होती है। सेनाओं का निर्वहन देश की रक्षा-मंत्रालय द्वारा की जाती है, जो देश की रक्षा के दायित्व और सेनाओं के निर्वहन की रूपेरखा तैयार करती है। भारतीय सेना देश की सीमाओं को सुरक्षित करके देश के भीतर शांति और सुरक्षा बनाये रखती है। भारतीय सशस्त्र सेना का एक बड़ा भाग हमारी थल सेना के रूप में हमारे भारतीय सीमाओं की रक्षा करता है। वहीं वायु सेना हमारे आकाशीय सीमाओं को, तो जल सेना हमारे समुद्री सीमाओं की रक्षा में हमेशा तत्पर रहते हैं। युद्ध या प्राकृतिक आपदाओं के समय जरूरत आने पर ये तीनों सेनाएं एक साथ मिलकर देश की सेवा करते हैं।

भारतीय सेना का इतिहास

भारतीय सेना की परंपरा और इसका इतिहास बहुत लम्बा है। ऐसा माना जाता है कि भारतीय सेनाओं का नियोजन चौथी शताब्दी में ही हो गया था, पर उस समय यह केवल थल सेना के रूप में हुआ करती थी। थल सेना में मुख्य रूप से पैदल सेना, घोड़े और हाथी के सेवाएं शामिल हुआ करती थीं। पुर्तगालियों के भारत आने के बाद भारतीय नौसेना का निर्माण किया गया, क्योंकि पुर्तगाली समुद्र के रास्ते भारत में आये थे। भारतीय वायुसेना का गठन 1913 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हुआ था। उत्तर प्रदेश में एक उड्डयन सैनिक स्कूल के साथ इस की शुरूआत की गई थी। आज के दिनों में हमारी भारतीय सशस्त्र सेना दुनिया की सबसे ताकतवर सेनाओं में से एक है। हर सेना का अपना एक प्रमुख होता है। तीनों सेनाओं के सेना प्रमुख ही युद्ध नीति तैयार करते हैं और अपनी सेनाओं का संचालन करते हैं। कोई भी नागरिक अपनी इच्छा से सेना द्वारा कुछ मानदंडो को पार कर सेना में शामिल हो सकते हैं। इनका नेतृत्व एक प्रशिक्षित अधिकारी द्वारा किया जाता है और सारे पड़ाव पार कर वह एक सैनिक के रूप में सेना में शामिल हो जाता है।

भारतीय थल सेना

भारतीय सशस्त्र सेना का सबसे ज्यादा हिस्सा या सेना की ताकत थल सेना के रूप में है, इसलिए सशस्त्र सेना को अधिकतर थल सेना के रूप में ही समझा जाता है। ऐसा समझा जाना ठीक है क्योंकि सेना का सबसे बड़ा हिस्सा थल सेना के रूप में देश की रक्षा करता है। लगभग 14 लाख सैनिकों के साथ यह दुनिया के विशालतम सेनाओं में से एक है। सन् 1948 में केवल 2 लाख सैनिकों की ही फौज थी। दिल्ली में थल सेना का मुख्यालय स्थित है। थल सेना के प्रशासनिक कार्य और नियंत्रण थल सेना अध्यक्ष के हाथों में होता है।

सेनाध्यक्ष की सहायता के लिए सेना के वाइस चीफ और चीफ स्टाफ अफसर होते हैं। देश के विभिन्न 7 जगहों से सेना को कमान किया जाता है, जो निम्वत है।

पूर्वी कमान (मुख्यालय - कोलकाता)
मध्य कमान (मुख्यालय - लखनऊ)
उत्तरी कमान (मुख्यालय - उधमपुर)
दक्षिणी कमान (मुख्यालय - पुणे)
दक्षिणी - पश्चिमी कमान (मुख्यालय - जयपुर)
पश्चिमी कमान (मुख्यालय चंडीगढ़)
प्रशिक्षण कमान (मुख्यालय शिमला)

थल सेना का संगठन

एक श्रेणीबद्ध तरीके से सेना के कमांडरो द्वारा सेना का आयोजन/निर्माण किया जाता है।

कोर/दल -

कोर 3-4 भागों मे बटा होता है। इसके प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल होते हैं जिनको तीन सितारो की उपाधि प्राप्त रहती है। एक कमांडर के अंदर 2 या अधिक कोर शामिल होते हैं।

विभाग

सेना में कुल 37 विभाग/मंडल हैं, सभी विभाग के 3-4 ब्रिगेड होते हैं। दो सितारा सेना रैंक वाला मेजर जनरल इस दल का प्रमुख होता है। इसे 4 रैपिड एक्शन विभाग, 18 इन्फेंट्री विभाग और 10 माउंटेन विभाग, 3 आर्मर्ड व 2 आर्टिलरी विभाग में बाँटा गया है।

ब्रिगेड -

यह मुख्य रूप से सैनिकों के सहायता और उन्हें जरूरी चीजे पहुँचाने के लिए बनाया गया है। एक सितारा सैन्य रैंक वाला ब्रिगेडियर इसका प्रमुख होता है।

बटालियन-

वास्तविक रूप से लड़ाई वाली यह पैदल सेना होती है। सेना के कर्नल द्वारा इसका नेतृत्व किया जाता है। तीन पलटन को मिलाकर एक बटालियन बनाया जाता है।

कंपनी -

एक कंपनी में 120 सैनिक होते हैं। दो या दो से अधिक पलटन मिलकर एक कम्पनी बनाते हैं और इसकी अध्यक्षता मेजर करता है।

पलटन –

किसी पलटन, का नेतृत्व एक लेफ्टिनेंट करता है और इसमें 32 सैनिक शामिल होते हैं।

प्रखंड/भाग

यह सेना की सबसे छोटी इकाई के रूप में जानी जाती है, इसमें लगभग 10–12 सैनिक ही होते हैं। एक गैर सरकारी अधिकारी जिसे हवलदार कहते हैं वह इसका नेतृत्व करता है।

भारतीय थल सेना का महत्व

थल सेना भारतीय सशस्त्र सेना सबसे ज्यादा सक्रिय शाखाओं में से एक है। थल सेना देश के नागरिकों के लिए सुरक्षा प्रदान करती है। अपनी जान, अपने परिवार की फिक्र किये बिना दिन–रात वो हमारी सेवा और सुरक्षा में लगे रहते हैं। आतंकी गतिविधियों, युद्धों, विदेशी हमलों से वो देश और देश के नागरिकों की रक्षा में हर वक्त लगे रहते हैं। प्राकृतिक रूप से देश के अंदर आई आपदाओं में भी वो हमारी हर संभव मदद करते हैं। बाढ़, भूकंप, चक्रवात आदि जैसी आपदाओं से वो हमारी रक्षा करते हैं।

भारतीय नौसेना–

17 वीं शताब्दी में भारतीय नौसेना की स्थापना की गई थी। उस समय ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'ईस्ट इंडिया कंपनी नौसेना' की स्थापना एक समुद्रीय सेना के तौर पर की थी। आगे चलकर 1934 में रायल इंडियन नेवी की स्थापना की गई थी। इसका मुख्यालय नई दिल्ली में है और एडमिरल इस सेना का नियंत्रण करते हैं। नीचे दिए तीन क्षेत्रों में कमांड़ो के तहत नौसेना की तैनाती की गई है, प्रत्येक की पहचान एक नियंत्रण फ्लैग द्वारा की जाती है।

पश्चिमी नौसेना कमांडर (मुंबई, अरब सागर)

दक्षिणी नौसना कमांडर (कोच्चि, अरब सागर)

पूर्वी नौसेना कमांडर(बंगाल की खाड़ी विशाखापट्टनम)

भारतीय वायु सेना–

8 अक्टूबर सन् 1932 को भारतीय वायु सेना की स्थापना की गई थी। 1 अप्रैल 1954 में सुब्रतो मुखर्जी को एक मार्शल चीफ नियुक्त किया गया था। एक संस्थापक सदस्य के रूप में सुब्रतो मुखर्जी ने प्रथम वायु सेना प्रमुख के रूप में कार्यभार को संभाला। समय के साथ ही भारत ने अपने ही देशों में जहाजों और उपकरणों का निर्माण किया और इस प्रकार 20 नए जहाजों के बेड़े को वायु सेना में शामिल किया। 20 वीं शताब्दी के अंत तक वायुसेना में महिलाओं की भर्तीपर जोर दिया गया। इन दिनों कई नई तकनीकी हथियारों और राफेल जैसी तेज एयरक्राफ्ट के साथ भारतीय वायु सेना काफी मजबूत दिखाई देती है।

निष्कर्ष

भारतीय सेना हमारी रक्षा और देश में शांति बनाये रखने के लिए लगातार काम कर रही है। हमें अपने परिवार के साथ की खुशियां देकर वो अपने खुद के परिवार से काफी दूर रहते हैं। राष्ट्र की सीमाओं की रक्षा और देश के प्रति उनका बलिदान वास्तव में हमारे लिए बहुत ही गर्व और सम्मान की बात है। किसी भी समय किसी भी लड़ाई के लिए हमारे सैनिक हमेशा तैयार रहते हैं। अपने जीवन को मातृभूमि की रक्षा में न्योछावर कर देना किसी भी सैनिक और उसके परिवार के लिए गर्व की बात होती है। हमारे तीनों, सेनाओं द्वारा देश की रक्षा और हमें चैन की नींद देना उनके लिए बस एक कर्तव्य है। ऐसी भारतीय सेना को मेरा शत–शत धन्यवाद।

"जय हिंद, जय भारत।"

अंशिका

बी.ए. – प्रथम वर्ष

वक्त सबका बदलता है

बाहर बारिश हो रही थी और अन्दर क्लास चल रही थी। तभी टीचर ने बच्चों से पूछा अगर तुम सभी को 100–100 रूपये का नोट दिया जाये तो तुम सब क्या खरीदोगे? तो किसी ने कहा मैं वीडियो गेम खरीदूँगा, किसी ने कहा मैं क्रिकेट बैट खरीदूँगा। एक बच्चा कुछ सोच में डूबा हुआ था तभी टीचर ने उससे पूछा तुम क्या सोच रहे हो? तुम क्या खरीदोगे? बच्चा बोला, टीचर मेरी माँ को कम दिखाई देता है तो मै अपनी माँ के लिए एक चश्मा खरीदूगाँ। टीचर ने कहा तुम्हारी माँ के लिए चश्मा तो तुम्हारे पापा भी खरीद सकते हैं। तुम्हे अपने लिए कुछ लेना चाहिए, बच्चे ने जो जवाब दिया उससे टीचर का गला भर आया। बच्चे ने कहा मेरे पापा अब इस दुनियां में नहीं हैं मेरी माँ लोगों के कपड़े सिल कर मुझे पढ़ाती हैं। कम दिखाई देने की वजह से वो कपड़े सही नहीं सिल पाती, इसलिए मैं अपनी माँ के लिए चश्मा खरीदना चाहता हूँ ताकि मैं अच्छे से पढ़ सकूं और बड़ा आदमी बन सकूं और माँ को सारी सुख सुविधा दे सकूँ। टीचर ने कहा– बेटा तेरी सोच ही तेरी कमाई है यह 100 रूपये मेरे वादे के अनुसार और ये 100 रूपये और उधार दे रहा हूँ। जब कभी कमाओ तो लौटा देना और मेरी इच्छा है कि तू इतना बड़ा आदमी बने कि तेरे सर पर हाथ फेरते वक्त मै धन्य हो जाऊँ। 20 वर्ष के बाद स्कूल के बाहर बारिश हो रही थी, अचानक गेट के सामने जिला कलेक्टर की बत्ती वाली गाड़ी आकर रूकती है। स्कूल स्टाफ चौकन्ना सा रह गया। स्कूल में सन्नाटा सा छा गया। मगर यह क्या

एक जिला कलेक्टर एक वृद्ध टीचर के पैरों में गिर पड़ा और कहने लगा, सर मैं उधार के पैसे लौटाने आया हूँ। पूरा स्कूल स्टाफ दंग रह गया। झुके हुए वृद्ध टीचर ने अपने कदमों में झुके हुए नौजवान कलेक्टर को उठाकर बाजुओं में कस लिया और रो पड़े।

दोस्तो मशहूर होने पर मगरूर मत होना। साधारण रहना कमजोर मत बनना। वक्त बदलते देर नहीं लगती। शहशांह को फकीर और फकीर को शहशांह बनते देर नहीं लगती।

रेखा

बी.ए. – तृतीय

पर्यावरण

पर्यावरण में वह सभी प्राकृतिक संसाधन शामिल हैं जो कई तरीकों से हमारी मदद करते हैं तथा चारों ओर से हमें घेरे हुए हैं। यह हमें बढ़ने, विकसित होने का बेहतर माध्यम देता है, यह हमें वह सब कुछ प्रदान करता है जो इस ग्रह पर जीवन यापन करने हेतु आवश्यक है। हमारा पर्यावरण भी हमसे कुछ मदद की अपेक्षा रखता है जिससे की हमारा लालन पालन हो, हमारा जीवन बना रहे और कभी नष्ट न हो। तकनीकी आपदा के वजह से दिन प्रति–दिन हम प्राकृतिक तत्व को अस्वीकार रहे हैं। पृथ्वी पर जीवन रखने के लिए हमें पर्यावरण की वास्तविकता को बनाए रखना होगा। पूरे ब्रह्माण्ड में बस पृथ्वी पर ही जीवन है। वर्षो से प्रत्येक वर्ष 05 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' के रूप में ही पर्यावरण स्वच्छता और सुरक्षा के लिए यह दिन दुनिया भर में मनाया जाता है। हमें अपशिष्ट पदार्थ को वहीं फेंकना चाहिए जहाँ उनका स्थान है। प्लास्टिक बैंग का उपयोग नहीं करना चाहिए। जिन्हें दुबारा चार्ज किया जा सकता है, उन बैटरी या अक्षय क्षारीय बैटरी का उपयोग करना चाहिए। बारिश के पानी को संरक्षित करके रखना चाहिए। पानी का अपव्यय कम कर हम पर्यावरण के वास्तविकता को बनाए रखने की मुहिम की ओर एक कदम बढ़ा सकते हैं। समय आ चुका है कि हम प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय बन्द करें और उनका विवेकपूर्ण तरह से उपयोग करें।

"पर्यावरण रक्षा कर पाओ जीवन का अमरदान
पर्यावरण है हमें प्रकृति द्वारा दिया गया वरदान"

सुधा सोलंकी

बी.ए. – तृतीय वर्ष

ज्ञान से ही विज्ञान की राह

एक बार कुछ शिष्यों ने अपनी जिज्ञासा रखी। उनका कहना था कि विज्ञान और आध्यात्मिक ज्ञान में क्या संबंध है। तो विज्ञान एक तर्कसंगत अभिव्यक्ति है और अध्यात्म स्वयं को जानने का मार्ग है। प्रत्येक अवस्था में कारण और प्रभाव उपस्थित रहता है। जब हम कोई भी काम विवेक के अनुसार तर्क के आधार पर करते हैं, उसी समय हम कारण और प्रभाव की ओर भी आकर्षित होते हैं। तब वह विज्ञान कहलाता है। इस दुनिया में कुछ भी चीज अकारण नहीं होती है।

हम देखकर पता लगा सकते हैं कि कारण क्या है। जैसे हम चीनी देखते हैं। यहाँ चीनी का कारण तत्व क्या है। चीनी का कारण तत्व गन्ना है। जब गन्ना प्रभाव तत्व है तो बीज कारण तत्व है इस लिए जीवन के हर एक क्षेत्र में कारण तत्व है।

कई सौ साल पहले एक महान दार्शनिक महार्षि कणाद ने कहा था, **कारणाभावात् कार्याभावः** जहाँ कारण तत्व नहीं है वहाँ तत्व नहीं हो सकता है। आध्यात्मिक साधन का अभ्यास भी विज्ञान के दायरे में आता है। भगवान सदाशिव ने आध्यात्मिक विज्ञान की खोज की थी। सभी प्राणियों में कमोबेश ज्ञान होता है पर अतंर्ज्ञान का अभाव होता है। मनुष्य में दोनो हैं। मनुष्य प्रकृति का एक जीव है उसके मस्तिष्क के कुछ भागो में चेतन और कुछ भागों में अचेतन अवस्था है। वहीं पर सारी क्षमताएँ है। एक बार माता पार्वती ने भगवान सदाशिव से प्रश्न पूछा की कोई कैसे जान सकता है या अनुभव कर सकता है कि भक्ति एक मात्र पथ है। यहाँ सदाशिव कहते हैं, न तो छाया और न ही प्रतिछाया की ओर देखने से वास्तविक चीज का उचित ज्ञान हो सकता है। जैसे एक अमरूद और लीची का पेड़ है दोनों पेड़ों की छाया और प्रतिछाया देखने से पता नहीं चलता है कि कौन सा अमरूद का पेड़ है या लीची का। यही भगवान सदाशिव का उत्तर था। जिन्होनें आध्यात्मिक विज्ञान का अविष्कार किया था।

प्रिया कुमारी

बी.ए. – तृतीय वर्ष

योग

रोजाना योग करने से सिर्फ शरीर नहीं, मस्तिष्क और आत्मा को भी मिलते हैं कई फायदे। नियमित रूप से योग करने से सेहत एकदम स्वस्थ रहती है। योग सेहत के साथ ही मस्तिष्क और आत्मा के लिए भी बहुत जरूरी होती है।

जानें योग करने के फायदे–

योग नई अवधारणा नहीं है, यह प्राचीन काल से ही प्रचलित है। लेकिन देश में कोरोना वायरस ने जब से दस्तक दी है, योग का काफी महत्व बढ़ गया है। योग न सिर्फ शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है, बल्कि यह मन और आत्मा को भी शांत, संतुष्ट करता हैं। योग एक दर्शन है जो आध्यात्मिक, शारीरिक और मानसिक प्रथाओं का एक समूह है।

योग –

योग को जीवन शैली में शामिल करने का अर्थ है स्वस्थ और अनुशासित जीवन। आमतौर पर योग में 8 चरण होते हैं, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार धारणा, ध्यान और समाधि।

ये 8 चरण पूर्ण समायोजन देते हैं और शरीर और आत्मा के बीच सांमजस्य बनाए रखते हैं। योग की सुंदरता ऐसी है कि कोई भी इसे अपने जीवन में कभी भी उपयोग कर सकता हैं और इसका लाभ उठा सकता है। इसे सभी उम्र के लोग आसानी से कर सकते हैं। किसी भी उम्र में योग की शुरूआत हो सकती है, लेकिन अगर पहले से ही योग किया जाए तो आप हमेशा स्वस्थ रह सकते हैं।

योग के फायदे–

योग हमारे शरीर, मन और आत्मा के बीच सेतु का काम करता है और उन्हें बेहतर जीवन जीने के लिए जोड़ता है। आज के परिदृश्य में योग बहुत महत्वपूर्ण है। दुनिया महंगी दवाओं पर खर्च कर रही है, लेकिन योग करने वालो को बीमारियों से निजात मिल जाती है। योग के लिए किसी विशेष व्यवस्था की नहीं, बल्कि शांतिपूर्ण वातावरण की आवश्यकता होती है।

अल्जाइमर और डिमेशिया–

जैसी बीमारियों से छुटकारा पाने के लिए योग काफी फायदेमंद होता है। चिंता, अवसाद और तनाव को कम करने के लिए आप योग का सहारा ले सकते हैं। इसके लिए योग एक वरदान हैं। नकारात्मक विचारों को दूर करने ओर साकारात्मक विचारों के जगाने के लिए योग लाभकारी है। योग महिलाओं को गर्भ धारण में मद्द करता है।

यह तनाव को दूर करने का काम करता है और हार्मोन्स को आराम देने में मदद करता है। माइग्रेन, रीढ़ की हड्डी मे दर्द जैसी बीमारियों को दूर करने में भी लाभकारी है। अनिद्रा की समस्या में मदद के लिए सर्वोतम है।

योग करने में शरीर की फ्लेक्सिविलिटी बढ़ती है। स्वस्थ रहने के लिए फ्लेक्सिबल होना बहुत जरूरी है। योग करने से हड्डियाँ और मांसपेशियाँ मजबूत बनती हैं, जिससे चोट लगने का खतरा कम रहता है। निय॑मित रूप से योग करने से दिमाग शांत होता है और मन को भी संतुष्टि मिलती है। योग आत्मा को संतुष्ट और शांत रखने में मदद करता हैं।

योग करने का सही समय–

योग आपको अपने अतंरात्मा से मिलता है। इसका अभ्यास करने का कोई समय नहीं है, लेकिन जितना जल्दी योग को शामिल किया जाएगा उतनी ही जल्दी परिणाम मिलता है। योग को सुबह के समय खाली पेट करना जायदा फायदेमंद होता है लेकिन अगर आपको सुबह योग करने का समय नहीं मिल पाता तो शाम को भी कर सकते हैं। योग आपके मन और दिमाग को शांत करता है।

आसन की परिभाषा–

चित को स्थिर रखने वाले तथा सुख देने वाले बैठने के प्रकार को आसन कहते है।

योगासनों का मुख्य उद्देश्य–

आसनो का मुख्य उद्देश्य शरीर के मल का नाश करना है। शरीर से मल या दूषित विकारों के नष्ट हो जाने से शरीर व मन में स्थिरता का अविर्भाव होता है। आसन एक वैज्ञानिक पद्धति है। ये हमारे शरीर को स्वच्छ, शुद्ध व सक्रिय रखकर मनुष्य को शारीरिक व मानसिक रूप से सदा स्वस्थ बनाए रखता है। केवल आसन ही एक ऐसा व्यायाम है जो हमारे अंदर के शरीर पर प्रभाव डाल सकता है।

आसनों के प्रकार

1. बैठकर किए जाने वाले आसन। 2. पीठ के बल लेटकर किए जाने वाले आसन। 3. पेट के बल। 4. खड़े होकर **1 बैठकर पद्मासन:** वज्रासन, सिद्धासन, सत्यासन, वक्रासन अर्हा–मत्स्येन्द्रासन, गोमुखासन, पश्चिमोत्तासन ब्राह्म मुद्र, उष्ट्रासन आदि **2. पीठ के बल लेटकर:** अर्धहलासन, हलासन, सर्वांगासन, पवनमुक्तासन, शवासन **3. पेठ के बल लेटकर :** मकरासन, धनुरासन, भुजंगासन, शलभासन विपरीत नौकासन आदि। **4. खड़े होकर:** ताडासन, वृक्षासन दोभुजकटिचक्रासन अर्धचन्द्रासन, चक्रासन, पादहस्तासन आदि। **5. अन्य:** शीर्षासन, मयूरासन, सूर्य नमस्कार आदि।

सपना

बी.ए. – प्रथम वर्ष

घास का तिनका

रावण जब माँ सीता जी का हरण करके लंका ले गया तब लंका में सीता जी वट वृक्ष के नीचे बैठ कर चिंतन करने लगी। रावण बार–बार आकर माँ सीता जी को धमकाता था, लेकिन माँ सीता जी कुछ नहीं बोलती थी, यहाँ तक रावण ने श्री राम जी के वेश भूषा में आकर माँ सीता जी को भ्रमित करने की भी कोशिश की, लेकिन फिर भी सफल नहीं हुआ। रावण थक हार कर जब अपने शयन कक्ष में गया तो मंदोदरी ने उससे कहा, आप तो राम का वेश धर कर गये थे फिर क्या हुआ ? रावण बोला–जब मैं राम का रूप लेकर सीता के समक्ष गया तो सीता मुझे नजर ही नहीं आ रही थी। रावण अपनी समस्त ताकत लगा चुका था। लेकिन जिस जगत जननी माँ को आज तक कोई नहीं समझ सका, उन्हें रावण भी कैसे समझ पाता ! रावण एक बार फिर आया और बोला मैं तुमसे सीधे–सीधे सवांद करता हूँ, लेकिन तुम कैसी नारी हो कि मेरे आते ही घास का तिनका उठाकर उसे ही घूर–घूर कर देखने लगती हो। क्या घास का तिनका तुम्हे राम से भी ज्यादा प्यारा है ? रावण के इस प्रश्न को सुनकर माँ सीता जी बिल्कुल चुप हो गयी और उनकी आँखों से आँसुओं की धार बह पड़ी। इसकी सबसे बड़ी वजह थी कि जब श्री राम जी का विवाह माँ सीता जी के साथ हुआ, तब सीता जी का बड़े आदर सत्कार के साथ गृह प्रवेश भी हुआ। बहुत उत्सव मनाया गया। प्रथानुसार नव वधू विवाह पश्चात जब ससुराल आती है तो उसके हाथ से कुछ मीठा पकवान बनवाया जाता है, ताकि जीवन भर घर में मिठास बनी रहे। इसलिए माँ सीता जी ने उस दिन अपने हाथों से घर पर खीर बनाई और समस्त परिवार, राजा दशरथ एवं तीनों रानियों सहित चारों भाई और ऋषि, संत भी भोजन पर आमंत्रित थे। माँ सीता ने सभी को खीर परोसना शुरू किया, और भोजन शुरू होने ही वाला था कि जोर से एक हवा का झोंका आया। सभी ने अपनी अपनी पत्तलें सम्भाली, सीता जी बड़े गौर से सब देख रही थी। ठीक उसी समय राजा दशरथ जी की खीर पर एक छोटा सा घास का तिनका गिर गया जिसे माँ सीता जी ने देख लिया, लेकिन अब खीर में हाथ कैसे डाले ये प्रश्न आ गया। माँ सीता जी ने दूर से ही उस तिनके को घूर कर देखा वो जल कर राख की एक छोटी सी बिंदु बनकर रह गया। सीता जी ने सोचा अच्छा हुआ किसी ने नहीं देखा, लेकिन राजा दशरथ माँ सीता जी के इस चमत्कार को देख रहे थे। फिर भी दशरथ जी चुप रहे और अपने कक्ष पहुँचकर माँ सीता जी को बुलवाया, फिर उन्होंने सीता जी से कहा कि मैने आज भोजन के समय आप के चमत्कार को देख लिया था। आप साक्षात जगत जननी स्वरूपा हैं लेकिन एक बात आप मेरी जरूर याद रखना। आपने जिस नज़र से आज उस तिनके को देखा था। उस नजर से आप अपने शत्रु को भी कभी मत देखना। इसलिए माँ सीता जी के सामने जब रावण आता था तो वो उसे घास के तिनके को उठाकर राजा दशरथ की बात याद कर लेती थी।

"तृण धर ओट कहत वैदेही
सुमिरि अवधपति परम् सनेही"

जानवी शर्मा
बी.ए.– द्वितीय वर्ष

कुछ खूबसूरत रिश्ते......

कुछ रिश्ते सबसे अपने होते हैं
ना मांगते है कुछ
ना अहसान जताते हैं
बस दुआओं से झोली भर जाते हैं..
कुछ रिश्ते बहुत खरे होते है
क्या दिया, क्या लिया
कोई नाप तोल नहीं
चाहे प्यार हो या नाराजगी
फिर भी हर हाल में निभाते हैं..
कुछ रिश्ते इतने खामोश होते हैं कि
शोर नहीं मचाते, अपने होने का, पर
जब भी दु:ख की घड़ी हो
बिन कहे दर्द बांट, जीने का हौंसला देते हैं....
कुछ रिश्ते इतना बड़प्पन लिए होते हैं,
चाहे कितना भी ऊँचा हो खुद का रूतबा,
सामने वाले को कभी
छोटा महसूस नहीं कराते हैं...
कुछ रिश्ते कहने को तो बड़े गैर से होते हैं,
पर अजनबीपन हम उसमे ढूंढ नहीं पाते है
वो अपनो से ज्यादा प्यार लुटाते है...
कुछ रिश्ते साथ में कहीं नजर नहीं आते है,
पर इतने रूहानी होते हैं
कि ताउम्र रूह में बरसते हैं,
सांसो को जीवन देते है..... कुछ रिश्ते.....

जया शर्मा
बी.कॉम. – तृतीय वर्ष

भारत की प्रसिद्ध महिला खिलाड़ी

भारत में हमेशा से ही पुरूष खिलाड़ियों की चर्चा होती है। खासकर जब आप क्रिकेटर हो तो दुनिया की नज़रें बस सिर्फ आप पर ही होती हैं। फैंस भी क्रिकेटर के बारे में ही ज्यादा देखना और सुनना पसंद करते हैं, लेकिन आज बात देश की महिला खिलाड़ियों की होगी। ये वो महिला खिलाड़ी हैं जिनकी उपलब्धियों ने हमेशा ही देश को गौरवान्वित किया है।

1. एमसी मैरी कॉम–

भारत की स्टार बॉक्सर मैरी कॉम का वर्ल्ड बॉक्सिंग में नाम ही काफी है। वो 5 बार '**वर्ल्ड बॉक्सिंग चैपियन**' रह चुकी हैं। **2012** में '**लंदन ओलंपिक**' में मैरी कॉम ने देश के लिए '**ब्रॉन्ज मेडल**' जीता था। वो साल **2014** के '**एशियन गेम्स**' में '**गोल्ड मेडल**' जीतने वाली पहली भारतीय महिला मुक्केबाज हैं। इंटरनेशनल लेवल पर जो सफलता मैरी कॉम को मिली है वो आज तक किसी दूसरी भारतीय महिला खिलाड़ी को नहीं मिल सकी है।

2. पीटी उषा–

'**पेथोली एक्सप्रेस**' के नाम से मशहूर भारत की सबसे पावरफुल सफल ट्रैक एंड फील्ड एथलीट पीटी उषा का नाम भारतीय खेल जगत की बड़ी हस्तियों में शुमार है। पीटी उषा ने '**ऐशियन गेम्स**' और '**ऐशियन चैपियनशिप**' में **13** गोल्ड मेडल सहित कुल **33** इंटरनेश्नल मेडल जीते हैं।

3. सानिया मिर्जा–

भारत को वर्ल्ड टेनिस जगत में पहचान दिलाने का श्रेय सानिया मिर्जा को जाता है। सानिया वर्तमान वर्ल्ड टेनिस डबल्स में नबर 1 रैकिंग पर हैं। सानिया साल **2015** में मार्टिना हिंगिस के साथ मिलकर '**विंबलडन वीमेन डबल्स ग्रैंड स्लैम**' खिताब जीतने वाली पहली भारतीय टेनिस खिलाड़ी हैं। आज यूथ आइकन बन चुकी सानिया देश की हाईएस्ट पेड एथलीट में से एक हैं।

4. मिताली राज–

मिताली राज न केवल भारत की, बल्कि दुनिया की सबसे सफल महिला क्रिकेटर हैं। वनडे क्रिकेट में सबसे अधिक रन बनाने का रिकॉर्ड मिताली के नाम ही है। महिला वर्ल्ड क्रिकेट की '**तेंदुलकर**' के नाम से मशहूर मिताली करीब 22 सालों से अतंर्राष्ट्रीय क्रिकेट खेल रही हैं। इतने लंबे समय तक खेलने का रिकॉर्ड भी उन्हीं के नाम है।

5. साइना नेहवाल–

साइना नेहवाल भारत की पहली और एकमात्र महिला बैडमिटन खिलाड़ी हैं जो बैडमिटन वर्ल्ड रैंकिंग में टॉप पर रही हैं। साइना ओलंपिक में देश के लिए 'सिल्वर मेडल' हासिल करने वाली पहली बैडमिटन खिलाड़ी हैं, जिस ने 'ओलंपिक मेडल' और BWF 'वर्ल्ड जूनियर चैपियनशिप' जीती है। इसके अलावा वो 4 स्टार टूर्नामेंट जीतने वाली पहली भारतीय महिला और सबसे कम उम्र की एशियाई भी हैं।

6. गीता फोगाट–

गीता फोगाट '**कॉमनवेल्थ गेम्स**' में देश को 'गोल्ड मेडल' जिताने वाली पहली महिला रेसलर हैं उन्होंने 2010 '**कॉमनवेल्थ गेम्स**' में गोल्ड मेडल जीता था। भारत में महिला रेसलिंग को असल पहचान दिलाने वाली गीता फॉगाट ही हैं। गीता की वजह से आज देश की लड़कियों ने रेसलिंग में करियर बनाना शुरू कर दिया है।

7. कर्णम मल्लेश्वरी–

भारतीय आयरन लेडी के नाम से मशहूर कर्णम मल्लेश्वरी, साल 2000 में '**सिडनी ओलंपिक**' के दौरान ओलंपिक पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला बनने का कारनामा कर दिखाया था। मल्लेश्वरी की इन्हीं उपलब्धियों के लिए उन्हें 1995–96 में '**राजीव गाँधी खेल रत्न पुरस्कार**' साल 1994 में '**अर्जुन पुरस्कार**' साल 1999 में '**पद्म श्री**' से सम्मानित किया गया था।

8. हिमा दास–

भारत की ट्रैक एंड फील्ड एथलीट हिमा दास छोटी सी उम्र में बड़े–बड़े कारनामें कर चुकी हैं। '**ढिंग**' के नाम से मशहूर 21 साल ही हिमा '**TAAF वर्ल्ड U20 चैपियनशिप**' के ट्रैक इवेंट में '**गोल्ड मैडल**' जीतने वाली पहली भारतीय एथलीट हैं। इसके अलावा उनके **50.79 सेकिंड** के समय के साथ **400 मीटर** का भारतीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी है, जो उन्होंने जकार्ता में 2018 के एशियन गेम्स में बनाया था।

9. रानी रामपाल–

भारतीय महिला हॉकी को एक नई पहचान दिलाने का श्रेय रानी रामपाल को जाता है। बेहद गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाली रानी आज भारतीय महिला **हॉकी टीम की कप्तान** भी हैं। रानी अपने जैसी उन **लड़कियों** के लिए **प्रेरणास्त्रोत** हैं जो गरीबी से लड़ रही हैं।

10. साक्षी मलिक–

साक्षी मलिक ओलंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला रेसलर और देश की **चौथी ओलंपिक पदक विजेता** हैं। साक्षी ने साल 2016 के '**रियो ओलंपिक**' में देश के लिए '**ब्रॉंज मेडल**' जीता था।

निर्जला

बी.ए.– प्रथम वर्ष

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के आर्थिक विचार

अर्थशास्त्र में किसी भी अर्थशास्त्री के आर्थिक विचारों को जानने से पहले 'अर्थशास्त्र' को जानना आवश्यक है। अर्थशास्त्र एक यर्थाथवादी विज्ञान होने के साथ–साथ एक आदर्शवादी विज्ञान भी है। क्योंकि यह आर्थिक सिद्धांतों के आधार पर आर्थिक घटनाओं के कारण एवं परिणामों का क्रमबद्ध अध्ययन करके मानव कल्याण में वृद्धि करने के विभिन्न उपायों का प्रस्तुतिकरण करता है।

"अर्थशास्त्र सामाजिक विज्ञान की वह शाखा है जिसके अन्तर्गत वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, विनिमय और उपभोग का अध्ययन किया जाता है।"

डॉ० भीमराव अम्बेडकर विदेश से डॉक्टर की डिग्री लेने वाले पहले भारतीय थे। उन्होंने तर्क दिया कि औद्योगीकरण और कृषि विकास से भारतीय अर्थव्यवस्था के तीव्र विकास में वृद्धि हो सकती है। उन्होंने भारत में प्राथमिक उद्योग के रूप में कृषि में निवेश पर बल दिया।

डॉ० भीमराव अम्बेडकर के दर्शन ने सरकार को अपने खाद्य सुरक्षा लक्ष्य हासिल करने में मदद की। उन्होंने राष्ट्रीय आर्थिक विकास की, वकालत की शिक्षा पर जोर दिया।

बाबा साहेब की आर्थिक समस्याओं के प्रति व्यवहारिक सोच थी। वे मानते थे कि भारत के पिछड़ेपन का मुख्य कारण भूमि व्यवस्था के बदलाव में देरी है, इसका समाधान लोकतान्त्रिक समाजवाद है। जिससे आर्थिक कार्य, क्षमता एवं उत्पाद में वृद्धि होगी तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था का कायापलट संभव होगा, आर्थिक समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी थी कि वे वैज्ञानिक समाजवाद की निन्दा करते थे।

डॉ० अम्बेडकर ने तर्क दिया कि असली चुनौती पूँजी का भंडार बढ़ाने में है और यह तब संभव होगा जब अर्थव्यवस्था में अधिक बचत होगी। उन्होंने तर्क दिया कि यह तब तक संभव नहीं है जब तक बड़ी संख्या में लोग अपनी आजीविका के लिए भूमि पर निर्भर है, इसलिए उन्होंने औद्योगीकरण को भारत में कृषि की समस्या का समाधान बताया।

उन्होंने कहा कि भारत का औद्योगीकरण भारत की कृषि समस्याओं का सबसे अच्छा उपाय है।

आँचल

बी.ए. – द्वितीय वर्ष

सब कुछ तुम्हारे हाथ में है!

एक आदमी रेगिस्तान से गुजरते वक्त बुदबुदा रहा था, कितनी बेकार जगह है ये, बिल्कुल भी हरियाली नहीं है, और हो भी कैसे सकती है, यहाँ तो पानी का नामो–निशान भी नहीं है।

तपती रेत में वो जैसे–जैसे आगे बढ़ रहा था, उसका गुस्सा भी बढ़ता जा रहा था। अंत में वो आसमान की तरफ देख झल्लाते हुए बोला–क्या भगवान, आप पानी क्यों नहीं देते ? अगर यहाँ पानी होता तो कोई भी यहाँ पेड़–पौधे उगा सकता था, और तब तो ये जगह भी कितनी खूबसूरत बन जाती। ऐसा बोल कर वह आसमान की तरफ ही देखता रहा मानो वो भगवान के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा हो। तभी एक चमत्कार होता है, नजर झुकाते ही उसे सामने एक कुआँ नजर आता है। वह उस इलाके में बरसों से आ–जा रहा था, पर आज तक उसे वहाँ कोई कुआँ नहीं दिखा था। वह आश्चर्य में पड़ गया और दौड़कर कुएँ के पास गया। कुआं लबालब पानी से भरा था। उसने एक बार फिर आसमान की तरफ देखा और पानी के लिए धन्यवाद करने की बजाय बोला पानी तो ठीक है लेकिन इसे निकालने के लिए कोई उपाय भी तो होना चाहिए। उसका ऐसा कहना था कि उसे कुएं के बगल में पड़ी रस्सी और बाल्टी दिख गई। एक बार फिर उसे अपनी आँखो पर यकीन नहीं हुआ। वह कुछ घबराहट के साथ आसमान की ओर देखकर बोला, 'लेकिन मैं ये पानी ढोऊंगा कैसे ? तभी उसे महसूस होता है कि कोई उसे पीछे से छू रहा है, पलट कर देखा तो एक ऊट उसके पीछे खड़ा था। अब वह आदमी एकदम घबरा जाता है, उसे लगता है कि कहीं वो रेगिस्तान में हरियाली लाने के काम में न फंस जाए और इस बार वो आसमान की तरफ देखे बिना तेज कदमों से आगे बढ़ने लगता है। अभी उसने दो–चार कदम ही बढ़ाया था कि उड़ता हुआ पेपर का एक टुकड़ा उससे आकर चिपक जाता है। उस टुकड़े पर लिखा होता है– मैंने तुम्हें पानी दिया, बाल्टी और रस्सी दी। पानी ढोने का साधन भी दिया, अब तुम्हारे पास वो हर एक चीज है जो तुम्हे रेगिस्तान को हरा–भरा बनाने के लिए चाहिए, अब सब कुछ तुम्हारे हाथ में है। आदमी एक क्षण के लिए ठहरा, पर अगले ही पल वह आगे बढ़ गया और रेगिस्तान कभी भी हरा–भरा नहीं बन पाया।

सीख– कई बार हम चीजों के अपने मन मुताबिक न होने पर अगले ही पल दूसरों को दोष देते हैं। कभी हम सरकार को दोषी ठहराते हैं कभी कम्पनी को तो कभी भगवान को। पर इस दोषारोपण के चक्कर में हम इस सच्चाई को अनदेखा कर देते हैं कि एक इंसान होने के नाते हम में वो शक्ति है कि हम अपने सभी सपनों को खुद साकार कर सकते हैं।

कनिका गोयल

बी.ए. – प्रथम वर्ष

शिक्षा का महत्व

मनुष्य की खासियत है कि वह ज्ञान की तलाश करता है और नए अनुभवों को प्राप्त करने की इच्छा रखता है। इसी ज्ञान के माध्यम से हम अपने प्राप्त ज्ञान को बढ़ाते हैं और समाज का विकास करते हैं।

शिक्षा का वास्तविक अर्थ ज्ञान प्राप्ति है। इसमें न केवल एकल व्यक्ति के लिए ज्ञानार्जन का आधार साधन है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और राष्ट्रीय स्तर पर विकास का माध्यम भी है। शिक्षा व्यापक रूप से मानव समाज के विकास और प्रगति का महत्वपूर्ण कारक है। जो मनुष्य के जीवन में ज्ञान, संज्ञान और बुद्धिमत्ता का विकास करती है।

शिक्षा व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में योग्यता, कौशल, और समरसता प्रदान करती है। इसके द्वारा व्यक्ति मनोवैज्ञानिक विकास, भावनात्मक समझ, समाजसेवा की भावना, व्यक्तिगत उत्थान और आर्थिक स्वावलंबन का मार्ग तय करता हैं। शिक्षा का आदान–प्रदान विभिन्न माध्यमों जैसे कि स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय और विभिन्न शैक्षिक संस्थानों आदि के माध्यम से हो सकता हैं।

शिक्षा मानव समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह न केवल ज्ञानार्जन का साधन है, बल्कि यह समाज में न्याय, समानता और विश्ववधुत्व की भावना का संचार करने का माध्यम भी हैं। शिक्षित लोग समाज में सक्रिय भूमिका निभाते हुए समाज में स्नेह, प्रेम व सदभाव की स्थापना करते है।

शिक्षा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है, उसे सही नीतियों, मूल्यों, और संस्कृति का ज्ञान प्रदान करती है। शिक्षा उन गुणों का विकास करती हैं, जो एक व्यक्ति को समाज में सफल बनाती हैं, जैसे कि बृद्धिमत्ता, सहजता, विचारशीलता, संघटनशीलता और संगठन क्षमता। शिक्षा के विभिन्न प्रकार है जैसे कि मौलिक शिक्षा, मानविकी शिक्षा, साहित्यिक शिक्षा, वैज्ञानिक शिक्षा, कला शिक्षा आदि। ये शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता और व्यापक ज्ञान का विकास करते हैं।

शिक्षा मानव विकास की मूलभूत आवश्यकता है। यह हमारे मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को संवारती और निखारती है। शिक्षा के माध्यम से हम नई विचारधारा और विचारों का विकास करते है,

शिक्षा हमें ज्ञान और समझ का आधार प्रदान करती है। यह हमारे विभिन्न व्यापक ज्ञान क्षेत्रों में सुधार करती हैं और हमारी सोच, विचारधारा और दृष्टिकोण को विस्तारित करती है। शिक्षा के माध्यम से हम विज्ञान, साहित्य, गणित, सामाजिक विज्ञान, भूगोल और इतिहास आदि के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त करते हैं।

शिक्षा हमारे व्यक्तिगत और सामाजिक उद्धार में सहायक होती है। शिक्षा द्वारा हमें नैतिक मूल्यों, समाज सेवा की भावना, सामाजिक न्याय और समरसता के महत्व को समझने में मदद मिलती हैं। शिक्षित लोग समाज की समस्याओं के समाधान में योगदान करते हैं, सामाजिक बदलाव को प्रोत्साहित करते है, और समाज के उद्धार में योगदान करते है। शिक्षा मानव जीवन के हर पहलू पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। इससे हमारी सोच और दृष्टिकोण परिवर्तित होते है, हमें वैचारिक स्वतंत्रता की भावना प्राप्त होती हैं, और हमें समाज में उच्चतम मान्यता की प्राप्ति होती है। इसलिए, समाज को शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए इसके महत्व को समझना चाहिए।

आरती चौधरी
बी.ए. – प्रथम वर्ष

क्या लिखूँ?

ना इश्क लिखूँ ना इबादत लिखूँ,
मैं वीर की शहादत लिखूँ।
ना धर्म लिखूँ ना जात लिखूँ,
मैं वतन की सौगात लिखूँ॥

ना जागरण लिखूँ ना दैनिक लिखूँ,
मैं मेरे देश का सैनिक लिखूँ।
ना अनशन लिखूँ ना जश्न लिखूँ
मैं तिरंगे का कफन लिखूँ॥

ना हिन्दू लिखूँ ना मुसलमान लिखूँ,
मैं देश का सम्मान लिखूँ।
ना राम लिखूँ ना अल्लाह लिखूँ,
मैं एकता का हो–हल्ला लिखूँ॥

ना जनम लिखूँ ना मरण लिखूँ,
मैं देश की शरण लिखूँ।
ना मैं लिखूँ ना तुम लिखूँ,
बस गर्व से हम लिखूँ॥

मुस्कान
बी.ए. – तृतीय वर्ष

मनुष्य कर्ता नहीं माध्यमर भर है

कुरूक्षेत्र में अपने समक्ष पितामह भीष्म, गुरू द्रोण, और दुर्योधन आदि समस्त बंधु–बांधवो को देखकर मोहग्रस्त हुए अर्जुन ने हाथ से गांडीव छोड़ दिया और कहा, 'हे कृष्ण! मैं इन लोगों से कैसे युद्ध कर सकता हूँ? शास्त्र कहते हैं कि जो व्यक्ति अपने कुल–धर्म का विनाश करता है, वह सदैव नरक में वास करता हैं। कुल का नाश होने पर सनातन कुल परम्परा नष्ट होती है। और इस तरह शेष धर्म भी अधर्म में प्रवृत हो जाती हैं।

माना कि ये लोग लोभ के वश में आ कर हमारा अधिकार छीन रहे हैं, पर हम तो लोभी नहीं हैं। हम इनका वध कैसे कर सकते हैं? मैं यह युद्ध नहीं कर सकता माधव! मैं पितामह भीष्म और गुरू द्रोण जैसे पूज्य व्यक्तियों पर बाण कैसे चलाऊंगा? भले दुर्योधन आदि मुझ निहत्थे को मार दें, पर में युद्ध नहीं करूंगा।'

कृष्ण मुस्कुराए। वे अर्जुन के मोह को समझ रहे थे, क्योंकि यह मोह केवल अर्जुन के हृदय में नहीं उपजा था। बल्कि यह मोह समस्त मानव जगत के हृदय में बसता हैं। कृष्ण ने कहा– 'हे अर्जुन! व्यक्ति को अपना कर्तव्य वर्तमान परिस्थितियों के आधार पर तय करना चाहिए। इस युद्धभूमि के बाहर तुम पाण्डुपुत्र अर्जुन हो, पर युद्धभूमि में तुम केवल और केवल एक सैनिक मात्र हो। यहाँ तुम्हारा एक ही कर्तव्य है– युद्ध! तुम्हारा युद्ध छोड़ना अपने कर्तव्य की अवहेलना है, जिससे बड़ा अधर्म संसार में कोई नहीं। महत्तवपूर्ण यह नहीं कि सामने कौन खड़ा है, महत्वपूर्ण बस यह हैं कि तुम योद्धा हो और तुम्हें अपना धर्म निभाना हैं। युद्धक्षेत्र में खड़ा व्यक्ति यदि सहिष्णु हो जाए तो वह अपने राष्ट्र, धर्म और संस्कृति तीनों के लिए घातक होता हैं।

अर्जुन ने कहा, 'हे केशव! यह कार्य मैं ही क्यों करूं? मेरा कर्तव्य इतना कठोर क्यों हैं कि वह मुझसे मेरे परिजनों का वध करना चाहता हैं?

श्रीकृष्ण बोले, 'हे अर्जुन! तुम इन्हें नहीं मारोगे तो क्या ये नहीं मरेंगे? पार्थ! मृत्यु जीवन का सबसे बड़ा सत्य हैं। जिस व्यक्ति का कार्य समाप्त हो चुका हो, उसे जाना ही पड़ता हैं। यही नियति है, ओर मोह के वशीभूत हो नियति का विरोध करना अर्धम होता हैं। मनुष्य कर्ता नहीं, माध्यम भर होता हैं। जिस तरह तुम्हारी उंगलियों का आदेश पा कर तुम्हारे बाण कार्य करते हैं, उसी तरह परमात्मा का आदेश पा कर तुम कार्य करते हो। इसलिए अपना धर्म निभाओं पार्थ, धर्म निभाओं।'

श्री कृष्ण कहते है, 'जिस व्यक्ति का कार्य समाप्त हो चुका हो, उसे जाना ही पड़ता है। मोह के वशीभूत हो नियति का विरोध करना अधर्म है।'

स्नेहा तिवारी
बी.ए. – प्रथम वर्ष

"निःशब्द"

वह छठी कक्षा में पढ़ती थी। 'माँ' कविता का भावार्थ समझाते हुए मैं माँ की महिमा का बखान करती जा रही थी। माँ की कविता माँ की ममता, माँ की जरूरत, माँ का प्यार, माँ की परवरिश और भी न जाने क्या–क्या बताती जा रही थी। तभी रचना और प्रिया, दोनों को बातें करते हुए देखकर मैं गुस्से से बोली, "खड़ी हो जाओ दोनों। क्या बातें चल रही हैं आपस में? मैं समझा रही हूँ और तुम दोनों का ध्यान ही नहीं है।" डरती–डरती प्रिया बोली, "मैम, रचना कुछ पूछ रही थी मुझसे। मैं नही बोल रही थी।"

"क्या पूछना है? मुझसे पूछो।" प्रसंग के बीच आए इस अवरोध से मेरा गुस्सा थमा नहीं था। पढ़ाई के बीच में अवरोध मुझे तनावग्रस्त कर जाता है, क्योंकि प्रवाह टूटने से पूरी कक्षा की एकाग्रता भंग हो जाती है। फिर छोटे बच्चों को पुनः उसी तारतम्य से जोड़ना मुश्किल होता है।

"जी मैम, पूछ रही थी कि माँ कैसी होती है?" "क्यों, तुम्हारी मम्मी कैसी हैं?" मैनें सख्ती से कहा। उसने सिर झुकाए हुए कहा, "मैम नहीं पता। मैनें माँ को नहीं देखा है, कैसी होती है माँ।" तभी कक्षा में शोर गूंजा।एक साथ सभी बच्चे बोल उठे, "जी मैम, इसकी मम्मी नहीं हैं।"

और मैं नि:शब्द एकदम जड़, अपराधबोध से ग्रस्त। एक पल के लिए रचना के प्रति मेरे मन में हजारों माँओं के ममत्व का सागर हिलोरे मारने लगा।

हिमांशी
बी.ए. – प्रथम वर्ष

पर्यावरणीय स्थिरता

पर्यावरणीय स्थिरता की अवधारणा 1987 में उभरी, जब पर्यावरण और विकास पर ब्रुन्डलैंड रिपोर्ट ने "सतत विकास" की अवधारणा बनाई। इसका मतलब है कि ऐसे कार्य जो "भविष्य की पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता किए बिना वर्तमान की पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करते है।"

मानव कल्याण का पर्यावरण के स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। "विश्व स्वास्थ्य संगठन" के अनुसार, दुनिया भर में 24% मौतों का कारण टाले जा सकने वाले पर्यावरणीय कारक हो सकते है। लोगों को सांस लेने के लिए स्वच्छ हवा, पीने के लिए ताजा पानी और रहने के लिए ऐसे स्थान चाहिए जो विषाक्त पदार्थो और खतरों से मुक्त हो। जैसे ही हम औद्योगिक विकास और ऊर्जा उपयोग के दीर्घकालिक परिणामों का अनुभव करना शुरू करते है, हमें इनके दुष्प्रभावों को उलटने और आगे की क्षति को रोकने के लिए कार्य करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि हमारे पास आने वाली पीढ़ियों के लिए रहने के लिए स्वच्छ परिवेश है। व्यवसायों के लिए, इसका अर्थ है सम्पन्न समुदायों को सुरक्षित करने में मदद करने के लिए पर्यावरणीय संरक्षण में सहायक टिकाऊ प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध होना।

पर्यावरणीय स्थिरता, अभी और भविष्य में स्वास्थ्य और कल्याण का समर्थन करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण व वैश्विक पारिस्थितिकी तन्त्र की रक्षा करने की जरूरत है। क्योंकि पर्यावरण पर प्रभाव डालने वाले बहुत से निर्णय तुरंत महसूस नहीं किए जाते है पर्यावरणीय स्थिरता का एक प्रमुख तत्व इसकी दूरदर्शी प्रकृति है। वास्तव में, "अमेरिकी पर्यावरण संरक्षण एजेंसी" इसे "भविष्य की पीढ़ियों की जरूरत को पूरा करने की क्षमता समझौता किए बिना आज की जरूरतों को पूरा करने" के रूप में परिभाषित करती है। पर्यावरणीय स्थिरता पारिस्थितिक सन्तुलन के बारे में हैं। लगभग दो सहस्त्राब्दियों से मनुष्य धरती को कार्बनीकृत कर रहे है, जिसने वैश्विक जलवायु परिवर्तन में योगदान दिया है। जलवायु परिवर्तन से सम्बन्धित विज्ञान का ऑकलन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र की संस्था, 'इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज' (आईपीसीसी) के अनुसार, यह निर्विवाद है कि मानव कार्यो ने धरती को प्रभावित किया है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल, महासागर और भूमि पर इसके व्यापक दुष्प्रभाव दृष्टिगोचर हो रहें हैं।

स्थिरता के तीन स्तंभ

स्थिरता का अर्थ भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान पीढ़ियों की जरूरतों को पूरा करना है। स्थिरता के तीन मुख्य स्तंभ है–

सामाजिक स्थिरता

व्यवसायों के लिए, सामाजिक स्थिरता में स्वास्थ्य और सुरक्षा, समावेशन, सशक्तिकरण, व्यावसायिक विकास के अवसर और कार्य–जीवन सन्तुलन जैसे– महत्वपूर्ण मुददे शामिल है।

आर्थिक स्थिरता

आर्थिक स्थिरता सिर्फ पैसे के बारे में नहीं है। एक "आर्थिक रूप से टिकाऊ संगठन" वह है जो समुदाय, पर्यावरण, या स्वास्थ्य और अपने कर्मचारियों की भलाई पर नकारात्मक प्रभाव डाले बिना राजस्व बढ़ा सकता है और दीर्घकालिक व्यापार वृद्धि को बनाए रख सकता है।

पर्यावरणीय स्थिरता

यह स्तंभ भावी पीढ़ियों के लिए पर्यावरण की रक्षा करने के बारे में हैं। पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ दक्षता बढ़ाने, संसाधन खपत और अपशिष्ट को कम करने और संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला में कार्बन उत्सर्जन को मापने और निगरानी करने के कदम उठाते है। आज कई संगठन क्लाउड परिष्कृत तकनीक को अपनाकर अपने पर्यावरणीय प्रयासों को बढ़ा रहे है, जो उन्हें अपने पर्यावरणीय दुष्प्रभावों को ट्रैक करने और उन्हें कम करने की अनुमति देता है।

जानवी जादौन
बी.ए. – तृतीय वर्ष

प्रभावी कम्यूनिकेशन

कम्यूनिकेशन या संप्रेषण का अर्थ है विचारों का आदान–प्रदान। फिर चाहे वह वाचन के जरिए हो, लिखित में हो, वेबसाइट या ईमेल जैसे डिजिटल मीडिया के माध्यम से। हमारी बॉडी लैंग्वेज, हाव भाव और आवाज के उतार चढ़ाव के द्वारा भी कम्यूनिकेट किया जाता है। कम्यूनिकेशन में किसी तरह की रूकावट या भ्रम की स्थिति बने हुए काम बिगाड़ सकती है वही सही समय पर पहुँची सटीक सूचना बड़े हादसों को रोकने में मददगार होती है। एक बच्चा बहुत छोटी उम्र में बात करना सीख जाता है, लेकिन क्या बोलें, किससे बोले, और कब बोले ये सीखने में पूरी उम्र लग जाती है। कम्यूनिकेशन हमारे जीवन को एक नया आयाम देता है, रिश्तों को सहेजना हो और कार्य क्षेत्र या

शैक्षिक क्षेत्र की बात हो, जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रभावी संवाद या सही तरह से संपर्क करना बहुत जरूरी है।

कुशल कम्यूनिकेशन संबंध बनाने और समस्यायें सुलझाने में सहायक बनाता है लेकिन उसे सीखने में समय और प्रयास दोनों लगते हैं, और स्वयं के साथ-साथ ये कम्यूनिकेशन स्किल्स त्वरित और सहज होती चली जाती है।

असरकारी कम्यूनिकेशन का एक बड़ा अर्थ है सूचना के पीछे के मनोभावों को समझना, इसलिए सुनने और बॉडी लैंग्वेज को समझने की क्षमता भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

संप्रेषण या कम्यूनिकेशन का व्यवस्थित होना तथा सहज होना प्रभावी होने का प्रथम गुण है। यह एक बुनियादी तथ्य है कि कम्यूनिकेशन के दौरान अधिकांश समय सुनने में गुजरता है वही अधिकांश लोग बात सुनने को गंभीरता से नहीं लेते, जबकि सुनना कम्यूनिकेशन का बेहद जरूरी हिस्सा होता है। कम्यूनिकेशन से जुड़ा यह नियम है कि बोलने वाले को यह अहसास होना चाहिए कि उसकी बात ध्यान से सुनी जा रही है साथ ही वह ऐसा माहौल तैयार करे कि उसकी बात ध्यान से सुनी जाये। सुनने वालों की भी यह जिम्मेदारी है कि वह बोलने वाले पर पूरा ध्यान दें।

सकारात्मक और स्पष्ट कम्यूनिकेशन का सम्बन्ध आत्म सम्मान और आत्मविश्वास से भी जुड़ा है। अपने व्यक्तित्व के इन दोनों पक्षों को समझ कर जीवन के प्रत्येक पक्ष में सकारात्मक दृष्टिकोण से काम किया जा सकता है।

इस प्रभावी कम्यूनिकेशन के लिए वैयक्तिक और सांस्कृतिक विविधता को भी ध्यान रखना चाहिए। कम्यूनिकेशन के दौरान दूसरी ओर के व्यक्ति की आयु, लिंग, शिक्षा, सांस्कृतिक और भावनात्मक पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखना जरूरी हो जाता है।

कम्यूनिकेशन सुधारने की दिशा में दूसरों की सहूलियत को समझना भी बेहद जरूरी है। संवेदनशीलता भी संप्रेषण को मजबूत और प्रभावी बनाती है। संवेदनशील व्यक्ति दूसरों के साथ मजबूत, भरोसेमन्द और टिकाऊ संबंध स्थापित करता है। वह किसी भी मुद्दे पर रचनात्मक दृष्टिकोण से सोचता है और समस्या या विवाद सुलझाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

असरदार कम्यूनिकेशन व्यक्ति या परिस्थिति को समझने में मदद करता है। आपसी मतभेद दूर होता है, भरोसा और आदर बढ़ता है। इसमें उच्चारित शब्द और भाव बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं जिनके जरिये रचनात्मक विचार पनपते हैं, समस्यायें सुलझती हैं और सहयोग बढ़ता है।

पूर्णिमा सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग

शिक्षित समाज में मानवता

आज हम सभी देख रहे हैं कि शिक्षा का महत्व काफी बढ़ता जा रहा है और यह अच्छा भी है। सभी को शिक्षित होने का अधिकार है, परन्तु शिक्षित होने के साथ-साथ हम मानवता को भूलते जा रहे हैं। हम शिक्षा तो प्राप्त कर रहे हैं परन्तु मानवता से दूर जा रहे है आज मानवता एक राजनीतिक मुद्दा बनकर रह गई है। जो किसी राजनेता को उसके चुनाव में जीत का एक साधन है, और कुछ नहीं, मानवता केवल वह नहीं जो हम शुरू से किताबो में पढ़ते आए है कि सभी जाति के लोग एक समान होते है। परन्तु हम अपने धर्म, जाति एवं समुदाय के दुष्चक्र में ऐसे फसे हुए है कि मानवता को समझ ही नहीं पाए, मानवता वह नहीं कि अपने समाज, जाति, धर्म के व्यक्तियों की मदद करना। मानवता वह है कि कोई भी व्यक्ति हो चाहे वह किसी धर्म, जाति या समाज से संबंध रखता हो हम उसकी मद्द में सदैव आगे रहे। परन्तु दुर्भागय वश ऐसा आज के समय में देखने को नहीं मिलता। शिक्षित समाज भी उन्ही कुप्रथा के चक्र में फंसकर रह गया है जो उन्हे बताई जाती है और उन्हे सिखाई जाती है। शिक्षित समाज का यह मतलब नहीं है कि वह पढ़े-लिखे और मानवता को भूल जाए शिक्षित समाज का यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि मानवता के प्रति समाज एवं अपनी सोच को बदले जिससे संसार शान्ति एवं प्रगति के मार्ग पर चल सके।

जानवी शर्मा
बी.ए.- द्वितीय वर्ष

क्या हालात रहेंगे भारत के 2030 में?

सन् 2030 तक दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी इकॉनामी बनेगा भारत। वर्तमान में अमेरिका, चीन, जर्मनी और जापान के बाद दुनिया की सबसे बड़ी पाँचवी अर्थव्यवस्था है। अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (आई0एम0एफ0) का अनुमान है कि भारत 2022-23 तक 5,000 अरब डॉलर क सकल घरेलू उत्पाद के साथ दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था होगी। जब एक प्रसिद्ध पत्रिका ने टेक्नो पाक एडवाइजर्स और जनसंख्या स्थिरता कोष से कहा कि वे उनके लिए अनुमान लगायें कि एक दशक बाद क्या हालात होंगे। उन्होंने हिसाब लगाने के बाद यही नतीजा निकाला कि 2030 में भारत एक बदला हुआ देश होगा। बिहार और हरियाणा सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि के सूत्रधार होंगे और खाद्य श्रृंखला मजबूत होगी। 2009 में 28 फीसदी लोग शहरों में रह रहे थे। तो 2030 में 38 फीसदी लोग रह रहे होंगे। शहर राष्ट्र-राज्य के समान हो जायेंगे। चंडीगढ़ और गुड़गॉव जैसे छोटे शहर सबसे अमीर शहर होंगे।

आगामी दशक में भारतीय कंपनियों को विश्व अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने के लिए शानदार अवसर मुहैया करायेगा। विश्व के कुल जी. डी. पी. में आधे से ज्यादा योगदान के साथ ही उभरती अर्थव्यवस्था ऑर्गेनाइजेशन आर्फ इकोनोमिक को-ऑपरेशन ऑफ डेवलपमेंट (ओ आई सी डी) के देशों को पछाड़ देगी। और इसके साथ ही दुनिया में बड़ा बदलाव होगा, प्रमुख रूझान ये होंगे- विकसित बाजारों में उत्पादकता की चुनौतियाँ, डिजिटल उपभोग में उफान दुनिया भर में व्यापार और पूँजी प्रवाह में वृद्धि और बाजार और सरकार की बढ़ती एवं बदलती भूमिका ये सारे रूझान भविष्य में भारतीय कंपनियों के लिए पेश होने वाली चुनौतियों और अवसरों को जमकर प्रभावित करेंगे। अपने बाजार एवं आकार की प्रतिभा की क्षमताओं की बदौलत भारत का पहले ही विश्व अर्थव्यवस्था का नेतृत्व करने में काफी बढ़त हासिल है। अगेल 6 वर्षों में यहाँ शहरों की आबादी 70 करोड़ हो जायेगी। जो देश के कुल जी0डी0पी0 में 80 फीसदी योगदान करेंगे, और रोजगार में 12 करोड़ नये अवसर पैदा करेंगे। आय भी तिगुनी हो जायेगी जिससे करोड़ों लोग गरीबी से मुक्ति पा जायेंगे।

भारतीय कंपनियों के लिए दुनिया का नेतृत्व करने के लिए चार क्षेत्रों में जबरदस्त संभावनायें हैं। दुनिया का उपभोग का इंजन अगले दशक में वस्तुओं और सेवाओं के कई बाजारो में भारत का हिस्सा 15 से 20 फीसदी होगा। भारत के उपभोग से चलने वाली अर्थव्यवस्था से नये खिलाड़ियों घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय अभिनव प्रौद्योगिकी वस्तुओं और सेवाओं की डिलीवरी में विकास के अवसर दिखेगे। फार्मास्यूटिकल बाजार में भी वृद्धि होगी प्रीमियम उत्पाद एवं सेवायें 10 करोड़ से ज्यादा घरों तक फैल जायेंगे। बड़े पैमाने पर शहरीकरण और ग्रामीण इलाकों में सम्पन्नता बढ़ने के साथ ही ऊर्जा बचाने वाले हाइब्रिड मोटर साईकिल और कार जैसे- उत्पादों तथा इस्पात तथा सीमेंट की मांग होगी।

<u>दुनिया का मूल्य संवर्धन केन्द्र :-</u>

कई भारतीय कम्पनियों ने सम्पदा की बाधाओं से पार जाने के लिए माकूल बिजनेस मॉडल तैयार कर लिये हैं। उन्होंने कम लागत के साथ अधिक मूल्य के उत्पाद एवं सेवायें विकसित की हैं। मिसाल के तौर पर भारत के ग्रामीण बाजारों में डिजिटल टैक्नोलॉजी पहुँचाने के लिए ही अधिकाधिक लोगों के ऋण और वित्तीय सेवाओं के अवसर मिलेंगे। उपभोक्ता वस्तुओं की कम्पनियों ने बिजली और पेयजल की किल्लतों वाले बाजारों में रेफ्रीजरेटर और बाहर प्यूरीफायर को लोगों की जरूरतों के अनुरूप बनाने का काम पहले ही शुरू कर दिया है। ग्रामीण इलाकों में सस्ते आवास की सरकारी वहन के हिस्से के तौर पर इन्फ्रास्ट्रक्चर ओर इंजीनियरिंग कम्पनियों ने भी कम लागत वाले बुनियादी ढाँचों को जरूरत पर काम करना शुरू कर दिया है। इन खोजों से भारतीय कम्पनियों को दूसरे उभरते बाजारों को साधने में मदद मिलेगी।

<u>दुनिया की उत्पादकता का मोटर :-</u>

भारत में खुद को निर्माण और बिजनेस सर्विसेज के क्षेत्रों में कम लागत वाले और विशेषज्ञ मुहैया कराने के मामले वैश्विक नेता के रूप में स्थापित कर लिया है। बेहतर तरीके से काम करने वाली कई भारतीय कम्पनियों ने विभिन्न क्षेत्रों एवं कुटीर स्तर के उपक्रमों से लेकर बड़े सरकारी उपक्रमों को सेवा देने वाली अगली लहर के अभिनव प्रयोग में बढ़त बना ली है और भारत के कुशल प्रतिभाशाली लोगों की अगली पीढ़ी के सामने भविष्य में काफी संभावनायें हैं। भारतीय अपने अभिनव प्रयोगों से सूचना, स्वास्थ्य एवं बिजनेस सर्विसेज सेवाओं को पहले से ज्यादा कारगर बनायेंगे।

दुनिया की प्रतिभा का स्त्रोत :-

दुनिया में अंग्रेजी बोलने वाले सबसे ज्यादा लोगों की संख्या भारत में ही है। यहाँ 50 प्रतिशत लोगों की संख्या 25 साल से कम उम्र के हैं। यही निवेश से हमारा मौजूदा और भावी प्रतिज्ञा का भंडार शिक्षा और प्रौद्योगिकी इंटरनेट से जुड़ी सेवायें और क्लीनिकल रिसर्च आउटसोर्सिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में अवसर मिलने पर मूल्य संवर्धन करना है। इसके अलावा इससे बढ़ती आबादी वाली विकसित अर्थव्यवस्था के लिए समुचित समाधान निकाला जा सकता है।

भविष्य की प्रतिभाओं के अपने बड़े भण्डार को आज की दुनिया के लिए तैयार करना देश के निजी क्षेत्र उपक्रमों के लिए सुनहरे मौके जैसे हैं। वे उपक्रम जो कम लागत पर टैलेंट पूल ड्रोनर और फैकल्टी विकसित करने के नये तरीके इजात करने के लिए सार्वजनिक क्षेत्र के साथ साझा कर सके। शिक्षा के क्षेत्र में नवीन विचारों का इस्तेमाल दक्षता और ज्ञान विकास में भी लागू हो सकता है।

डॉ० नीतू शर्मा

प्रवक्ता अर्थशास्त्र विभाग

मेरा अनुभव

''जीवन एक संघर्ष है,
संघर्ष से जुड़ा है अनुभव,
जन्म और मृत्यु के बीच की ये जंग है।
हार–जीत बस पहलू हैं,
जो सत्य है वो है – अनुभव।''

अनुभव शब्द उतना ही विस्तृत है, जितना उसे जिया जाये, जीवन के हर पल से जुदा है आपकी दुनिया का अनुभव, यहाँ दुनिया का अर्थ आपके व्यक्तिगत जीवन से है। वास्तव में अनुभव का उम्र से कोई नाता नहीं, उम्र नहीं आपकी परिस्थिति आपको अनुभव देती है। हमारा स्वभाव ऐसा है कि हम जीवन में सरलता चाहते हैं। हर एक परिस्थिति को अपने अनुकूल चाहते हैं। जब परिस्थिति हमारे प्रतिकूल होती है तो हम घबरा जाते हैं। लेकिन वास्तव में जीवन एक संघर्ष है जो हर पल करना होता है। एक ऐसा संघर्ष जो दूसरों से ज्यादा अपने–आप से चलता है। इस संघर्ष में हम दूसरों से पीछे तब होते हैं, जब अपने–आप से हार जाते हैं। उस सरलता भरे जीवन को छोड़कर परिस्थिति के प्रतिकूल खुद को नहीं कर पाते। हर पल के इस संधर्ष में ठीक उसी तरह हम, हर पल पिछड़ जाते हैं। जीवन में विपरीत परिस्थितियों का होना गलत नहीं, बल्कि वास्तव में वही हमें लड़ना सिखाती है। कठिन परिस्थितियों से ही जीवन का वास्तविक अनुभव मिलता है। और वही अनुभव हमें आने वाले जीवन के लिए सरल रास्ता तैयार करता है।

अनुभव सही–गलत नहीं होता, यह सब के अपने दृष्टिकोण से जुड़ा है। जिस तरह सबका व्यक्तिगत जीवन अलग है। ठीक उसी तरह सबका एक विषय से संबंधित अनुभव भी अलग हो सकता है। आपकी अपनी दुनिया की तरह, व जितना आपके जीवन में सुविधाओं का अभाव होगा, उतना ही आप मजबूत बनेंगे, क्योंकि आप उस अभाव की कीमत को समझते हो और आप हर एक परिस्थिति का सामना करने के लिए तैयार रहते हो।

जब आपको जीवन में सुविधाओं का कोई अभाव ना हो तो आप वास्तव में जीवन में संघर्ष, विपरीत परिस्थिति का सामना करने में खुद को असहज पाते हो।

''जीवन का संघर्ष है हर मुश्किल वक्त से, वही हमें मजबूत बनाता है। वास्तविक जीवन के अर्थ से।''

प्रेरणा सिंह

प्रवक्ता राजनीति विज्ञान

ज्ञान और अज्ञान

- अज्ञानता से भय पैदा होता है।
- भय से अंधविश्वास पैदा होता है।
- अंधविश्वास से अंध भक्ति पैदा होती है।
- विवेक शून्य हो जाता है। और जिसका विवेक शून्य हो जाता है। वह इंसान नहीं मानसिक गुलाम होता है।
- इसलिए अज्ञानी नहीं ज्ञानी बनों।

प्राची कुमारी

बी.ए. – प्रथम वर्ष

मुगल शासनकाल में हरम की दशा

मुगल शासक शौर्य और ऐच्छिक वासना दोनों के प्रति समान रूप से आसक्त थे और सम्भवत: इसलिए राजपरिवारों में स्त्री को मनोरंजक और आनन्द के साधन के रूप में देखा जाता था। ये स्त्रियाँ उनके लिए युद्ध की थकान दूर करने और नव-उत्साह-स्फूरण की प्रमुख स्रोत थी। इसलिए मुगल शासक और सरदार कई पत्नियों और इसके अतिरिक्त उप-पत्नियों तथा रखैलों का एक विशाल समूह रखते थे। यह प्रथा मुस्लिम संस्कृति की एक अंग थी। इसलिए समाज और इनकी विवाहित पत्नियों को सहज स्वीकार्य भी थी। अबुल-फजल के अनुसार मुगलकाल में शाही स्त्रियों के रहने का स्थान 'महल' कहलाता था। इसमें किसी का पहुँचना आसान नहीं था। इसलिए हरम को कोई अधिकारिक विवरण प्राप्त नहीं होता। फिर भी मुगलकालीन ग्रन्थों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अबुल-फजल ने महल को 'शविस्तान-ए-इकबाल' या 'शविस्तान-ए-खास' का नाम दिया है। बहरहाल हरम की परिभाषा करते समय यह कहा जा सकता है कि बादशाहों और सामन्तों का यह सुरक्षित और चारों ओर से घिरा हुआ बड़ा महल जहाँ विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न धर्मों और जातियों की स्त्रियाँ का अलग-अलग आवासों में एक पूरा समूह रहता हो। अबुल-फजल ने लिखा है कि अकबर के हरम में पाँच हजार से भी अधिक स्त्रियाँ थी और प्रत्येक स्त्री को एक अलग आवास मिला हुआ था। बी0 एन0 लूनिया के अनुसार ''विशाल अन्तापुर (हरम) इस युग की साधारण बात थी और राजा से लेकर नीचे सामन्तों तक प्रत्येक स्त्रियाँ, दासियाँ और नर्तकियाँ बहुसंख्या में रहती थीं। जिनकी देख-रेख महिला अधिकारियों का पृथक मण्डल करता था। अन्तपुर में इन नारियों पर स्रहसों रूपये व्यय होते थे।

वास्तव में हरम एक बड़े और विस्तृत घेरे, जिसमें असंख्य सुन्दर भवन होते थे, के भीतर स्थित होता था। अबुल-फजल के ही अनुसार स्त्रियों के भवन दो भागों में विभाजित होते थे तथा स्त्री दरोगा या अधीक्षकों की नियुक्ति प्रत्येक विभाग की देख-रेख के लिए की जाती थी।

वर्नियर ने हरम की संरचना के विषय में लिखते हुए कहा है कि हरम में बहुत भव्य एवं विस्तृत भवन होते थे जो महल के भीतर रहने वाली स्त्रियों के पद और आय के अनुसार उनको आवंटित किये जाते थे। प्रत्येक भवन के दरवाजे पर प्रवाहित पानी का प्रबन्ध रहता था, तथा सुन्दर झरने और सुन्दर आनन्द-स्थल होते थे। इनमें झरने तथा पेड़ों के झुरमुट और जहाँ-तहाँ छोटे मोटे कमरानुमा स्थल बने होते थे। ऊँचे-नीचे दीवान और टेरेस भी होते थे। जहाँ राज को ठण्डक में निद्रा का आनन्द लिया जाता था। सभी भवन बादशाह के पहुँच के भीतर होते थे। शाही महल के भीतर रानी से लेकर साधारण दासी तक की स्त्रियाँ या शाही परिवार के सदस्य ही प्रवेश कर सकते थे। अकबर ने विभिन्न धर्मों और जातियों की सुन्दर व युवा स्त्रियों का जमघट इकट्ठा किया था। विशेष तथ्य ये था कि औरंगजेब और उसके कुछ अधिकारियों के शासनकाल में ईसाई स्त्रियों को भी सम्मिलित करने के प्रयास किये गये थे। औरंगजेब ने हरम की स्त्रियों की संख्या काफी घटा दी थी। फिर भी कभी-कभी स्थिति बिगड़ जाया करती थी और राजकुमारियाँ प्राय: व्यविभचार से मुक्त नहीं रह पाती थीं। तत्कालीन व्यवस्था को देखते हुए कुछ एक इतिहासकारों ने व्यवस्था में दोष उजागर किया है। मुगल राजकुमारी जहाँ आरा यद्यपि अन्य स्त्रियों की भांति पहरे में रहती थी किन्तु एक युवा जो साधारण स्तर का व्यक्ति था, उससे मिला करता था। इसी क्रम में युद्ध पर जाते समय अथवा मनोरंजक सैर पर जाते समय हरम बादशाह के साथ जाया करता था और दूरवर्ती स्थानों के लिए कूच के समय भी हरम की स्त्रियाँ अपने हिजड़ो और स्त्री अंगरक्षकों के साथ बादशाह के साथ जाती थीं। हाथी पर बैठते समय महावत अपना चेहरा एक मोटे कपड़े से ढ़क लेता था, ताकि हाथी पर बैठी हुई स्त्रियों की आँखे खुली रहती थीं। हाथियों के अतिरिक्त पालकियों पर भी ये स्त्रियाँ जाया करती थीं।

मुगल बादशाहों ने हरम की स्त्रियों के मनोरंजन के लिए गीत-संगीत का भी प्रबन्ध किया हुआ था तथा खाली समय में स्त्रियाँ प्रेम-कहानियाँ पढ़कर अथवा मीना-बाजार और नौरोज जैसे पर्वो में सम्मिलित होकर अपना मनोरंजन किया करती थीं।

मुगल शासकों की भांति ही मुगल दरबार के सामन्तों और सरदारों के भी हरम हुआ करते थे। किन्तु अन्तर यह था कि हिन्दुओं के महल में उनकी विवाहित पत्नियाँ ही रहती थीं। रखैलों के लिए अलग भवन हुआ करता था। उड़ीसा के राजा मुकुन्द देव के महल मे जो मंजिले थें जिसमें आठवीं मंजिल में हरम की स्त्रियाँ रहा करती थीं।

मुगल शासनकाल निश्चित रूप से भारत के इतिहास का एक विलक्षण युग था जिसमें यद्यपि नारी को न तो बहुत सम्मानजनक स्थान मिला था और न ही कोई विशेष स्वतन्त्रता मिली हुई थी, फिर भी शाही परिवार हरम और मुगलशासन से सम्बन्धित कुछ राजकुमारियों और सामन्तों की मुख्य पत्नियों, पुत्रियों और राजपूतों तथा रजवाड़ों की प्रमुख स्त्रियों को विशेष सम्मान प्राप्त था। मुगल-हरम की स्थिति कुछ इस प्रकार थी, हरम में हजारों स्त्रियाँ विभिन्न प्रदेशों, जातियों व धर्मों से लाई जातीं थीं। उन्हें उनके पद और प्रतिष्ठा के अनुसार पृथक-पृथक सुन्दर भोग-विलास की सामग्री से परिपूर्ण और नौकर-चाकरों से भरे हुए महल में रखा जाता था। उनमें आपस में प्रेम व सौहार्द बनाये रखने के लिए बादशाह ने अलग-अलग दिन व समय उनसे मिलने के लिए निश्चित किये थे। बादशाह ने इन महलों के नाम इतवार, मंगलवार, शनिवार आदि रखे हुए थे। इन दिनों बादशाह महलों से जाकर रानियों के साथ दाम्पत्य सुख प्राप्त किया करते थे। विदेशी रखैलों के लिए अलग महल था जिसका नाम बंगाली महल था।

हरमों का प्रबन्ध लगभग स्वायतशासी था, जिसका प्रबन्ध पूर्णत: स्त्रियों द्वारा किया जाता था, ताकि स्त्रियों की पवित्रता बनी रहे। हरम का नियन्त्रण करने वाली सर्वोच्च पदाधिकारी स्त्री को 'महलदार' कहा जाता था। हरम की स्त्री पदाधिकारियों में से कोई ऐसी होती थी जिनकी पदवीं अकबर के दरबार के पुरूष अधिकारियों के बराबर होती थी।

यद्यपि हरम की स्त्रियों को आमोद-प्रमोद के सभी साधन उपलब्ध थे, फिर भी उन्हें सन्तोष नहीं होता था। क्योंकि सुखी जीवन उनके लिए एक कैदखाना था। हरम की स्त्रियों को मानसिक सुख-सन्तोष देने के लिए वस्त्र, आभूषण, पद और प्रतिष्ठा देने का प्रबन्ध किया गया था। स्त्रियों के आवश्यक और शौक के सामान खरीदने के लिए मीना-बाजार का प्रबन्ध किया जाता था। इनकी चहल-पहल व खूबसूरती के कारण मीना बाजार को 'खुशरोज' कहा जाता था।

वास्तविकता यह है कि हरम की स्त्रियों की दशा स्त्री परातन्त्रता की प्रतीक ही थी क्योंकि समस्त ऐशो-आराम होते हुए भी हरम की स्त्रियाँ मनोरंजन और सुख की साधन मात्र थीं।

डॉ० वसुन्धरा सक्सेना
प्रवक्ता इतिहास विभाग

समाज निर्माणे नारीणां भूमिका॥

''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला: क्रिया:।।''

वैदिक वाड्.मये अपाला-घोषा-लोपामुद्रा-प्रभृत्य: विदुष्य: नार्य: अभवन्। गार्गी ब्रह्मवादिनी, तीक्ष्णबुद्धि: अध्यात्म तत्वस्य द्विवेचिका आसीत्। सा याज्ञवल्क्येन सह शास्त्रार्थमकरोत् तथा याज्ञवल्क्यं निरूत्तरम् अकरोत्। याज्ञवल्क्यपत्नी मैत्रेयी अपि प्रज्ञावती सूक्ष्मविवेचिका चासीत्। आचार्य मण्डनमिश्रसरू पत्नी भारती अतीव विदुषी साक्षात् सरस्वत्यवतारभूता आसीत्। तस्या: वैशिष्टयमिदं यत् आचार्यशड्.करेण सह सा मण्डनमिश्रस्य शास्त्रार्थे निर्णायिकाडभवत्। यदा मण्डनमिश्र: पराजितोडभवत् तदा स्वयमपि सा शास्त्रार्थ शड्.करेण सह कृतवती।

आधुनिक काले-विमान चालने, चन्द्रगमने, जलयान चालने महिला: अग्रेसरन्ति। पुरूषवत् स्त्रिय: अपि सार्वजनिकराजकीयसेवासु संलग्ना: दृश्यन्ते। व्यापारे आपणेष्वपि तासां संख्या पुरूषा पेक्षया न्यूना नास्ति। सम्प्रति राजनीतौ अपि स्त्रिय: पुरूषै: सार्धं सहयोगितया प्रगतिं कुर्वन्ति। ता: पार्षद विधायक- सांसदेत्यादीनि पदानि चालं कुर्वन्ति। भाषणेडपि तासाम् ओजस्विता अवलोक्यते। किं बहुना, राष्ट्रपति-प्रधानमन्त्रि-मन्त्रि-प्रभृतीनि महत्व पूर्णानि पदानि भूषयन्त्य: गौरवं लभन्ते। क्रिकेट-बालीवाल-टेनिसेत्यादिष पाश्चात्य क्रीडाक्षेत्रेष्वपि नवा: युवतय: बालिकाश्च देशान्तरेषु गत्वा विलयं प्राप्य जगति भारतस्य मानं वर्धयन्ति। आधुनिक समये तु कबड्डी भारोत्तोलन सदृशीषु भारतीय क्रीडा स्वापि ता: स्पर्थन्ते। सम्पन्नायाम् ओलम्पिक क्रीडाप्रतिस्पर्धायां भारोत्तोलने कर्णभमल्लेश्वरी पदकं प्राप्तवती। शिक्षा क्षेत्रोडपि युवतय: प्राध्यापकाचार्य परेषु प्रतिष्ठिता: सन्ति। केवलं न कुलपति पदं प्रत्युत् मन्त्रि पदमपि ता: भूषयन्ति।

एवं हि नार्य: समाजस्य सर्वेषु कर्मक्षेत्रेषु महत्वपूर्ण-योगदानं कुर्वाणा: राष्ट्रस्य अन्युन्नतौ संलग्ना: सन्ति।

''अतुलं तत्र तन्तेज: सर्व देव शरीरजम्।
एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा।।'

''दशपुत्र सभा कन्या दश पुत्रान्प्रवर्धयन्।
यत्फलं लभते मर्त्यस्तल्लभ्यं कन्ययैकया।।''

डॉ० अलका गोस्वामी
प्रवक्ता संस्कृत विभाग

भारत और नेपाल के आर्थिक सम्बन्धः दशा और दिशा

अपने पड़ोसी देशो के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना किसी भी देश की विदेश नीति की सफलता का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। इस दिशा में भारत-नेपाल सम्बन्ध प्राचीन काल से ही जीवन्त रहे हैं। भारत प्राचीन काल से ही नेपाल के साथ मात्र सीमा ही नहीं संस्कृति भी साझा करता आया है। दोनों देशों के पारस्परिक राजनीतिक सम्बन्ध पूर्वकाल से लेकर वर्ष 2005 तक प्रगतिवान व नीतिगत रूप से परिपक्व रहे हैं। दोनों देशों के साथ राजनेताओं की नीति व वैचारिक गतिशीलता, विकास के विभिन्न आयामों को स्पर्श करती रही है।

दोनों ही देश धार्मिक दृष्टि से एकात्मक देश हैं। भारत व नेपाल के धार्मिक केन्द्र दोनों राष्ट्रों के परस्पर मतावलंबियों को निरन्तर आकर्षित करते रहे हैं। दोनों राष्ट्रों के इतिहास पर नजर डालने पर वस्तुतः एक ही समाज दृश्यमान होता है।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि समान होने के साथ ही भारत और नेपाल बी0बी0आई0एम0 (बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल) बिक्सटेक (बहुक्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी की पहल), गुटनिपरेक्ष आंदोलन और सार्क (क्षेत्रीय सहयोग के लिए दक्षिण एशियाई संघ) जैसे अनेक बहुपक्षीय मंचों को भी साझा करते हैं। भारत के प्रयासों से ही नेपाल संयुक्त राष्ट्र संघ (यू0एन0ओ0) का सदस्य बना। भारत-नेपाल सम्बन्ध जहाँ मधुर रहे हैं वहीं उनकी व्यवहार्यता भी दिखाई देती है। राजतन्त्र की समाप्ति के बाद नेपाल की राजनीतिक दशा बदल जाने से इन सम्बन्धों की दशा व दिशा बदल गई जिसका प्रभाव हमारे आर्थिक सम्बन्धों पर भी पड़ा। एक देश की आर्थिक परिस्थितियाँ वैश्विक स्तर पर अन्य देशों को भी प्रभावित करती है और इन्हीं कारणों से अन्तर्राष्ट्रीय आर्थिक सम्बन्धों का निर्माण होता है। दो पड़ोसी देशों के सामाजिक-राजनीतिक सम्बन्धों के कारणों में आर्थिक तत्वों का विशेष महत्व होता है। भारत व नेपाल के मध्य आर्थिक गतिशीलता की दिशा में अनेक संधियाँ होती रही हैं। इसी के क्रम में सन् 1950 की भारत-नेपाल शांति व मित्रता संधि दोनों देशों के मध्य विशेष सम्बन्धों का आधार रहीं। इस संधि का उद्देश्य दोनों दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के मध्य घनिष्ठ राजनीतिक सम्बन्ध स्थापित करना है। यह संधि दोनों देशों के बीच लोगों और शत्रुओं की मुक्त आवाजाही और रक्षा एवं विदेशी मामलों के लिए घनिष्ठ सम्बन्ध तथा सहयोग की अनुमति प्रदान करती है। साथ ही यह संधि नेपाल को भारत से शस्त्र खरीदने की अनुमति भी देती है। इस संधि ने नेपाल को एक भू-आबद्ध (Land Lock) देश होने का कारण अनेक विशेषाधिकार प्राप्त करने में सक्षम बनाया है। 1960 में नेपाल ने चीन के साथ 'मित्रता व सहयोग' की संधि की, जिसके परिणामस्वरूप 1961 में भारत व नेपाल के मध्य सम्बन्धों में मतभेद भी पैदा हुए।

13 अगस्त 1971 में दोनों देशों के मध्य एक पंचवर्षीय समझौता किया गया, जिसके अन्तर्गत भारत ने नेपाल को न केवल कच्चे माल व्यापार की खुली छूट प्रदान की बल्कि नेपाल को इसके लिए मार्ग भी उपलब्ध कराया।

भारत ने नेपाल की पंचवर्षीय योजनाओं में भरपूर सहायता दी व उसकी आर्थिक स्थिति में सुधार हेतु उदारतापूर्वक ऋण भी दिया। भारत ने नेपाल को कोलकाता बन्दरगाह को उपयोग में लाने की अनुमति प्रदान की।

कोशी तथा त्रिशूली परियोजनाओं में भारत ने उदारता से अपार धनराशि का व्यय किया। भारत, नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के सम्बन्धों की विशिष्टता है, जिससे दोनों देशों के लोगों को आवागमन की सुविधा रहती है। दोनों देशों के मध्य 1850 कि0मी0 से अधिक की लम्बी साझा सीमा है। जिससे भारत के 5 राज्य सिक्मिम, पश्चिम बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड जुड़े हुए हैं।

आर्थिक एवं व्यापारिक साझेदारी

शेष विश्व से व्यापार हेतु पारगमन प्रदान करने के साथ ही भारत नेपाल के लिए सबसे बड़ा व्यापार भागीदार व विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत भी है। 1996 से भारत को नेपाल का निर्यात 11 गुना से अधिक व द्विपक्षीय व्यापार में सात गुना से भी अधिक वृद्धि हुई है। वर्ष 1995-1996 में नेपाल के कुल बाहरी व्यापार के 29.8 प्रतिशत का द्विपक्षीय व्यापार, वर्ष 2013-14 में 66 प्रतिशत तक पहुँच गया। नेपाल से भारत का निर्यात 1995-96 में 230 करोड़ यू. एस. डॉलर से बढ़कर 2013-14 में ₹37.135 अरब हो गया व वर्ष 1995-96 के दौरान भारत का निर्यात ₹15.25 अरब से बढ़कर 2013-14 में ₹ 2.95456 खरब (4.81 अरब यू. एस. डॉलर) हो गया।

उपरोक्त परिदृश्य में, वर्ष 2018-19 में, भारत में नेपाल

का निर्यात ₹ 3558 करोड़ (508 मिलियन अमेरिकी डॉलर) था व नेपाल को भारत का निर्यात ₹ 54300 करोड़ (7.76 बिलियन अमेरिकी डॉलर) रहा था। वर्ष 2021 में नेपाल को भारत का निर्यात बढ़कर 9.19 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया। मार्च 2022 तक भारत द्वारा नेपाल को उसकी कुल जी0डी0पी0 का 22 प्रतिशत निर्यात किया गया है। इसके अतिरिक्त विनिर्माण सेवाओं, बैकिंग, बीमा, शुष्क बंदरगाह, विद्युत दर एवं पर्यटन उद्योग में भी व्यापारिक स्तर पर भारतीय कंपनियों की भागीदारी है।

भारत से नेपाल को निर्यात होने वाली प्रमुख वस्तुएँ पेट्रोलियम उत्पाद, मोटर वाहन, स्पेयर पार्ट्स, मशीनरी व कलपुर्जे, तार, कोयला, सीमेण्ट, धागे व केमिकल्स हैं, वहीं नेपाल द्वारा भारत को निर्यात की जाने वाली प्रमुख वस्तुओं में- पॉलिएस्टर धागा, जूट का सामान, धागा, जड़ाई शीट, पैक्ड जूस, इलायची, पाइप, जूते व सैण्डल, पत्थर व रेत हैं।

नेपाल की कुल स्वीकृत प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का लगभग 40 प्रतिशत भारतीय उपक्रमों का है। नेपाल सरकार ने ₹ 72.694 अरब का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश सहित कुल 3004 विदेशी निवेश परियोजनाओं को वर्ष 2013 में मंजूरी दी थी। नेपाल में लगभग 180 से अधिक भारतीय उपक्रम क्रियाशील हैं, कुछ बड़े भारतीय निवशेकों में आई0टी0सी0, डॉबर इण्डिया, हिन्दुस्तान यूनी लीवर, एस0बी0आई0, पी0एन0बी0, एशियन पेंट्स, जिन्नर इण्डिया, बी0आई0टी0 ग्रुप होल्डिंग्स, नुपूर इंटरनेशनल, ट्रान्सवर्न्ड ग्रुप, पटेल इंजीनियरिंग, भिलाई इंटरनेशनल, भूषण पेन्ट्स, टाटा पावर आदि प्रमुख हैं। भारत द्वारा नेपाल में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश 2019-20 के दौरान 3.24 बिलियन नेपाली रूपयों के रूप में किया गया। इसके आगामी वर्षों में कोविड के कारण निवेश व उससे जुड़ी प्रक्रियाएँ प्रभावित रहीं।

जलीय संसाधनों की दृष्टि से नेपाल एक समृद्ध देश है, इस क्षेत्र में दोनों देशों के निकटतम सहयोग से न केवल नेपाल का काया कल्प हो सकता है, अपितु भारत की वांछित ऊर्जा अर्थव्यवस्था को भी सम्बल प्राप्त हो सकता है।

आर्थिक मजबूती व ऊर्जा के क्षेत्र में अरूण-3 व अरूण-4, पन बिजली परियोजनाओं में ₹ 1236 करोड़ भारत ने नेपाल में निवेश किए हैं। पूर्वी नेपाल में अरूण नदी पर स्थित यह एक रन-ऑफ-रिवर है। इसी क्रम में 2008 में नेपाल सरकार व सतलुज जल विकास निगम के मध्य ''बिल्ड ऑन आपरेट एंड ट्रांसफर (BOOT) के आधार पर समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए जा चुके है। भारत द्वारा नेपाल के रूपन्देही में आई0आई0टी0 का सेटेलाइट केन्द्र, तकनीकी व शिक्षा के क्षेत्र में विकास के लिए स्थापित करने का प्रस्ताव भी दिया गया है, जिसका नेपाल ने स्वागत किया है।

पर्यटन के क्षेत्र में विकास, सांस्कृतिक समृद्धि व व्यापारिक तथा व्यावसायिक दृष्टिकोण से भारत ने नेपाल में ''बौद्ध संस्कृति विकास केन्द्र'' का शिलान्यास करते हुए उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। इसी क्रम में भारत ने काठमांडू-वाराणसी, लुंबिनी-बोधगया व जनकपुर-अयोध्या की विरासत को जोड़ने के लिए तीन सिस्टर-सिटी समझौतों पर भी हस्ताक्षर किए हैं।

''पड़ोसी को प्राथमिकता'' देने की नीति को ध्यान में रखते हुए दोनों देशों के प्रधानमंत्री द्वारा जय नगर-कुर्था तक 35 कि0मी0 की रेल लाईन का परिचालन व बिजपुरा से बरदीदास तक इसका विस्तार करना एक महत्वपूर्ण निर्णय है, साथ ही सीमावर्ती क्षेत्र में सोलुखुब्मू को मिर्चैया (सिराहा) से जोड़ने वाली 90 कि0मी0 लम्बी 102 के0वी0 डबल सर्किट ट्रांन्समिशन लाइन का संचालन एक मील का पत्थर साबित हुआ है। उत्तरोत्तर क्रम में रेलवे क्षेत्र में नेपाल को तकनीकी सहयोग, अन्तर्राष्ट्रीय सौर गठबन्धन में नेपाल की सदस्यता का भारत द्वारा समर्थन, पेट्रोलियम उत्पादों की नियमित आपूर्ति, इण्डियन ऑयल व नेपाल ऑयल कॉर्पोरेशन के मध्य साझेदारी, दोनों देशों को निश्चित रूप से आर्थिक व व्यापारिक दृष्टि से समृद्ध करने में सफल निर्णय सिद्ध होगें।

उपरोक्त तथ्य जहाँ एक ओर भारत व नेपाल के मध्य बहुपक्षीय व्यापारिक विषयों से सम्बन्धित मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों की सफलता को उजागर करते हैं, वहीं कुछ मुद्दे दोनों देशों के आगे बढ़ते रिश्तों के प्रवाह में गतिरोध उत्पन्न कर रहे हैं यथा-नवीन सीमा एवं राजनीतिक मानचित्र विवाद, उत्तराखण्ड का काला पानी, लिपियाधुरा व लिंपियाधुरा तथा बिहार के पश्चिमी चम्पारण के सुस्ता क्षेत्र पर नेपाल के दावे से जुड़ा विवाद या मद्येशिया समुदाय का मुद्दा।

ये सभी मुद्दे भारत और नेपाल के वैचारिक मतभेद से

उपजे हैं, जिनके सार्थक समाधान के लिए फिलहाल दोनों देशों की सरकारें अपने-अपने स्तर पर सम्बन्धित प्रयास कर रही हैं। किन्तु चिंता का विषय यह है कि चीन इन मुद्दों के जरिये अपनी कुत्सित लालसाओं को पूरा करने के लिए भारत और नेपाल के सम्बन्धों को और अधिक तनावपूर्ण बनाकर नेपाल को भारत के विरूद्ध एक मोहरे की भांति प्रयुक्त करना चाहता है। वस्तुतः नेपाल, भारत-नेपाल सुरक्षा तथा चीन के मध्य स्थित एक 'बफर स्टेट' है। चीन दक्षिण एशिया में भारत के विरूद्ध अपनी विस्तारवादी नीति में नेपाल को एक अहम किरदार के रूप में देखता है। नेपाल के साथ हमारी आर्थिक निकटता से विचलित चीन ने रणनीतिक प्रलोभन के द्वारा अपनी स्वार्थ सिद्धि को पूर्ण करते हुए 'प्रत्यक्ष विदेशी निवेश' में भारत को पीछे छोड़ दिया है। चीन की ओर से नेपाल को दी जाने वाली सालाना विकास सहायता राशि को बढ़ाकर 12 करोड़ अमेरिकी डॉलर कर दिया गया है। अन्य अनेक परियोजनाओं में निवेश के साथ ही वर्तमान में चीन नेपाल के पोखरा और लुंबिनी हवाई अड्डे के विस्तार से सम्बन्धित परियोजनाओं से भी जुड़ गया है। जाहिर है ऐसे में भारत को चीन के साथ प्रतिस्पर्द्धा करने की अपेक्षा, नेपाल में अपने प्रभाव का विस्तार करना होगा तथा अपने नीतिगत उद्देश्यों की पूर्ति हेतु द्विपक्षीय संवाद, मजबूत आर्थिक एंव अधिक समावेशी रूख के साथ ही नेपाल के लोगों के प्रति अधिक संवेदनशीलता दर्शानी होगी। ''पड़ोसी को प्राथमिकता'' देने की नीति की जड़ें गहरी और मजबूत करते हुए एक बड़े उदार हदय वाला मित्र बनना होगा। कहीं न कहीं भारत को अपनी विदेश-नीति की समीक्षा करने की भी आवश्यकता है। वर्तमान में नेपाल, भारत और चीन के साथ एक स्वतन्त्र व्यवसायी की भाँति व्यवहार कर रहा है तथा चीनी निवेश की व्यापकता के समक्ष भारत के निवेश का प्रकाश मद्धिम साबित हो रहा है ऐसे में कूटनीतिक सूझबूझ के स्तर पर भारत को स्वयं को अधिक प्रभावशाली बनाना ही होगा अन्यथा चीन और चीन जैसी अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ताकतें अपने कूटनीतिक प्रहार से हमारे सम्बन्धों और सम्बन्धों से जुड़ी आर्थिक, व्यापारिक एवं बहुपक्षीय विकास की दशा और दिशा को आहत कर उन्हें गलत दिशा की ओर मोड़ सकती है।

डॉ० एकता पाण्डेय
असि0 प्रोफेसर अर्थशास्त्र विभाग

साहित्य, समाज और संस्कृति

साहित्य समाज का दर्पण है और समाज का निर्माण संस्कृति से होता हैं। वास्तव में **साहित्य समाज** और **संस्कृति** तीनों ही एक दूसरे के अनुपूरक कहे जा सकते हैं, क्योंकि किसी एक का भी अस्तित्व दूसरे के बिना संभव हो ही नहीं सकता है।

"साहित्य समाज का दर्पण है
जिन्दगी को हर पक्षों पर अर्पण है ॥
कुछ अनसुलझे पहलुओं के राज
खोलता है, समाज में जो देखता है
वही बोलता है
कश्मकश की सुलझाता अड़चन है
साहित्य समाज का दर्पण है ॥"

आज जिस तरह हिंदी सिनेमा और सोशल मीडिया की भाषा और संस्कृति हमारे समाज को दिन प्रतिदिन विकृत किए जा रहे हैं। हमारी युवा पीढ़ी को पथभ्रष्ट कर रहे हैं वह चिन्तनीय हैं। वर्तमान में हमारे समाज की यह स्थिति है कि..

"आज दिवस में तिमिर बहुत है, जैसे हो
सावन की भोर,
मानव तो आकाश की ओर, मानवता पाताल
की ओर"।

इसी संदर्भ में एक और विद्वान का मत...

सभ्यता बताती है कि 'हमारे पास क्या है' और
संस्कृति यह बताती है कि, 'हम क्या हैं।

हमारा साहित्य हमें धार्मिकता, नैतिकता, सामाजिकता, नीति, राजनीति, आर्थिकता आदि सभी गुण सिखाता है। हमारे साहित्य में ज्ञान है, वैराग्य है, नीति है, श्रृंगार है, भक्ति है, प्रेम है, वात्सल्य है, करूणा है, ओज है, वीरता है, प्रकृति प्रेम है, जीव प्रेम है।

निष्कर्ष-

यही कहा जा सकता है कि वास्तव में हर देश का साहित्य उस देश की **लौकिक सभ्यता** एवं **संस्कृति, मातृभाषा लोक गीत, लोक भाषाओं,** (जन भाषाओं) तथा तत्कालीन परिस्थितियों (सामाजिक, आर्थिक, नैतिक एवं राजनीतिक) को भी उजागर करता है। साहित्य एक राष्ट्र की धरोहर है, उसका अभिमान है, गौरव है, पहचान है।

चारू शर्मा
बी.ए. - तृतीय वर्ष

ईश्वर की अनुपम कृति नारी

ईश्वर की अनुपम कृति हो तुम, माँ दुर्गा की प्रतिकृति हो तुम
सुन्दर, सबल, चपल अभिराम, नारी स्वरूपा प्रकृति हो तुम।''

नारी ब्रहमा विद्या है, श्रद्धा है शक्ति है, पवित्रता है, यह सब कुछ है जो इस संसार में सर्वश्रेष्ठ के रूप में दृष्टिगोचर होती हैं। नारी कामधेनु है, अन्नपूर्णा है, और सब कुछ है जो मानव प्राणि के समस्त अभावों, संकटों का निवारण करती है। मनुस्मृति में बताया गया है –

''यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता''

अर्थात् जहाँ नारियों का सम्मान व उनकी पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ इनका सम्मान नहीं होता वहाँ प्रगति, उन्नति की सारी क्रियाएँ विफल हो जाती हैं नारी समाज का वह स्तम्भ है जिसके बिना समाज का निर्माण नहीं हो सकता, नारी के विषय में पुराणों में यह श्लोक अंकित है –

''विद्या समस्तास्तव देवि भेदा: स्त्रिया: समस्ता सकला जगस्तु।
त्वथैकया पूरितमम्बयेतत का तै स्तुति स्तभपरा परोकित॥''

अर्थात हे देवि ! संसार की समस्त विधाएँ तुमसे निकलती हैं और सब स्पृहाएँ तुम्हारा ही स्वरूप हैं समस्त विश्व एक तुम्हीं से पूरित है अत: तुम्हारी स्तुति किस प्रकार की जाए।

भारतीय नारी आदिकाल से समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है उसने एक बहन, बेटी, बहू, पत्नी के रूप में समाज में प्रेम, स्नेह, सौहार्द, त्याग बाँटकर एक ऐसा वातावरण विनिर्मित किया है, जिसे स्वर्गिक कह सकते हैं, जब हम समाज में नारी की भूमिका के बारे में बात करते हैं, तो वह समाज की आधार शिला कही जा सकती है, नारी ही है जो ईंट, पत्थरों से निर्मित मकान को घर में बदल देती है, और परिवार के सभी सदस्यों को सम्बन्धों की मधुर डोर से बाँधे रहती है।

नारी माँ के रूप में जन्मदात्री है, बच्चे की प्रथम शिक्षिका है, संसार का प्रत्येक सदस्य उसकी गोद में पलकर संसार में खड़ा होता है, उसकी हँसी से हँसना और उसकी वाणी से बोलना सीखता है उसकी कृपा से ही जीकर और अच्छे–बुरे संस्कार लेकर अपने जीवन क्षेत्र में उतरता है, प्राचीनकाल में नारी को समस्त शैक्षणिक व सामाजिक अधिकार प्राप्त थें, उनके लिए शिक्षा की समुचित व्यवस्था थी। समाज में आने–जाने और उसकी गतिविधियों में भाग लेने की पूरी स्वतंत्रता थी। वे पुरूषों के साथ वेद पढ़ती–पढ़ाती थी, यज्ञ में ऋत्विज तथा याचक के रूप में बैठती थी और धर्म–कर्मों में हाथ बंटाती हुई तत्वदर्शन किया करती थी, वे गुण, कर्म व स्वभाव में पुरूषों के समान ही उन्नत हुआ करती थीं, यहीं कारण है कि जब जब युगानुसार संत, महात्मा, त्यागी, दानी, योद्धा, वीर और बलिदानियों की आवश्यकता पड़ी उसने अपनी गोद में पाल–पाल कर दिये। नारी ने ही वीर पुत्रों को जन्म दिया है ध्रुव, प्रहलाद, अभिमन्यु, शिवाजी, राणाप्रताप, राम, गाँधी जी को महान बनाने में उनकी माँ के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता है। अत: माँ के रूप में नारी बच्चे को महामानव बनाने की सामर्थ्य रखती है, यह प्रेम करूणा, त्याग, वात्सल्य की प्रतिमा है तथा जो बच्चे की एक मुस्कान पर अपने सौ दुखों को न्यौछावर कर देती है।

नारी पत्नी के रूप में दाम्पत्य जीवन की सफलता पति–पत्नी दोनों के सक्रिय सहयोग और दायित्व वहन पर निर्भर करती है, पति निर्माण में उसे आगे बढ़ाने में पत्नी का जितना सहयोग रहता है, उतना किसी अन्य का नहीं, इतिहास उठाकर देखें, तो बड़े–बड़े महापुरूषों को महापुरूष बनाने वाली उनकी माँ या पत्नी ही थी, दाम्पत्य जीवन में पत्नी, माता, बहन, मित्र, सखा, संरक्षिका, मार्गदर्शक, पुत्री आदि की भूमिकाएँ समय पड़ने पर निभाती हैं वह स्नेह, प्रेम, सौजन्य, उल्लास, प्रसन्नता, धैर्य, सहनशीलता आदि प्रकृति प्रदत्त गुणों से अपने परिवार को सींचती हैं, पत्नी के रूप में वह सावित्री बनकर यमराज के हाथों से भी अपने पति के प्राणों को वापिस ले आती है, या कहीं जरूरत पड़ने पर कैकेयी के रूप में युद्ध के रथ के पहिये में उंगली लगाकर अपने पति की सहायता करती है, तो कहीं सीता के रूप में राम की सहायक बनती है, सिर्फ इतना ही नहीं जब जरूरत पड़ी है, भारतीय वीरांगनाएँ, लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई, चाँद बीबी के रूप में स्वंयरण में कूदी हैं और क्या कहें उन राजपूत वीरांगनाओं को जिन्होंने अपनी अस्मिता बचाने के लिए जौहर को भी खुशी से स्वीकार किया और जरा याद कीजिए यशोधरा को जो भिक्षुक के रूप में बुद्ध के आने पर अपने इकलौते पुत्र राहुल को भी बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के लिए भेज देती है। ध्यान करें कस्तूरबा का जो हर सुख–दुख में गांधी जी का साथ निभाती नजर आती है और जिन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

अतः हम देखते हैं कि नारी ममतामयी माँ है, स्नेहमयी भगिनी है, पति–परायण पत्नी है, लेकिन यदि उसकी शक्ति को ललकारा गया तो दूसरी ओर वह चंढी है, दुर्गा है, काली है। हम नारी को पुरूष से अलग नहीं मान सकते, नारी तो एक पूरक का कार्य करती है।

जब–जब समाज में असुरता बढ़ी है, संकट के बादल छाए हैं, नारी के देवी अवतरण ने समाज में फैले कोहरे को दूर किया है, समाज को नई रौशनी दी है। जब–जब समाज में सुधार की जरूरत पड़ी है, उसने समाज सुधारक के रूप में भी एक नई भूमिका निभाई। वर्तमान में आज भी भारतीय नारियाँ मेधा पाटेकर, अरून्धती राय, किरण बेदी, आनंदमयी माँ आदि के रूप में समाज सुधारक की भूमिकाएँ निभा रही हैं।

''कत विधिसृजी नारिजग माहीं
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।।''

सिर्फ इतना ही नहीं आज तो नारियाँ कार्य क्षेत्र में भी पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही हैं, आई टी, बी0 पी0 ओ0, मैडिकल, इंजीनियरिंग, पत्रकारिता, सेना, राजनीति और विज्ञान में उनके छलांग मारते आंकड़े तो यही बताते हैं कि आज के जमाने की महिलाएँ हर उस क्षेत्र में कामयाबी के झंडे गाड़ रही हैं जो अब तक पुरूषों का क्षेत्र माना जाता था। सुनीता विलियम्स, इंदिरा, कल्पना चावला, सोनिया गांधी, मेधा पाटेकर, ऐश्वर्या राय, सानिया मिर्जा, अंजू बी0 जार्ज, बछेन्द्री पाल, प्रतिभा पाटिल आदि ऐसे नाम हैं जो आज अपने परिचय के लिए किसी के मोहताज नहीं है।

आज हमारे देश के सर्वोच्च पद पर राष्ट्रपति पद पर श्रीमती द्रौपदी मुर्मू आसीन हैं जो इस पद पर आसीन होकर भारतीय नारी के गौरव को बढ़ा रही हैं, उत्तर प्रदेश की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती स्वयं वयं एक महिला हैं, राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे व दिल्ली की पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित ने एक महिला के रूप में राजनीति के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाई हैं, आई0पी0एस0 किरन बेदी सरीखी पुलिस अधिकारी न केवल अनुशासन एवं सख्त रवैये से चर्चित रहीं, अपितु मुम्बई पुलिस की वरिष्ठ अधिकारी मीरा लोखंड ने बड़ी बहादुरी से कार्य किया है, भारत की प्रथम महिला विदेश सचिव कोकिला अय्यर ने सिद्ध किया है कि नारी दक्षता, नारी शक्ति किसी से भी कम नहीं है, एवरेस्ट चोटी फतह करने वाली बछेन्द्री पाल एवं संतोष यादव ने देश का गौरव ही नहीं बढ़ाया बल्कि सम्पूर्ण नारी जाति को कृतार्थ किया है, विश्व एथलेटिक्स में सीमा अन्तिल, पी0 टी0 ऊषा, कुंजू रानी तानिया सचवेद व डोल बनर्जी आदि खिलाड़ियों ने भारत को शीर्ष पर पहुँचा दिया तथा शिक्षा के क्षेत्र में उसने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। शोभा डे, अरून्धती राय, अमृता कौर जैसी लेखिकाओं ने अपनी सृजनशीलता का परिचय दिया है, आज महिलायें ऊँची शिक्षा प्राप्त कर पायलेट, एयरहोस्टेज बन नई उड़ाने भर रही हैं, आज कोई भी क्षेत्र नारी से अछूता नहीं रहा है, अंतरिक्ष में जाने वाली प्रथम भारतीय महिला कल्पना चावला का नाम इतिहास के पन्नों पर हमेशा चमकता रहेगा। भारत की मूल निवासी सुनीता विलियम्स ने नासा में शामिल होकर एक बार फिर से पुरूष प्रधान समाज को नारी शक्ति का एहसास कराया है।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् इंदू साहनी ने गत 05 जनवरी को मुम्बई के नए शेरिफ के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है, पेप्सिको की चैयरपर्सन व मुख्य कार्यक्रम अधिकारी इंदिरा नूयी अमेरिका–भारत व्यापार परिषद् की अध्यक्ष चुनी गयी थीं, भारत में निवेश वाली 250 से अधिक बड़ी अमेरिकी कम्पनियों के इस संगठन की यह पहली महिला अध्यक्ष थीं। आज की नारी जहाँ बच्चे की परवरिश से लेकर अन्य पारिवारिक जिम्मेदारियाँ बखूबी निभा रही है,वहीं कैरियर के मोर्चे पर नित नये कीर्तिमान गढ़ रही है। आज की महिलायें पुरूष से कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है।। नई बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भी मानती हैं कि स्वभाव से संवेदनशील होने के चलते महिलायें ईमानदार कर्मचारी होती हैं, लिहाजा उनके लिए आई0टी0 इंडस्ट्री में 1981 में जहाँ पुरूषों के मुकाबले केवल 19.7 फीसदी महिलायें थीं वहीं 1991 में यह संख्या 22.7 फीसदी हो गई। उद्योग जगत के ताजा आँकड़ों के मुताबिक देश में महिलाओं के लिए रोजगार के 18 फीसदी अवसरों का इजाफा हुआ है।

विश्व जगत् का अनुमान तो यह है कि बीपीओ और सॉफ्टवेयर कम्पनियों में ही पुरूष और महिलाओं का अनपुात 76–36 हो जाएगा, अभी यह 76–26 के अनुपात में है, आज नारी अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदार तथा आत्मनिर्भर है।

डॉ० मीना सक्सैना
असि0 प्रोफेसर समाजशास्त्र विभाग

Grow More Tress To Reduce Pollution

Trees, plants are very important for the survival of mankind. The importance of planting trees gives numerous benefits to everyone. They make the world a better to live in they exhale oxygen and inhale carbon dioxide and also they absorb harmful gases and gives us fresh air to breathe. Trees also build a sheet to protect us from the harmful ultraviolet rays. Not only this they serve as a habitat for thousands of species of animals, birds and insects. Trees are the lungs of the world. They provide us with shade and also serve us from soil erasion, floods and droughts. However, due to cutting down of trees, human beings are disturbing the ecological balance. And because of this, many species of plant, birds and animals have become extinct.

We should grow more and more trees and should practice afforestation because it is only way by which we can protect our mother earth.

Save trees & save your life.

Sonam Sharma
B.Com - I Year

Failure is the stepping stone to Success

"Failure are the part of life
If you don't fail, you don't learn
If you don't learn, you'll never change"

The way of success is a narrow part that is not often taken by many. One must take challenges head on to achieve the desired result. There is no single person who has not seen failure in life. One should not feel disheartened at failure but should try to learn from his failure. So basically, the thing is to keep trying until one succeeds. It is a failure rather, which motivate a person to emerge successfully. A man who has not tasted failure does not known the value of success.

**"Failure does not means you are failure,
It just means you have n't successed yet."**

There are many examples, we often look at great people. Scientist, Writers, President or Artists, Just like Abraham Lincoln Failed in many times in his life, but never got frustrate and fought with more determination will full devotion and become President of America.

"**I have not failed I've found 10'000 way that won't work.** said Thomas Edison, The inventor of first incandescent Light bulb."

"If you fail, never give up because FAIL means 'First Attempt in Learning' said Bharat Ratna Dr. APJ Abdul Kalam."

"Success doesn't always come at the right time, it comes from making the right decision."

Mahi Tomar
B.A. - I Year

Today's Fiction is Tomorrow's Reality

Fiction means fantasy, something which can be thought but not done, or in other words something which isn't real. Can today's fiction be tomorrow's reality? yes, indeed, this is possible.

If we have a look at history, well find innumerable examples to support this view. Let us start with the invention of aero-plane. Flying in the air was simply a fantasy for man some year ago. Who would have ever dreamt of air craft at that time? But later on, due to constant efforts and experiments, Man not only invented aero-plane but also space ship as well.

Now let us talk of the present scenario. Going to other planets was simply a dream for us until some time. But now we have reached mars and who knows in the future we may reach other planets as well. Think about the internet. Could you have imagined it in the past? But today, millions of people all over the globe are taking advantage of this information

अन्य गतिविधियाँ

8 मार्च 2024
हैल्प लाईन नम्बर - 112, 181,1090, 1098

Rotary Club Bulandsh
CERVICAL CANCER VACCIN

गौरीशंकर कन्या (स्नातकोत्तर) महाविद्यालय

(सम्बद्ध: चौ० चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ)

शंकर बाग, रेलवे स्टेशन के सामने, बुलन्दशहर–203001